

पद्मानदीक माझी

मूल- मानिक बंधोपाध्याय

मैथिली राम लोचन ठाकुर

मैथिली
राम लोचन ठाकुर

मूल - मानिक बंधोपाध्याय

विषय- वैशिष्ट्य, अभिनव भौगोलिक परिवेशक चयन-चित्रण,
सक- शिल्पक समलकार एवं अचिरल अमूलोपम संवेदनाक
पुस्तकक सामाजिक मानिक बंधोपाध्यायक 'पद्मानदीक माझी' के
पुस्तकक सामाजिक मानिक बंधोपाध्यायक 'पद्मानदीक माझी' के



पद्मानदीक माझी

(उपन्यास)

मूल : बंगला
मानिक बंदोपाध्याय

मैथिली अनुवाद
राम लोचन ठाकुर



मिथिला सांस्कृतिक परिषद्
कोलकाता - 7

PADMANADIK MAJHI (NOVEL) : By Manik Bandyopadhyay
Translated by Ram Lochan Thakur

प्रकाशक :

श्री रामनन्दन झा, मंत्री

मिथिला सांस्कृतिक परिषद्

पं० सं० S/6762 :: स्था० : 26 जनवरी, 1959

6-B, कैलाश साहा लेन, कोलकाता-700 007

•

© : प्रकाशक

•

स्वर्ण जयन्ती समारोह

26 एवं 27 दिसम्बर, 2009 ई०

•

मुखपृष्ठ : श्री गोपी दे सरकार

•

दाम : 150/- टका

•

मुद्रक :

श्री किशोरीकान्त मिश्र

अरुण प्रिंटिंग प्रेस

9-B, सिकंदर पाड़ा स्ट्रीट, कोलकाता - 700 007

दूरभाष : (033) 2274 4201 • मो० : 9433164330

प्रकाशकीय—

भारत विभिन्नता में एकताक एकटा दृष्टान्त पस्तुत करैत अछि। हमरा लोकनि विभिन्न भाषा-भाषी, विभिन्न सम्प्रदाय एवं विभिन्न संस्कृतिक लोक संगे मिश्रराइत रहै छी। एक दोसरक प्रभाव एक-दोसर पर पड़ैत रहै छैक आ ओकर छाप किछु ने किछु रहि जाइ छैक। एक दोसर कें बूझक लेल विभिन्न भाषा-साहित्यक अनुवाद भाषेतर साहित्य में होइत रहैत अछि। बंगाल आ मिथिलाक भाषा संस्कृति में बहुत समता अछि। एहि समता कें बेसी सँ बेसी जानक लेल विभिन्न पोथीक अनुवाद मैथिली में होइत अछि। प्रस्तुत उपन्यास “पद्मानदीक माझी” मूल बंगला पोथी मानिक बंद्योपाध्यायक ‘पद्मानदीर माझी’क मैथिली रूपान्तर अछि। एहि पोथीक माध्यमे हमरा लोकनि ओहि माझी समाजक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्थितिक सङ्ग्रह तत्कालीन प्रशासनिक स्थितिक ज्ञान प्राप्त करै छी।

पोथीक रूपान्तरकर्ता श्री राम लोचन ठाकुरजीक प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करै छी।

मिथिला सांस्कृतिक परिषदक स्वर्ण जयन्तीक अवसर पर प्रस्तुत पोथी अपने लोकनिक हाथ में दैत आनन्दक बोध करै छी। साधुवाद दै छियन्हि श्रीयुक्त कामदेव झाजी, समाजसेवी-उद्योगपति, (ग्राम- ब्रह्मपुरा, मधुबनी), कें जे एहि पोथीक मुद्रण व्यय-भार वहन कए परिषद कें साहित्यिक सेवा करक हेतुएँ प्रोत्साहित कएलन्हि।

स्वर्ण जयन्ती समारोह
26-27 दिसम्बर, 2009

रामनन्दन झा, मंत्री
मिथिला सांस्कृतिक परिषद



स जातो येन जातेन जातिवंश समुन्नतिम् ।

ओइ व्यक्तिक जन्म सार्थक थिक जे अपन वंश, समाज एवं राष्ट्रक विकासक हेतु चिन्तनशील रहैछ ।

हस्तस्य भूषणम् दानं कें चरितार्थ कैनिहार, समाजसेवी एवं समाजहितैषी, मिथिला-मैथिलीक पृष्ठपोषक, धर्मध्वजवाहक, धर्मभीरु —

श्री कामदेव झा, संस्थापक अध्यक्ष,

हरिहर स्थान चैरीटेबुल ट्रस्ट, हरिहर स्थान;

ग्राम - ब्रह्मपुरा (बेनीपट्टी), मधुबनी निवासी एवं कोलकाता प्रवासी, स्थानीय मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा प्रकाशित पोथी 'पदानदीक माझी'क मुद्रणक सम्पूर्ण व्यय-भार वहन कए अपन दानशीलताक परिचय दए मैथिली साहित्यक अभिवृद्धि मे सहयोग प्रदान कए मैथिली सेवी लोकनिक उत्साह वर्द्धन कएलन्हि ।

मिथिला सांस्कृतिक परिषदक साधुवाद ।

शिवचन्द्र झा

अध्यक्ष



आमुख

विश्व-वाङ्मय मे एहन साहित्यकार आङुर पर गनल छथि जे अपन पहिले रचना सँ प्रसिद्धि प्राप्त कएने होथि, विख्यात भऽ गेल होथि। कथाक क्षेत्र मे गोर्की आ मोपासा तथा काव्यक क्षेत्र मे बायरन आ माइकेल मघुसूदन दत्तक नाम एहि सन्दर्भ मे सादर लेल जा सकैछ। एही परंपराक अग्रिम कड़ीक रूप मे आविर्भूत होइत छथि मानिक बंदोपाध्याय। सरोजमोहन मित्र उचिते कहैत छथि जे बंकिम बाबू, रवीन्द्रनाथ ठाकुर वा शरत् बाबू सँ मानिक बंदोपाध्याय सर्वथा भिन्न छला कारण हिनका हुनका लोकनि जकाँ वर्षों शिक्षा वा अभ्यासक प्रयोजन नहि पहुँचलनि। हिनक पहिले कथा 'अतसी मामी' जे ई कॉलेजक सहपाठी लोकनिक चुनौती पर बाजी लगा लिखने छला आ 'विचित्रा' मे छपल छल, साताराती हिनका बंगलाक नामी-गिरामी साहित्यकार सभक सूची मे समाविष्ट कऽ गेलक। 'विचित्राक' सम्पादक स्वयं हिनका सँ भेंट कऽ पन्द्रह टका दैत आरो कथा देबाक आग्रह कएने छलथिन।

मानिक बंदोपाध्यायक जन्म 19 मई, 1908 ई० कें दुमका मे भेल छलनि। पिता हरिहर बंदोपाध्याय सेट्लमेंट अफसर छलथिन। मूल ग्राम ढाका जिलाक मालपेदिया गाम। हरिहर बंदोपाध्यायक पाँचम पुत्र प्रबोधचन्द्र ततेक भारी छला जे लोक हिनका 'कालो मानिक' कहए लागल आ अन्ततः प्रबोधक संग कालो (कारी / करिया) हेरा गेल, रहि गेल मात्र मानिक जे विश्व-वाङ्मय मे अपन अभिनव-अनमोल अवदानक कारणे मानिक सदृशे चमकैत-दमकैत एकर सार्थकता सिद्ध कएलक।

मानिक पढ़ा-लिखा मे बड़ चन्सगर छला। मैट्रिक आ इंटरमीडियेट प्रथम श्रेणी सँ पास कएने छला। भौतिकी आ गणितक नीक ज्ञान छलनि। 'अतसी मामी' कथा लेखनक समय ई प्रेसिडेंसी कॉलेजक बी. एससी. ऑनर्सक छात्र छला। बी. एससी. पास कऽ पाएब हिनका सँ सम्भव नहि भेल किन्तु हिनक विज्ञान आ गणितक ज्ञान लेखक जीवन मे जीवनक जटिलता केँ बुझबाक, तकर वस्तुनिष्ठ विवेचन-विश्लेषणक क्षमता-प्रखरता अबस्से प्रदान कएलक जे हिनक साहित्यक विशेष वैशिष्ट्यक रूप मे विवेचित-विश्लेषित होइछ।

नवाग्रही-नवोन्मेषी लेखक मानिक बंद्योपाध्याय केँ बुझबाक लेल हिनक पृष्ठभूमिक अध्ययन-अवलोकन आवश्यक अछि जाहि मे बंगालक नवजागरणक महत्वपूर्ण भूमिका छैक। शरत् बाबू कहै छथि —

Writers of today no longer like to offer dull accounts of the life of the rich and the upper ten. Of late they have been bold enough to explore the life of the havenots. That they have done this is not to be regretted. Our literature will be acclaimed not only in our country but throughout the world if our authors can take the cues from Russian literature and learn how to understand and depict the trials and aspirations of the suffering humanity.

शरत् बाबूक ई संदेश जेना मानिकेक निमित्त हो। हिनक रचना मे ई आग्रह-अपेक्षा साकार भेल देखल जाइछ आ एही कारणे प्रायः समीक्षक-समालोचक लोकनि हिनका शरत्-परंपराक सुच्चा धारक-वाहक, ओकर अग्रिम कड़ी कहैत छथि।

'अतसी मामी'क प्रकाशन (1928)क सात साल बाद 1935 ई० मे मानिकक पहिल उपन्यास 'जननी' आ फेर 'दिवारात्रि काव्य' प्रकाशित भेल। अगिला साल 'पुतुल नाचेर इतिकथा', 'पद्मानदीर माझी', आ 'जीवनेर जटिलता' तीन गोट उपन्यास प्रकाशित भेल। हिनक कुल सैंतीस गोट उपन्यास मे 'पुतुल नाचेर इतिकथा' आ 'पद्मानदीर माझी' विशेष पठित चर्चित अछि जखन कि विभिन्न भाषा मे सर्वाधिक अनूदित अछि 'पद्मानदीर माझी'। अंग्रेजी, चाइनिज, जेच, हंगेरियन, लिथुआनियन, नौरवेइयन, रशियन, स्वेडिश आदि भाषा मे एकर एकाधिक अनुवाद प्रकाशित अछि।

अद्भुत आंचलिकताक झाँकीक संग 'पद्मानदीर माझी' निछच्छ देहातक एक मलाहक बस्ती वा टोलक कथा-व्यथाक महागाथा थिक। सभ्य समाज द्वारा

कतिआओल शोषित-निपीड़ित, आदिम अवस्था मे रहबाक लेल वाध्य एहि जनगोष्ठीक जीवनेच्छा-जिजीविषा, ओकर संघर्षक जाहि विरल संवेदनाक संग एहि मे वर्णन कएल गेलए से निर्विवाद अप्रतीम अछि। स्वाभाविक छैक जे समालोचक लोकनि एहि कृति केँ विश्व-वाङ्मयक एक अनमोल रत्न कहैत छथि।

कहल जाइछ जे ई नेना मे वंशी लऽ घर सँ बहरा जाइ छला आ दू दिन, तीन दिन निपत्ता रहै छला। बाद मे पता लगै जे ई माझी लोकनिक संग नाओ पर छला। बाल्यावस्थाक इएह अनुभूति 'पद्मानदीर माझी' के एतेक विश्वस्त, एहन विलक्षण होएबाक पृष्ठभूमि कहल जाइछ।

सारस्वत समाजक सम्मान, पाठक वर्गक अगाध आदर-स्नेह पबितो मानिक छला धरि चिर विपन्न। दुनू साँझक भोजन भेटि जाएब बड़ पैघ बात होइत छल। एहने स्थिति मे पचहत्तर टका बेतन पर 'बंगश्री' पत्रिका मे चाकरी लेलनि, मुदा से कतौ हिनका सँ पार लागय! बाल्यावस्थाहि सँ मिरगीक रोगी छलाह। पश्चात रक्तातिसार सँ सेहो आक्रान्त रहैत छला। साम्यवादी दल मे योगदानक कारणे किछु दिन प्रकाशक लोकनि सेहो हिनका बारने छलथिन। मुदा से स्थिति बेसी दिन नहि रहल। एक समय कहल जाइ छलै जे बंगला साहित्य पर तीन बंद्योपाध्यायक वर्चस्व छैक — विभूति भूषण, ताराशंकर आ मानिक। किन्तु मानिक छला अक्खर स्वभावक। कथा लिखबाक मन अछि तऽ कथे लिखब, जनितो जे उपन्यास लेल बेसी पाइ भेटत आ प्रकाशको लोकनिक तकरे आग्रह छनि। हिनक मान्यता छलनि जे लेखक केँ मात्र पाइ लेल नहि लिखबाक चाही आ नै प्रकाशकक दबाओ मे एबाक चाही।

मानिक बंद्योपाध्यायक मादे बंगलाक विशिष्ट लेखक आ हिनक समकालीन प्रेमेश्वर मित्र कहै छथि —

Manik Bandyopadhyay is among those rarest of writers in whose eyes life and literature merge into one. He brought with him a life-force that refused to lie imprisoned within the cramped limits of conventional norms and inhibitions. His tragedy is the tragedy of a total non-conformist.

मानिक बंद्योपाध्यायक जीवनीकार सरोजमोहन मित्र कहै छथि—

Manik is enshrined in the hearts of the people as a path-finder in literature and for his bold vision of thier future as recorded in his novels. It is with Manik Bandyopadhyay that the modern age in Bengali literature truly begins.

उपन्यासक अतिरिक्त हिनक सोड़ह गोट कथा-संग्रह, एक कविता-संग्रह, एक नाटक तथा एक निबन्ध-संग्रह प्रकाशित अछि। हेमनिये हिनक 'पद्मानदीक माझी'क नाट्य-रूप आ सिनेमा सेहो आयलए जे बेस चर्चित-प्रशंसित भेल अछि।

1955 ई० सँ हिनक स्वास्थ्य बेसी खराप चलि रहल छलनि ताइ पर काजकेँ बोझ। कतेको खेप लोक असपताल मे भरती करओलक मुदा ई बौण्ड बना पड़ा अबैत छला। 30 नवम्बर 1956 ई० केँ माथक रक्त जमि जेबाक कारणे अवस्था जखन चिन्तनीय भऽ गेलनि तऽ 2 दिसम्बर केँ एन. आर. एस. असपताल, कोलकाता मे भरती कराओल गेलनि आ 3 दिसम्बर कऽ प्रातःकाल हिनक देहान्त भऽ गेलनि। रवीन्द्रक पश्चात् शवयात्रा मे एहन लोकक भीड़ नहि देखल गेल छल जे हिनक शवयात्रा मे देखल गेल।

गत वर्ष साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित मानिक जन्मशती सभा मे अपन वक्तव्यक क्रम मे हम एहि पोथीक अनुवाद ओ प्रकाशनक घोषणा कएने रही। प्रसन्नता अछि जे वर्ष दिन विलम्बो सँ से सम्भव भेल। प्रकाशनक लेल मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, कोलकाताक आभार।

✍ राम लोचन ठाकुर

2-M, चिराग एपार्टमेन्ट,
4, इटालगाछ रोड,
कोलकाता-700 028



एक

बरिसकालक बिच-बिचबा।

पद्माक हिलसा माछ पकड़बाक मौसम। दिन हो वा राति, कखनो कामहि नजि मछबारी। साँझक समय जहाज घाट पर ठाढ़ भेने ओहिना नदीवक्ष पर सएकसए इजोत अनिर्वाण भगजोगनी जकाँ टहलान मारैत। ओ इजोत सभ मलाहक नाओक। सगर राति एहिना इजोत सभ, रहस्यमय म्लान अंधकारक दुर्बोध्य संकेत सन नदी-वक्ष पर संचालित होइत रहैछ। एक समय मौझ राति पार भऽ जाइछै। शहर मे, गाम मे, टीशन पर आ जहाज घाट पर थाकल ठेहिऐल लोक सभ आँख गुनि राति रहैछ। रातिक शेष समय टुकड़ी-टुकड़ी मेघ सँ झाँपल आकाश मे बहराइछ टुबरील चान। मलाहक नाओ सभक इजोत तखनो नजि मिझाइछ। नाओ पर भरल आ जमीन पर पसरल रहैछ उज्जर दपदप हिलसा माछ। लालटेनक इजोत मे चकमाक करैछ। माछक निष्पलक नयन सभ स्वच्छ नीलाभ मणिसन देखना जाइछ।

कुबेर माझी आइ मछबारी करैत छल देवीगंजक माइल डेढ़ेक सीरा मे। नाओ पर आर दू गोटे छलै। धनंजय एवम् गणेश। तीनू केतुपुर गामक रहनिहार।

नाओ बड़ पैघ नजि। पाछा-दिस सामान्य एकगोट खोपड़ी। बरखा-बुन्नी मे कोनहुना दू-तीन आदमी के माथ नुकेबा जोग। बाकी सभ उदाम। बीच मे नाओक पाटातन पर हाथ दू-एक फाँक छोड़ल। एही फाँक दऽ नाओक खोल मे मारल माछ जमा कएल जाइछ। जाल फेकबाक इन्तजाम कात दिस। तिनकोनमा

बाँसक फ्रेम पर नाओक कतबहि मे बेस पैघ पाँखि सन पसारल जाल। जालक शेष सीमाक बाँस नाओक कगनीक संग समान्तराल। ओकर दुनू कात सँ नम्मा दू गोटा बाँस नाओक लग आबि परस्पर केँ अतिक्रमण करैत नाओक भीतर हाथ दू-एक अगुआ आएल। ई दुनू भेल जालक मूठ। एकरे पकड़ि जाल के ऊपर-नीचा कएल जाइछ।

दुनू बाँस मे बान्हल जाल अथाह पानि मे विशाल नमरल ठोर सन बुझना जाइछ। डोड़ी धऽ कऽ बाँसक हा कएल ठोर सन जाल के खसा देल जाइछ। माछ पड़ने मलाहक हाथक डोड़ीक माध्यमें संकेत अबैछ, डोड़िए सँ पानिक भीतरे जालक मुँह बन्न कऽ देल जाइछ।

ई नाओ धनंजयक सम्पत्ति छइ। जाल सेहो ओकरे। हरेक राति जते माछ पकड़ल जाइ छइ तकर आधा भाग धनंजयक, बाँकी आधा कुबेर ओ गणेशक। नाओ आ जालक मालिक हेबाक कारणे धनंजय मेहनतियो कमे करैछ। शुरु सँ शेषधरि ओ नाओक पतबार धेने बैसल रहैछ। कुबेर आ गणेश हत्था धऽ जाल खसबैछ आ उठबैछ, माछ संचय करैछ। पद्माक ढेठ मे नाओ ढलमल करैत रहैछ, इजोत टिमटिमाइत रहैछ। तेजो बसात मे नाओक चिरस्थायी इछाइन गंध हटैत नजि छइ। हाथभरिक कपड़ाक धरिया जकाँ डाँड़ मे लपेटने बेर-बेर पानि मे भीजैत, ठण्ढा बसात मे जड़ाइत, निद्राहीन रक्ताभ आँखिए लालटेनक मद्धिम इजोत मे नदीक अशान्त जलराशि दिस तकैत कुबेर ओ गणेश रातिभरि माछ पकड़ैछ। नाओ स्रोतक संग भासैत रहैत छइ। करुआरि धऽ नाओ के ठेलि ओ सभ ताइठाम लऽ जाइछ जाइठाम एक खेप एकहि बेर हेंज मे जाल फेकने मारिते रास माछ पड़ल छलै। आइ माछ खूब पड़ैत छलै। किन्तु भोरे देवीगंज मे माछक भाव बिनु जनने एकरा सौभाग्य तऽ नहिये कहल जा सकैछ। सभ के जँ एहिना माछ पड़लै तऽ काल्हि दर तते कमि जेतै जे विशेष लाभक आशा नजि। ओना बड़का माछक पैघ-पैघ हेंज एके समय सभठाम नजि रहैत छइ भरोसक बात इऐहटा। सभ के बेसी माछ नहियो परि लागि सकैत छइ।

कुबेर हाक दैछ-जदु हओ ऽ ऽ ऽ माछक की हाल ?

किछु दूरक नाओ सँ जवाब अबै छइ — बेस हइ।

बेस हइक बाद ओइ नाओ सँ सेहो इऐह प्रश्न होइ छइ। कुबेर चिचिया कऽ कहै छइ जे ओकरो लोकनि के बेस पड़ि रहलैए।

धनंजय कहलकै — सँझुका दर पुछही तऽ कुबेर।

कुबेर फेर चिचिया कऽ दर पुछै छइ। आइ सँझुक पहर पौने पाँच, पाँच एवम् सवा पाँच टके माछ बिकेलैए। सुनि धनंजय बाजल — बिहान घटि कऽ चारि हेतै। बड़गाही के माछ भेटनहि की।

कुबेर गुमे रहैछ। छप दऽ नदी मे जाल खसा दैछ।

शरीर आइ ओकर ठीक नजि छलै। ओकर घरवाली माला ओकरा मना केने छलै बहरेबा सँ। किन्तु शरीर दिस तकबाक पलखति कुबेर के छैके कहाँ। पाइ-कौड़ीक अभाव मे एहू बेर ओ अखिल साहाक पोखरि नजि लऽ सकल। सालोभरि ओकरा पद्माक माछहि पर निर्भर करए पड़तै। हिलसाक मौसम शेष भेला पर विपुला पद्मा कृपण भऽ जाइछ। अपन विशाल विस्तृतिक बीच कतए जे ओ अपन मणिसन्तान सभ के नुका रखैछ से खोजि पाएब बेस कठिन काज भऽ जाइ छइ। नदीक मालिक केँ लगान दऽ कऽ हजार टकाक जाल जे सभ पसारि पबैछ, तकरा सभक जगह छोड़ि एते पैघ पद्मा धार मे जीविका अर्जन केनाइ ओकरा सन गरीब मलाहक लेल कष्टसाध्य काज। धनंजय ओ जदुक चेफरी लागल व्यवस्था मे जे माछ पड़ैछ तकर दू-तीन आना हिस्सा मे ककरो परिवार नजि चलि सकैछ। उपार्जन जे होइछ से एही हिलसाक मौसम मे। शरीर रहओ वा जाओ, एइ समय एको राति घर बैसने कुबेर केँ नजि चलतै।

माझ राति मे ओ सभ पलभरि लेल विश्राम केने छल। राति शेष होमए पर एलै तऽ कुबेर बाजल — कने सुस्ता ली हओ अजान काऽ।

सुस्ताइ लै किए मुझल जाइ छे — बोल तऽ ? घर जा दिन भरि सुस्ताइत रहिहै। आर दू हाथ चलि ले।

कुबेर बाजल, चिलम बिना जेना सके ने लगैत हो। शरीर आइ, बुझल' अजान का, खूब नीक नजि बुझाइ छऽ।

जाल उपर तानि कुबेर आ गणेश खोपरी लग जा कऽ बैसल। खोपड़ीक ताल मे टाङल चिलम उतारि टीनक कौटा सँ कटारी सँ मिला कऽ काटल करगर तमाकू बहार कए साल डेढ़ेक सँ व्यवहार होइत चिलम मे सजओलक। नारिकेरक छोबड़ा केँ गोली सन बना टाटक अढ़ मे जा दियासलाइक मात्र एकटा काठी खर्च कए धए लेलक। बारह बर्खक उमेर सँ अभ्यास करैत-करैत हाथ मजा गेल छइ।

नाओ स्रोतक संग भासल जा रहल छलै।

एक हाथे किनार दिस कोना कोनी पतबार धेने धनंजय दोसर हाथ बढ़बैत बाजल — ला कुबेर, हमरा दे, धराबी।

तमसा कऽ चिलम ओकरा हाथ मे दैत कुबेर गुम भेल बैसल रहल।

कुबेरक बगल मे बैसल गणेश थर-थर कपैत छल। एखन जेना सरिपहुँ जड़काला होइ।

ओ हठात् बाजल — इह, आइ जाइ कते होइ छइ कुबेर भाइ।

ओकर बात पर केओ कानपात नजि देलकै। कोनो जवाब नजि पाबि ओ कुबेर के डोलबैत फेर बाजल — बुझले कुबेर भाइ, अजुका जाइ मे तऽ थड़थरी धऽ लेलकौ।

एकरा सभ मे गणेश कने सुधंग। ओकर मनक चिन्ता भावना जेना बेस मंथर गतिजे सम्पन्न होइछ। ओ किछु बजने लोक जे कानपात नजि दैत छइ, अवहेला करैत छइ, तकरो ओकरा कोनो ज्ञान नजि। कोनो जवाब नजि पेबाधरि ओ अपन बात बेर-बेर बजैत रहत। केओ जँ दमसऽबैत सन जवाब दैत छइ, तकरो ओकरा कोनो तामस नजि। दुखो होइ छइ वा नजि, सन्देह।

कुबेरक ओ अत्यन्त अनुगत। अपन छोट पैघ सभ काज मे ओ कुबेरक सलाह लेबे करत। विपद-आपद मे दौड़ल अबैछ ओकरे लग। एक पक्षक एही आनुगत्यक कारणे जे दुनू मे बन्धुत्व स्थापित भेल छइ तकरा घनिष्ठे कहल जाएत। आशा छइ, जोर छइ, दुख सुखक भागाभागी छइ, कलह आ पुनर्मिलन सेहो छइ। किन्तु गणेशक अति निरीह स्वभाव हेबाक कारणे झगड़ादन प्रायः नहिजे सन होइ छइ।

गणेश हठात् खेखनिया करैत बाजल — एगो गीत कही ने कुबेर।

हँ, गीत ने तोहर मुण्डी।

कुबेरक धमक सुनि गणेश कनेकाल चुपचाप बैसल रहल, फेर अपने गीत उठओलक। ओकरा गाबए नजि अबै छइ, मुदा तकरो कोनो परवाहि नजि। धनंजय आ कुबेर ध्यान सँ गीतक शब्द सभ अकानैत रहल। लोक जकरा सँ प्रेम करैछ तकरा पबैए ने किए-गीत मे एहने गंभीर समस्याक बात। बड़ सहज गीत नजि।

पूबदिस लाल हेबा धरि ओ सभ जाल फेकैत घुरैत रहल। तकरो बाद जहाज घाट दिस रमाना भेल। ओतए पहुँचबा धरि सगरो इजोत पसरि गेल रहै।

नदी तीर पर, नदी वक्षपर एखन सगरो जीवनक स्पन्दन। कने-कने कालपर स्टीमरक भोंपा बाजि उठै छइ। कोनो स्टीमर भोम्हिआइत सोझें निकलि जाइछ तऽ कोनो जेटी लग जा कऽ ठाढ़ होइछ। कलकत्ताक ट्रेन आबि गेल छइ। घाटक ओ टीशनक समस्त दोकान पाट खुजि गेल छइ। मारितेरास लोक नदी मे नहेबा

लेल पैसल अछि। मोटरबाही ओ यात्रीबाही अनगिनत छोट-पैघ नाओ घाट पर भीड़ लगओने ठाढ़। घाट दिस बहुत दूर धरि किछेड़क कातेकात गाड़ल लगी सभ मे बान्हल आर जे कतेक नाओ हैतै तकरो हिसाब नजि।

नदी मे केवल जलक स्रोत। जल मे, स्थल मे मानुसक अविराम जीवन प्रवाह।

मछरिया नाओक घाट एकड़ मे। एइ बीच अनेको नाओ माछ लेने हाजिर। हाका-हाकी डाका-डाकी मे सगरो उत्तेजनाक वातावरण। फटाफट दर-दाम ठीक होइछ आ हरदम चलैत रहैछ माछक खरीद बिकरी। संग-संग माछ चलानक व्यवस्था।

एइ व्यवस्था ओ कोलाहलक बीच आबि गेने रातुक जगरना ओ परिश्रमक बलान्ति बिसरि कुबेर नितहु खुस भऽ जाइए। आइ ओ एकदमे ठेहिआ गेल छल। शेष राति मे जाइ भऽ कऽ संभवतः बोखारो आएल होइ। आँखि दुनू बेस चढ़ल छइ आ से देखि गणेश चारि-पाँच बेर सँ बेसिए कहने हैतै।

धरिया खोलि एगो मैल-कुचैल डेढ़गज्जा कपड़ा पहिरि कुबेर तीर पर आएल। कदबाहे मे एगो लोहाक कुरसी आ काठक टेबुल पाथि चलान बाबू केदार नाथ माछक गिनती देखि खाता मे लिखने जाइ छथि। एक सए माछक गिनती पुरिते हुनक चाकर झपट्टा मारि पाँच गो माछ उठा एगो काठक बकसा मे भरने जाइछ। बगले मे काठक पैकिंग बकसा मे एक तह माछ राखि ताइ पर बर्फ पसारि चलानक इतजाम होइछ। कने हटि कऽ मेन लाइन सँ जोर जबरदस्ती खीचि आनल एक जोड़ा ऊँच-नीच आ प्रायः अकाजक लाइनक उपर चारि पाँचटा वेगन ठाढ़ भेल। माछ जोड़ाइ कऽ वेगन सभ यथा समय कलकत्ता पहुँचत। सकाल-विकाल हाट-बजार सँ हिलसा माछ कोनि कलकत्ताक लोक घर जाएत। कलकत्ताक बसात मे पाओल जाएत पद्माक हिलसा माछ तरबाक गंध।

एगो वेगनक अड़ मे ठाढ़ झुलंग साट पहिरने एगो भुट्ट थुलथुल लोक बड़ीकाल सँ कुबेरक दृष्टि आकर्षणक चेष्टा करैत छल। कुबेर ओमहर तकिते ओ हाथक इसारा सँ ओकरा बजौलकै।

कुबेर कनेकाल हिल-डोल नजि केलक। उदास भावें ठाढ़ रहल। तकरा बाद लग जा कऽ पुछलकै — की अइ ?

लोक तमसाइत बाजल — की अइ माने ? तोरा बुझल नजि छै ? जो लेने आ माछ। तीनटा लबिहें।

आइ तऽ नजि होत शीतल बाबू। माछ नजि छइ।

नजि होत की रे, माछ नजि छइ ? हमरा रोज माछ दैक बात छौं ने ? जो लेने आ। नमहर देखि कऽ लबिहैं।

कुबेर माथ हिलबैत बाजल — आइ सम्भव नजि होत शीतल बाबू। अजान का सोझे हमरा दिस देखि रहलए — देखाइ नजि पड़ैए ? आइ बजारे सँ कीन लू गऽ।

किन्तु चोरीक माछ कुबेर जाइ दाम मे दैत छइ, बजार मे कीनने तक दोबर पड़ैत। शीतल तँ सहजे आशा नजि छोड़लक।

ओ मिनती करैत सन बाजल — आइ तौं तीनटा माछ दऽ दे कुबेर। एना नजि कर। पाइ ने कने बेसिए लऽ लिहे, की ?

तब कने दम धरु।

घुरि कऽ कुबेर देह मे नीक जकाँ कपड़ा लपेटि नाओ पर जा कऽ बैसल। चारुकात चिन्हार लोक थोड़ नजि। माछ लऽ कऽ चुपचाप किनार पर जाइत देखने निश्चये संदेह करैत। तखन ओकर लाजक ठेकान नजि रहैत। ओना भरोसक बात इएह जे सभ के सभ अपने मे बेस व्यस्त छइ। अपना नाओ सँ के कतए दूटा माछ चोरि करैछ से देखबाक पलखति ककरो नजि। एक बेर चारुकात नजरि खिरा तीनटा माछ कुबेर अपन देहक कपड़ा मे नुका रखलक। किनार पर जा माछ तीनू ओ शीतलक हाथ मे देलकै। शीतलो चट दऽ ओकरा अपन पाटुक झोड़ी मे राखि लेलक।

पाइ बिहान देबौ कुबेर।

कहैत ओ डेग उठओलक। कुबेरो संगे-संग अगुआइत बाजल — सुनू शीतल बाबू, एना जुनि भागी। दाम देले जाउ।

बिहान देबौ कहलियौ ने।

उँहूँ, अखिनते दिअ। हमरो आर के पेट अइ, पलिबार अइ।

पाइ रहत तब ने देबौ। बिहान पक्का दऽ देबौ।

पिच्छर नरम माटि मे पैरक ओंठा रोपैत शीतल चल गेल। लाल-लाल ओंखिए ओकरा दिस तकैत कुबेर बाजल— सरबा डकैत। फिस-फिस कऽ शीतल के आर एगो गारि पड़ि कुबेर नाओ पर जा पड़ि रहल।

गणेश लोकटा सुद्धा। माछक दाम हिसाब कए लेबाकाल धनंजय ओकरा

आसानी सँ सहय देने छलै। असगर मे दाम लेबाक सुयोग प्रायः ओ कोनो दिन नजि पबैत छल। कुबेर एइ समय जोक जकाँ ओकरा संग लागल रहै छइ। पाइ भेटबाक संगहि संग ओ अपन हिस्सा लऽ लैछ।

धनंजय के नाओ पर अबिते माथ उठबैत कुबेर पुछलकै — कते माछ भेलऽ का ? स-चारिएक सँ कम तऽ नजि ने ?

धनंजय एगो अबहेला सूचक शब्द करैत बाजल — चारि सए ने हजार। दू सए सतावनटा मोट। सात गो फाओ मे, अढ़ाइ सएक दाम देलकौ।

कुबेर उठि बैसल।

से की कहै छहो का ! कालि तऽ एकदमे माछ नजि पड़ल रहलै तैयो दू सए सताइस भेलै ?

धनंजय तमसाइत बाजल — तऽ हम झूठ कहलियो ने की रे कुबेर ? गणेश के आबे दही, पुछि लियही।

कुबेर नरम होइत बाजल — पुछबै की ? हमर बोलै के से मतलब नजि ने रहलै। तौं फुसि किए बोलबहो। ओना माछ तऽ कालि सँ आइ बेसिये पड़ल रहलै ने तँ सोचलिए जे चलान बाबू ने कहीं तोरा ठकने होअ।

ठेरी आ औंधी सँ ओकर ओंखि दुनू बन्न होमए चाहै छलै आ ओही बन्न होएबा लेल आकुल ओंखि सँ तामसे, दुखे बहए चाहै छलै नोर। गरीबो मे गरीब ओ, छोटेको लोक मे आर बेसी छोट लोक। तँ एइ तरहेँ ओकरा वंचित करैक अधिकार प्रथागत, सामाजिक ओ धार्मिक आर दसटा नियमे सन बिनु संकोचे स्वीकारने अछि ओ। प्रतिवाद कइयो ने सकैछ। मने मन सभ केओ जे बात जनैए रोहो मुँह खोलि बजैक अधिकार ओकरा नजि छइ।

गणेश के धनंजय चूड़ा कीनै लेल पठैने छलै। ओकरा घुरि अएलापर नाओ खोलि देल गेलै। एखन लगगा बिनु पकड़नो चलतै। स्रोतक संग नाओ अपने गाम दिस भासल जेतै। गणेश आ धनंजय गुड़क संग सुखले चूड़ा चिबाबए लागल। कुबेर किछुओ ने खेलक। केवल कएक ओँजुर नदीक पानि पिलक। नदी-वक्ष पर बिछिड़ डेठ सभक माथ पर असंख्य सूर्य उगए लागल छलै। काग-चील प्रभृति चिड़ै सभ क्रमागत माछ पकड़ैछ। काफी दूर मे अस्पष्ट संकेत सन एगो स्टीमरक धुँआँ देखना जाइछ। आकाश उज्ज्वल ओ निर्मल। मेघक कोनो अत्ता-पत्ता नजि।

गणेश हठात ममताबोध करैत बाजल — आइ तौं नहिजे अबितऽ कुबेर भाइ।

कुबेर कोनो जवाब नजि दैछ। चुपे रहैछ।

गणेश पुछलकै — माथ दबा दिअ कने ?

कुबेर कहलकै — उँ हूँ।

गणेश कनेकाल सोचि-विचारि फेर बाजल — पतबार धैल पार लगतऽ, हम आ कक्का करुआरि धरै छिकी — जल्दीए पहुँच जएइबै।

गामक बाहर पुबारि कात मलाहक टोल। चारुकात खाली जगहक अभाव नजि। किन्तु मलहटोलीक घर सभ एक दोसर सँ सटल जेना घराजोड़ी केने हो। एक नजरि देखने लागत जेना ई ओकरा लोकनिक अनावश्यक संकीर्णता। उन्मुक्त, उदार पिरथी पर दरिद्र लोक सभ स्वयं के ठकैछ। फेर विचार कएने बात बुझबा जोग होइछ। जगहक अभाव एइ जगत मे नजि, तैयो माथ नुकेबाक हेतु ओकरा सभक लेल एतबेट। समस्त समतल भूमि पर भूस्वामीक अधिकारक विस्तार, तकरा धकिया कऽ मलहटोली पसरि नजि सकैछ। एकटा खोपड़ीक कात करोट मे ओकरे निर्धारित लगानक जमीन पर आर एगो खोपड़ी ठाढ़ भऽ सकैछ। वंशानुक्रमे एह प्रथा चलि अबैछ। तकरे परिणाम छइ मलहटोलीक ई जमघट, घर पर घर।

दिन कटि जाइ छइ। जिनगी बीति जाइ छइ। ऋतुचक्रे समय घुमैत रहैछ, पद्माक टुटल तीरक धसना खसैत रहैछ। पानिक भीतर सँ पद्माक वक्षपर प्रकट होइछ द्वीप आ कोनो अर्धशताब्दीक विस्तीर्ण द्वीप पानि मे विलीन भऽ जाइछ। मलहटोलीक घरे घर नेनाक कानब कहियो बन्न नजि होइछ। भूख पियासक देवता, हँसी-कननाइक देवता, अन्हार आत्माक देवता — हिनका लोकनिक पूजा अरचा कहियो शेष नजि होइछ। एमहर गामक ब्राह्मण आ ब्राह्मणेतर भद्र लोक सभ एकरा सभ कें दूर ठेलने रहैछ, ओमहर प्रकृतिक कालवैशाखी एकरा सभ कें ध्वंस करै लेल आतुर। वर्षाक पानि घर मे दुकै छइ, जाड़क चोट हाड़ कपबै छइ। रोग अबैछ, शोक अबैछ। जीवित रहबाक निर्मम अनमनीय प्रयोजन बस अपने बीच झगड़ा-दन, छीना-झपटी करैत ई सभ फिरीसान- रहैत अछि। जन्मक अभ्यर्थना एहिठाम गंभीर, निरुत्सव, विषादयुक्त। जीवनक स्वाद एइठाम मात्र क्षुधा पिपासा मे, काज ओ ममता मे, स्वार्थ ओ संकीर्णता मे। आर देसी दारु मे। तारक रस पका कऽ जे दारु बनैछ, खेबाक भात सड़ा कऽ जे दारु बनैछ। भगवान रहै छथि ओइ गाम — भद्रपल्ली मे। एइठाम हुनका खोजनहु नजि पाएब।

पद्मा ओ पद्माक छाड़न सभ एकरा लोकनिक अधिकांशक उपजीविका। केओ माछ मारैछ, केओ माझीगिरी करैछ। कुबेर सन केओ-केओ खास पद्मा मे जान

पानि पुरैए तऽ केओ-केओ छोट-छीन जाल लेने छाड़न सभमे दिन कटैछ। नाओक जे सभ माझी, यात्री लऽ कऽ, माल बोझाइ कऽ कऽ पद्माक दीर्घयात्रा करैछ — एइगामक लोक कें ओइगाम पहुँचबैछ। ई भेल पानिक देश। बरिसकाल मे चतुर्दिक पानि जलामय भऽ जाइछ। प्रत्येक साल एइ समय किछु दिनक लेल लोकक आडन पर आ ऊँच जमीन छोड़ि समग्र परोपट्टा पानि मे डूबल रहैछ। पानि जाइबेर बेसी भोली, लोकक आडन घर आ दुआरि धुरखुर धरिक रक्षा नजि। बाट घाटक चिन्हो नदारद। एके गाम मे एइटोल सँ ओइ टोल जेबा लेल नाओक प्रयोजन। कएक दिनक बाद पानि घटै छइ, भीतर सँ ठाम ठीम बाट-घाट हुलकी देमय लगैछ। किन्तु तैयो मासदिन धरि चलबा जोग नजि रहैछ बाट। यान-वाहन एइ परोपट्टा मे प्रायः नहिजे। उठैत-बैसैत सभ कें नाओक प्रयोजन।

नाओक प्रयोजन कमै छइ उएह जड़कालाक शेष मे, फागुन-चैत मास मे। छाड़न सभ मे तखन पानि नजि रहै छइ, खेत सभ मे रहै छइ फसिल किंवा कटल फसिलक रिक्तता। लोक आरि धुर धेने गाम-गमाइत जाइछ।

नाओ चलैछ पद्मा मे। पद्मा तऽ कहियो सुखाइत नजि छइ। कहिया जे एह तरीक सुगिट भेलै के जनैछ। सागरगामी जल-प्रवाहक आइयो पलभरि विराम नजि। गतिशील जलक तल मे पद्माक मृत्तिकावक्ष केओ कोनो दिन नजि देखि पओलाक, फिरकाल गोपने रहि गेल।

मलाहक टोल नदी सँ बेसी दूर नजि। तैयो एतनीटा बाट चलैत कुबेर के काज तीरत छलै। नाओ पर भरि बाट अंट-संट-बजैत गणेश आब चुप भेल अछि। सनसल नाओ सँ उतरबे ने कएल। लगहि मे कोनो सम्बन्धीक ओइठाम कोनो प्रयोजन नजि। नाओ लऽ कऽ ओ असगरे ओतए चल गेल।

गणेशक घर पहिने पड़ै छइ। ओ आडन नजि गेल। अस्वस्थ कुबेरक संग भागुआए लागल।

नकुल दास अपन ओसारा पर बैसि चिलम पीबैत छल। कुबेर के देखैत ताक दैलक — ओ कुबेर, सुन, सुनि जो।

गणेश कहलकै जे कुबेरक मन ठीक नजि छइ, बोखारे देह जरै छइ।

नकुल बाजल — बोखार ने की ? तखन जो, आडन जो। देख गऽ अडना ने की काण्ड भेलौए।

एहन बात सुनि नीक जकाँ बिनु बुझने गेलो ने जा सकैछ। कुबेर उद्विग्न तीरत पुछलकै — केहन काण्ड नकुल भाइ ?

भोरहरिया राति मे तोहर घरबाली खलास भऽ गेलौ कुबेर।

कुबेर अवाक जकाँ होइत बाजल — की! नओ मास पुरि जे मात्र कएत दिन भेल छलै नकुल भाइ ? ई की भेलै ?

किए ? नओ मास मे खलास नजि होइ छइ ?

गणेश पुछलकै — बेटे छइ ने ?

नकुल सहमति जनबैत बाजल — हैं! हमर पाची गेल छलै, अबिते कहलक जे कुबेरक घर मे राजपुत्र एलैए बाड। ओ नान्हिटा छऔड़ाक सुनरताइ — चानसन मुँह, गोर दप-दप रंग।

कुबेरक झपलाइत आँखि चमकि उठलै। नकुल दुष्ट हँसी हँसैत उपहास करैत बाजल — तौ तऽ देखै छी कारी करिलौठ छै रे कुबेर, गोराचान कहाँ सँ एलौ रे? आडन घर मे तऽ रहिते ने छै, किछु कहल नजि जा सकैछ।

गणेश तमसाइत बाजल — बहु गोर छइ ने नकुल भाइ ?

हैं, बहु तऽ गोरे छइ।

कोनो घरक पछुआर दऽ, कोनो गली होइत कुबेर आ गणेश झटकारलक। गणेशक मन खूब खुशी। बेर बेर ओ कहए लगलै — बेटा हेतौ से कहने नजि छलियौ कुबेर। कहने नजि छलियौ जे एइबेर बेटा नजि भेने उपाय नजि।

अन्त मे विरक्त होइत कुबेर बाजल — चुप रह गणेश। बेटे लऽ कऽ की हेतै? अपन पेट भरिते ने अइछ आ बेटा !

खिन्न होइत गणेश बाजल — तौ खिसिआइ छै कुबेर भाइ ?

खिसिएबौ नजि। तौ की हमरा मरै लै कहै छै ?

ओकर मिजाजक ई आकस्मिक परिवर्तन गणेश केँ बड़ दुर्बोध बुझेलै। भविष्यक बात सोचनाइ, हिसाब-किताब केनाइ ओकर क्षमताक बाहर छइ। बहु रहने कखनो काल बेटा-बेटी होइ छइ, ओ ततबे जनैए, सुविधा असुविधाक बात ओ की जानए गेल। पिरथी पर कोनो लोक जन्म लेने तकर पेटक ओरियान मनुक्खक दायित्व नजि, जे जन्म दैत छथिन तिनकर, गणेश सएह विश्वास करैछ। तँ बेटा हेबाक सम्वाद सुनि कुबेर के तामस करबाक कारण ओकरा बुझै मे नजि अएलै। बुझबाक चेष्टा ओ नजि केलक।

टाट लागल छोट सन एकटा आडन, तकर दू कात दू गो घर, कुबेरक घरक

पाँचय एइ सँ बेसी किछु नजि। एइकातक घरक संकीर्ण ओसारा एगो फाटल पाँचिया, बोरा आदि सँ घेरल। सहजहि बुझल जा सकैछ जे ई सोइरि घर थिक। कारण बोराक फाँक दऽ भीतर सूतल मालाके ओहिना देखल जा सकैछ।

कुबेर दोसर कातक ओसाराहीन घर मे प्रवेश कएलक। बाहर बरिसकालक आकाश मे कड़गर रौद रहितहुँ खिरकी हीन एइ घरक भीतर प्रायः अन्धारे। कोना मे राखल समान के चिन्है लेल नीक जकाँ ठेकनाबए पड़ैछ। घरक एक कात मे चौकी समान ऊँच एगो बाँसक मचान। मचानक आधा एगो फाटल मेथरी ओछाओल। चिक्कन तेलचट गेरुआ माथ तर दऽ कुबेरक पीसी एइ मोठैन पर सुतैछ। मचानक बाँकी हिस्सा पर हाँड़ी बासन पसरल। छोट-पैघ एते हाँड़ी बासन कुबेरके जीवन मे संचित नजि भेलैक — तीन पुरुख सँ जमलैए। मचानक नीचा पुरना तखता भरल। कुबेरक बापेक अमलक एगो नाओ बेर-बेर भबडी करा चलेबाक समय क्रमागत पानि मे भीजैत बरख चारिएक पहिने धरि व्यवहार कएल गेल छलै, तकर बाद भड्ठीयो जोग नजि रहने तोड़ि तखता सभ जमा कऽ कऽ राखल गेल छइ। घरक दोसर दिस छोट एगो ढेकी, कुबेरक बाप ताराधन अपने हाथे बनओने छल। काठ ओ पओने छल पद्मा मे। नदीक पानि मे भासैत काठ सहजे केओ घर नजि लबैए। ककर चिताक प्रयोजने ओ काठ आगल गेल छल होएतैक, के जनैछ। मुर्दाए जकाँ चिताक आगि मे सामान्यतम जगल काठक लोकक घर मे जगह नजि। किन्तु एइ ढेकी-काठक इतिहासे भिन्न छल। कुबेर ताहिया छोट छल, पद्मा नदीक माझीक बेटा जाइ बयस मे पद्मा मे हेलै मे महु नजि होइछ, तते छोट। छोट सन एगो नाओ पर बेटा के संग लेने हाराधन पद्मा पार होइत छल। नदीक बीचो-बीच पुरान नाओक पेनी हठात् केना ने फँसि गेल। आसिन मास छलै, पद्माक दुनू तीरक अन्तर तीन माइल सँ कम नजि। पद्मा जकरा छाती सँ लगा कऽ पोसने छइ, पद्माक वक्षपर जते किए ने ढेउ उठौक, भाइल ढेकेक ठेलि कऽ पार भेनाइ ओकरा लेल कष्टकर भनहि होइ, असम्भव तऽ किंचि नजि। हाराधन असगर रहने चिन्ताक बात नजि छलै। कुबेर आर कने गेन एन देहगर दसगर रहितै तैयो चिन्ताक कारण नजि। किन्तु नान्हिटा कुबेर डेरा के तैलए नजि चाहलक, घबड़ा कऽ बेर-बेर हाराधन के पँजिएबाक प्रयास करैत छल। तखने एगो नामसन काठक टुकड़ा लग आबि ओकरा लोकनिक रक्षा कराने छलै। भऽ सकैए ओ काठ चिताए बनबै लैल केओ समसान घाट अनने छल। हाराधन के किन्तु ओ काठ फेकि देल पार नजि लगलै। घरक समान बना सोकरा मादर गरहि मे रखलक।

कुबेरक पीसी आ ओकर गेट बेटी गोपी कुबेर के देखिते चीत्कार करित लग जूमलै। कुबेर ककरो सँ कोनो बात नजि केलक। चिते पीसीक ओछेन पर पाँहु रहल।

पीसी पुछलकै — सूति रहलै बौआ ? ओमहर बहु बेटा बिएलौए, देखि न आ।

गोपी कहलकै — बाउ हओ, बौआक रंग एकदम गोर दप-दप छइ। नकुलवाक बेटी पाची की बजै छल से सुनबऽ ? बजै छल जे साहेब ने कि एहन होइ छइ। नजि गे पीसी ?

कुबेर धमकबैत बाजल — नकुलबा की रे हरमजादी ? काका नजि बोली होइ छै ?

गोपी मुँह लटका केँ बाजल किए कहबै ? ओ कलमुहा के मुह मे जे अबै छइ कहैए आ।

की कहै छै तोरा ?

राति मे मझिला बाबू ने कि अपना आङन अबैए से पुछैत रहैए। आब पुछने एक लोइआ कादो मुहे पर तेना ने फेकबै जे मुहें बन्न भऽ जेतै।

अच्छ फेकियही, बाजि कुबेर औघाए लगैए। कनेकाल बाद ओसारा पर बच्चाक जोर-जोर सँ कानैक आवाज सुनल जाइछ। एह, छौड़ा समय सँ पहिने भने आबि गेल हो, मुदा गलाक जोर नजि कम छइ। चीत्कार कऽ सकैछ।



दू

किछ दिनक पश्चात् रथयात्रा छलै।

रथयात्राक उपलक्ष मे केतुपुर मे कोनो धूमधाम नजि होइ छइ। पद्माक गाँव मे सोनाखाली गाम, रथयात्राक उत्सव ओहीठाम होइ छइ। सोनाखालीक जमिन्दारक एगो छोटसन रथ बहराइ छइ। सोनाखाली सँ मोहनपुर धरि दस मील दूरी अछि। रस्ता छइ, एइ अंचलक इएहटा बाट बरिसकालो मे नजि डुबै छइ। सोनाखालीक नाम छइ कोसिया बाट। नाम मे ई बाट एक कोस केना बढि गेलै से जानि। सोनाखालीक जमिन्दारक रथ एही बाटे आधमील जा अन्नबाबाक मैदानक एक कात पड़ल रहैछ सात दिन, तकर बाद उनटा रथक दिन घुरैछ जमिन्दारक मैदान मे। एइ स्थानक नाम अन्नबाबाक मैदान होएबाक एगो इतिहास छइ। बहुत दिन पहिने एइ अंचल मे एकबेर भयानक अकाल पड़ल छलै। ओइ समय कोनो एक संन्यासी आबि एही मैदान मे डेरा खसौलनि आ विराट अन्नक्षत्र खोलि देलनि। ओना अपना लग संन्यासी केँ फुटल कौड़िओक सम्बल नजि छलनि। पद्माक बाइछ, तेहन ने विचित्र छलनि लोकक उपर हुनक प्रभाव जे ककरो सामने जाइ भऽ ओकर आँखि दिस तकैत आदेश दितथिन आ बड़का बड़का जमिन्दारक सभ मनक मन चाउर-दालि पठा दितनि। सएक सए भद्र गृहस्थ सभ ओही मे गमछ बान्हि भानस-भात करैत आ अकाल पीड़ित नर-नारी केँ परसि जाइ सभ बड़का-बड़का चूल्हि मे ओइ-विराट क्षुधा यज्ञक अग्नि प्रज्वालित भेल छल, आइ तकर नामो निसान पर्यन्त नजि।

रथक दिन एइ मैदान मे विशाल मेला लगै छइ जे उनटा रथ धरि चलैछ। पद्मा पहिने दूर छलै, एखन तते लग ससरि एलैए जे मेलाक एक छोर प्रायः नदी तीरधरि ठेकि जाइ छइ। जलपथ ओ थलपथ सँ हँइ बान्हि लोक आबि मेला मे भीड़ लगबैछ। भीड़ बेसी रहै छइ पहिल दिन आ शेषदिन। बीच मे पतरैल रहै छइ। गमैया लोकक आवश्यक आ सख सेहन्ताक सभ वस्तु-जात मेला मे अबैछ, एतेधरि कि शहरक नारी वस्तुओक आविर्भाव देखल जाइछ। कपड़ाक दोकान, साज-गोजक दोकान-दोकान जे कते तरहक लगैछ तकर ठेकान नजि। बकरी-छागर, गाय-बड़द बिकरी होइछ। कटहर ओ अनारस सँ मेलाक एक भाग भरल रहैच। बड़का-बड़का नाओ मे भरल मालदह ओ तिरहुतक आम अबैछ। लेमोनेड कहि बोतल बोतल भरती सैकरिनक लाल निस्तेज पानि अजस्र बिकरी होइछ। महिला सब सेहन्ता पूर करैछ शंख आ काचक चूड़ी पहीरि। बच्चा सभक डौड़ मे पहिरादैछ नव डराडोरि। कएठाम सरकार सँ लाइसेंस प्राप्त जुआ खेला चलैछ। मेलाक ई एगो प्रधान अंग। सभ सँ बेसी भीड़ होइ छइ बाला खेला लग। बाँसक घेरेबाक चारुकात भीड़ केने ठाढ़ चारि-चारि पइसे चारि-चारि बाला कीनि बेसी भाग गरीब चासीए सभ हरदम फेकैत रहैछ। रुद्धसाँस तकैत रहैछ, ओकर फेकल बाला ललका कपड़ा पर सजाओल टाका, अठनी, चौअनी ओ दुअनीक सघन जंगल मे अन्हरैल घूरि-फिरि ठाढ़ होइछ खाली जगह पर जा कऽ। बेर-बेरक व्यर्थता जेना ओकरा लोकनि केँ विश्वास मे होइत होइ। कते लग-लग पसारल कैचा सभ; खाली जगह तऽ बड़ थोड़! ओकरा सभ मे जानि ने के घरवाली लेल छपुआ साड़ी, धीया-पुता लेल खेलओना आ लाइ-मुरही एवम् आश्रमक बेगरताक कते की कीनै लेल कतेदिनक संचित किछु पाइ अनने छल, साँझखन थाकल ठेहिएल लोक जखन गाम दिस डेग बढ़ओलक, देखैए बेचारा लग बिड़िओ कीनैक कैचा नजि। ककरो मादे नजि सोचि आइ ओ की कऽ बैसल ? पलघड़ीक स्वाधीनता, स्वार्थपर होएबाक सुयोग पाबि अपना के सम्हारि नजि पओलक ?

रथक दिन सकाले सँ झिसिआइत छलै। दिन चढ़ला पर निद्रातुर आँखि मिल-मिलबैत गणेश कुबेरक आडन आएल।

कुबेर तखनहि सुतल छल। गणेश ओकरा जगओलक। कहलकै — चल कुबेर, नाहय ठीक-ठाक कऽ कऽ राखि आबो। हमरा हाक दऽ कऽ कका नाह पर जा बैसल छइ।

कुबेर हफिआइत कहलकै — बैस गनेसिया, बैस। मे पीसी, हमरा आ गनेसिया के दू मुट्ठी मुरही देबें ? गोपी, हमरा एक लोटकी पानिदेल पार लगतौ ?

घर मे मुरही नजि छलै। कदाचे रहै छइ। पीसीदू मुट्ठी चुड़ा आ कने गुड़ दऽ गेलै। गुड़ मुह मे दऽ सुखैले चुड़ा चिबबैत कुबेर बाजल — ले, खो गनेसी। देखै छही रथक मेघ महिआइ छइ।

हैं।

चार पर थोड़े खढ़ चाही। रातुक बरसा मे घर चुबै छल -देखही!

गणेश देखलक जे घरक एक कोन सत्ते भासल छइ। ओ जीभ सँ अपसोचक शब्द कएलक। बाजल कोन दिस चुबै छौ तें रक्षा, ने तऽ सभ चीज-वस्तु भासि जइतौ। चार पर खढ़ देबही की आइ ? मेला गेले तऽ समय नजि भेटतौ।

कुबेर माथ हिलबैत बाजल — खढ़ कहाँ अइ। खढ़ तऽ नजि अइ।

आ छलौ जे ?

गोपीक मतारीक बिछन मे लागि गेलै।

बात बुझि गणेश गंभीर होइत बाजल — से तऽ नीके केलैं। जेहन समय।

आस्ते-आस्ते दुनू चूड़ा चिबाबए लागल। गणेश जाइ लेल आएल छल से बात जेना ओ सभ बिसरि गेल। खेनाइ गणेश पहिने बन केलक। घर सँ ओ कने पानिआएल भात खा कऽ बहराएल छल, कुबेर खाओ। लोटा उपर कऽ कऽ ओ कने पानि पीलक। कुबेर सेहो आर एक फक्का मुँह मे दऽ बाँकी दान कऽ देलक आपन जेट बेटा के। कहीं सभ चूड़ा ओ असगरे ने फाँकि जाए सोचि बाजल— पंढी के सेहो दू गाल दिअही लखा, बुझले।

लखा माथ हिलबैत कहलकै — उँह, ओकरा पीसीदेतै।

पीसी के आर नजि छइ। तौही कने दऽ दही।

कुबेरक दुनू बेटा उलंग। बरिसकालक उमस मे घमाएल ओकरा लोकनिक दान पानदेह चकचक करै छइ। पितृदत्त प्रसादक भाग बँटबारा लऽ केँ दुनू मे एगो जेठपूत कलह बाझि गेलै। कुबेर से देखितो नजि देखलक। ई जे ओकर ब्यागीभाता से नजि कहल जा सकैछ। मनेमन ओकर एगो अस्पष्ट उद्देश्य बुझना जाइत। शिक्षा होउक, अपन-अपन हिस्सा बखरा बूझि लेब सिखओ। दू दिन बाद गामनगढ़ मे समस्त संसारेक संग लड़ए पड़तै, तखन के अओतै पंचैती करऽ लेल ?

लोटा उठा कुबेर घरक सामनेक संकीर्ण ओसारा पर सँ निघुरि कऽ ओलती गेल। कुबेर कएलक। फेर गणेश जकाँ लोटा उँच कऽ कऽ उपर सँ पानि पीबि चिलभ चिलभ बैसल। पीसी ओसाराक एक कात हिलसा माछक तेल मे हिलसा तरैत

छड़। दोसर दिस मालाक सोइरिक नीचा ओसाराक माटि झटकक पानि सोखि ओकरा बासक जोग नजि रहए देने छड़। तैयो ओतै सिमसिमाह ओछैन पर नवजात शिशु के लेने माला दिन कटैछ। उपाय की ? जेहन घिनाओन मनुक्खक जन्मलाभक प्रक्रिया! आडन मे बेसी घर रहने बरु एगो घर अपवित्र कएल जा सकैत छलै। दूय खोपरी जकर सम्बल तकर स्त्री आर कोनठाम सन्तान प्रसव करतै ? भद्रलोक सभ ओसारा पर अस्थायी घरक व्यवस्था कऽ लैछ, चौकी धऽ दै छड़। जे सभ आर बेसी भद्रलोक, तकरा सभके रहैत छड़ स्थायी सोइरि घर जाइ मे रौद बसात नीक जकाँ लागि सकैछ। कुबेर के तऽ से खेमाता नजि छड़। आर जतबा खेमाता छड़ ततबा तऽ ओ कएनहि अइ। नीक जकाँ झटुक रोकबाक व्यवस्था केने अइ, घर छारबाक नार ओछैनक तर मे पसारिदेने छड़। देवीगंजक रेलकम्पनीक कोइला चोरी कऽ कऽ आनि आगियासीक इन्तजाम केने अइ। आर बेसी ओ कइए की सकैए ?

हठात्, मिनटे सँ कमे समयक लेल तरतड़ा कऽ जोरगर बरसा भऽ गेलै। तकर बाद जहिना झिसिआइ छलै, तहिना झिसिऐ लगलै।

गणेश देहरि लग घुसुकि आबि बाजल - जेबै नजि कुबेर ?

कुबेर कहलकै - हैं, चल जाइ। अच्छा, तों कह तऽ गणेश, हीरु का..... सँ दू मुठ्ठी खढ़ मंगियौ ? देतै नजि ?

गणेश कहलकै - हीरु का..... तोरा खढ़ देतौ ? ओकरा तों चिन्है नजि छही कुबेर, कल्हुके काण्ड बुझल छौ ? बिहाने घर घुरलिये तऽ बहु कहलकै जे घरक चाउर शेष भऽ गेल छड़। खैब की सुथनी। रातुक जगरना, औधी सँ आँखि ताकल नजि जाइत छल, ताइपर चाउर खतम। बहु के कहलिये जे हीरु का..... सँ थोड़े चाउर पैच लऽ आन, दुपहर मे गामेक दोकान सँ कीनि आनब तऽ घुरादेबै। से कहलियौ ने, घुरादेलकै बहु के। की कहलकै से सुनबै - बृहस्पति दिन बलू पैच उधार देब बारन।

कुबेर आश्चर्यित होइत बाजल - तोहर तऽ अपने कक्का छौ ने।

हैं, तें ने पिरीत बेसी। खाली लेनाइ जनैए, देनाइ नजि।

एइ बात सभ सँ गणेशक बुद्धिमत्ताक परिचय भेटैछ। कुबेर मूड़ी हिलबैत बाजल - तऽ हमरा आडन किए ने पठेलही बहु के ?

गणेश जेहने बकलेल, तेहने सुधंग। ओ बाजल - तोरा घर मे चाउर कहाँ सँ अओतौ ?

चाउर कहाँ सँ अतै माने। हम सभ की भात नजि खाइ छी ? गरीब छी तै की दू मुठ्ठी चाउर पैच उधार देल पार नजि लागत ? तेहन गरीब नजि छी, पानि राख।

कुबेर तामसे आ गणेश लाजे कनेकाल चुप भेल रहल। अन्त मे गणेश आस्ते-आस्ते पुछलकै - खिसिया गेलै कुबेर भाइ ?

खिसिएब नजि। तोहर बाते तेहने होइ छौ जे देह में पसाही लागि जाइए। भजान का..... नाओ पर बैसल हैतै, चल जल्दी।

कुबेर ओसारा पर आएल। बरसा मे भीजैत-भीजैत ओसारा पर थाल आ पिछर भऽ गेल छड़। घर आडनक एइ खिचार सँ नदी कातक पाँक बेसी नीक। ओइ मे ठेहुनधरि गड़ि गेनुहु एना अस्वस्ति बोध नजि होइ छड़। घर आडनक थाल सँ पैर मे पानि लागि जाइ छड़। थाल कादो गीजि जकरा जीविका अर्जन काए पड़ैत छड़, ओही थाल कादोक स्पर्श सँ तकरो पैर कुटकुटाइ छड़। आकस्मिक क्रोध मे कुबेर नेना जकाँ ओसारा पर एक लात मारलक। तरबाक एकटा स्पष्ट छाप मात्र ओइठाम पड़लै, आर किछु नजिभेलै।

सोइरि घर सँ माला क्षीण स्वर मे कहलकै - हे चलि नजि जाउक, कने सुनि जाउक। घर चुबै छड़। इएह लार-पात सभ लऽ जाऽ कऽ धऽ दौक। बिछान तर जेहने रहने तेहने बिन रहने।

मालाक मुह सँ एहन निःस्वार्थ उक्ति प्रायः नजि सुनल जाइछ। कुबेर के गुण होएब उचित छलै, किन्तु उनटे ओ विरक्त भऽ बाजल - नार बिनुदेने भीजल माटिपर सुतल हैतै ? ढंग करैक काज नजि हइ, चुपचाप पड़ल रहौक। घर छारए तै खढ़ पात लगतै से हम लऽ आएबै।

हुसेन मियाँ कहले रहै जे देतै खढ़ ?

हुसेन मियाँ कलकत्ता गेल छड़।

माला अपसोच करैत पुछलकै - कहिया गेलै ? पहिने नजि बजलै। एक गीयाक सुइ लाबे कहितिये। कलकत्ता मे पाइ मे दस गो सुइया दैछड़।

कलकत्ता सँ माला एक पाइक सुइ अनबैत - सुनि ककरो हँसी नजि लगलै। गीगी बरन मालाक समर्थन मे की ने कहलकै - ठीक बुझबा जोग नजि भेलै। गीयाकी देबाक प्रयोजन नजि छलै। कुबेरक पैरक गप्फा मे लागल पानि मे हजार पाँक कटैत छलै। ओ चुपे बहरा गेल।

नदी तीर पर नाओ मे ओकरा सभ के काज छलै। खेबा पीबाक बाद नाओ लऽ कऽ ओ सभ सोनाखालीक मेला जाएत। संग मे धीया पुता रहतै। केतुपुर ओ लगपासक गामक यात्रियो भेटि सकै छइ, से सभ भाड़ा दऽ कऽ मेला देखै लेल जाएत। नाओ कने साफ सुथरा कऽ कऽ एगो अस्थायी खढ़ पातक छज्जादेब जरूरी। नाओक छोटका पाल मरम्मत करै लेल उतारल गेल छलै, ओहो बाँसक मथनी पर ठीक कए लगाबए पड़तै। बरिसकाल मे बसात प्रायः सोनाखालिए दिस बहै छइ। गुमकी कए सामान्यो बसात जै उठलै, पाल टाड़ि मेला जाइ मे घंटेभरि समय नजि लगतै।

नदीकात जाइते ओ सभ देखलक जे छत्ता ओढ़ने होसेन मियाँ ठाढ़ भेल अछि। घर छारबाक लेल होसेन सँ मडनीक किछु खढ़ पेबाक संभावना छलै, कुबेर के ओकरा देखि खुसी हेबाक चाहैत छलै। तैयो ओकर आविर्भाव सँ चिरदिन जे एक अज्ञात आशंका ओकरा अस्वस्ति बोध करबैत रहलै, आइयो सैह आशंका हठात् ओकरा घेरि लेलकै। फिस-फिस कए बाजल — होसेन मियाँ रे गनेसिया।

सैह तऽ देखै छी।

कने रहस्यमय लोक अइ ई होसेन मियाँ। घर ओकर नोआखाली अंचल मे छइ। कएक बखँ सँ केतुपुर मे रहैए। वयस ओकर कते हैतै से चेहरा, मुहरा देखि अनुमान नजि कएल जा सकैछ। पाकल केश मे ओ कलप करैछ, दाढ़ी मे लगबैछ मेहदी, कान मे ठुसने रहैछ अतर लागल तुर। पहिले पहिल जहिया ओ केतुपुर आएल छल, पहिरन छलै एगो फाटल लुंगी, माथ मे रुक्ख झबरल केश, घसाट लगने देह मे दाग होएब निश्चित। मलहटोलीक मुसलमान माझी जहरक घर मे ओ आश्रय लेने छल, ओकरे नाओ पर लग्गा चलबैत छल। आइ कालि ओ अपन छोट-खुटीक तैलाक चिकन देह ठेहुन धरि पातर पंजाबी सँ झँपने रहैछ। अपन छोट सन नाओ सँ पद्मा पार करैछ। खेत पथार कीनि, घर बारी बना बेस आराम सँ जीबि रहलए। गत बखँ निकाह कए दोसर बीबी घर अनलकए। एते सभ जे ओ केना केलक, गामक लोक ठीक अनुमान नजि कऽ पबैछ। नितहु नव-नव उपाय सँ ओ अर्थोपार्जन करैछ। नाओ लऽ कऽ ओ पद्मा मे माछ पकड़ए गेल-गेल तऽ ठीके कारण जाइत सभ देखलकै, किन्तु पद्मा मे कोनठाम ओ मछबारी कएलक, कोन घाटपर माछ बेचलक — से ककरो नजरि नजि पड़लै। ओकर नाओक माझी सभ के पुछने एगो खिस्सा अबस्से सुनल गेलै — जाइ घाट पर ओ माछ बेचलकए ओतए नाओ सँ गेने सात आठ दिनक समय लगै छइ। तकर बाद कएक दिन होसेन गामे पर बैसल रहैछ, कोनो काज उदेम नजि। फेर हठात

एक दिन ओ निपत्ता भऽ जाएत। पन्द्रह दिन, मास दिन ओकर दर्शनो दुर्लभ। आनिमान होइ छइ ओकर हठात् एवम् किछु दिनक बाद दू सए गाय बकरी चलान भऽ जाइछ कलकत्ता।

बड़ सहज व्यवहार होसेनक। ललौन दाढ़ीक फाँक दऽ ओ सभ समय बिहारी रहैछ। जे केओ ओकर कोनो छति करै छइ तकरा ओ बेस निर्ममताक गग दण्ड दैछ, किन्तु केओ कोनो दिन ओकरा तमसाइत देखने होइ से ककरो स्मरण नजि छइ। धनी-गरीब, भद्र-अभद्रक भेद-भाव ओकरा लग नजि, सभक संग ओ एके रंग मिठ-मिठ बात करत। आइयो कखनो काल ओ मलहटोली जाइछ, ललकनहा खोपड़ीक ओसारा पर फटलाहा पटिया बोरा पर बैसि आराम सँ हुक्का गुग्गुलु बौत रहैछ। सभ चारुकात सँ घेरि बैसल रहने ओकर मुह आनन्दे चमकैत रहै छइ। एते उपर उठि गेलाक बादो एकरा लोकनिक आकर्षण मे ओ जेना स्वयं के नीचा खीचि अनैछ। नजि, मने-मन मलहटोलीक केओ ई बात विश्वास नजि करैछ। जीवन-संग्रामक जय-पराजयक ठीक मिलन-सीमान्त पर ओ सभ बास करैछ। मित्र ओकरा लोकनिक केओ नजि। तखन विश्वास हो वा अविश्वास कोनो फर्क नजि। होसेन मियाँ हँसैत सोझे अडने जा ओसारा पर बैसि अपन गुप्त, गंभीर आ अज्ञात मतलब हासिल करब आरम्भ केनहु मलहटोली मे एहन केओ नजि जे ओकरा किछु कहतै। भऽ सकैए जे कहि सकै, मुदा कहै नजि छइ मात्र एहीदुआरे जे कहनाइ निरर्थक। ओइ सँ कोनो लाभ भेनिहार नजि। ओ जे करत से सभ स्वाभाविक आ अवश्यम्भावी। अन्यथा करै लेल छाती तानि ठाढ़ भेने ककर की लाभ हैतै ? ताइ सँ बरिसकाल मे घरक मरम्मत लेल कने खढ़पात भेटि जाइ, उपासक समय बिनु सुदिक किछु कर्ज भेटि जाइ, सएह ने ढेर लाभ।

होसेन मियाँक गुप्त मतलबक थोड़ बहुत आभास जे मलहटोलीक लोक केँ नजि रहैत छइ से बात नजि। मलहटोलीक तीनय परिवार निपत्ता भऽ गेलै। स्त्री, पुष्प, बच्चा बुढ़ निर्विशेष एक-एकटा समग्र परिवार के जे होसेन मियाँ कतऽ राखि लबैए, पहिने तकर भनकी ककरो नजि लागल छलै। बाद मे पता चललै जे नीआखाली दिस समुद्रक बीच मे छोट सन कोनो द्वीप मे प्रजा बसा ओ अपन निर्धारित स्थापित कऽ रहल अछि। ओ द्वीप ने कि सघन जंगल सँ भरल, शहर नजि, गाम नजि, लोक बसती नजि, छइ केवल जंगली जानवर आ असंख्य चिड़ै पक्षी।

थोड़ेक थोड़ेक जंगल साफ कए एइ द्वीप पर होसेन मियाँ ऋणग्रस्त अनाहारे भरणसम्र परिवार सभ केँ लऽ जा अपन उपनिवेश बसा रहलए। लोभ देखा कऽ

आश भरोस दऽ कऽ एक एकटा निरुपाय परिवार के ओ एइ द्वीप मे लऽ जाइछ। सृष्टिक आरंभ सँ जे कहियो आवाद नजि भेल तेहन किछु जमीनदैछ, रहै लेल घर बना दैछ, खेती-बारी करै लै दैछ हर बड़द ओ जंगल काटै लेल किछु साज-सरंजाम। आन-आन ठाम सँ जे ओ कते परिवार के लऽ गेलए से के जनैए, किन्तु केतुपुरक मलहटोलीक तीन घर माझी के जे ओ आदिम असभ्य युगक चासी मे परिणत केने अछि से बात महलटोलीक ककरो सँ अज्ञात नजि छइ। तैयो जननाइ नजि जननाइ ओकरा सभ लेल समाने। माथ झुका कऽ ओ सभ होसेन मियाँक उपकार स्वीकार करत। मनुखक बासक अनुपयुक्त ओइ द्वीप के जनपद मे परिणत करबाक आह्वान के जतबा दिन सम्भव मूड़ी हिला अस्वीकार करत, जहिया से सम्भव नजि हैते तहिया बहु-बेटक हाथ पकड़ि चुपचाप होसेन मियाँक नाओ पर जा बैसत।

तें, मनेमन ओकरा सँ डेराइतो कुबेर लग जा बाजल - सलाम मियाँ भाइ।

होसेन कहलकै - सलाम, की खबर माझी। बड़ काहिल लगै छऽ?

बोखार लागल छल। कलकत्ता सँ कहिया एली ?

आइए। आर गणेश भाइ, तोहर की खबरि ? मेला नजि जेबहो ?

गणेश सेप घोंटैत बाजल - जेबै मियाँ भाइ, मेला जेबै। धीया-पुता सभ मेला जाइ लेल पागल भेल छइ, नजि गेने बनतै ?

गुमकी लधने छइ, पाल सँ काम नजि चलतऽ। सकाल-सकाल रमाना हो जा। बदरी लाधि सकैए, साम सँ पहिले आपस आ जइहऽ। अकास के हाल ठीक नजि छऽ। सुनै मे आएलहऽ जे आज-कालक अन्दरे जब्बर अन्हर बिहाड़ि अतै।

कुबेर एक बेर आकाश दिस आं एकबेर नदी दिस देखलक। पातर कुहेस सन मेघ भरल आकाश। निस्तरंग पद्माक वक्षपर पड़ैत बुन्नी सँ बनैत आ विलीन होइत अनगिनत बुलबुल्ला। नदीक दोसर तीर नजि देखाइ दैछ। नदीक बीचक नाओ सेहो अस्पष्ट। लगक कने स्पष्ट एगो नाओ दिस देखैत कुबेर संक्षिप्त प्रश्न कएलक - नजि जाइ मेला ? की कहै छी मियाँ भाइ ?

होसेन कहलकै - जेबऽ ने किए ? डर की ? आसमान देखि कऽ जइहऽ देखि कऽ आपस होइहऽ। बरिसकालक बिहारि संकेत दइएकऽ अबैए।

राजी होइत कुबेर नाओ पर चढ़ल। मुसलमान माझीक आरदू गोट नाओ मेला जाइ लेल तैयार छलै, दुनू संगहि विदा भेल। नदीक पानि लऽ नाओ धोइत धोइत कुबेर एक बेर उनटि कऽ देखलक, होसेन चल गेल छलै। घरक चार लेल

मानवक खढ़क बात आब ओकरा मन पड़लैए, होसेन के कहि रखने नीक होइतै। ओ एखने अइ, एखने नजि। कालि बिहाने ओकरा ओइठाम गेने सुनत जे ओ रातिए ढाका रमाना भऽ गेल। कहिया आपस हैत ? से के जनैए!

होगलाक छारनि बाती संग बन्हैत-बन्हैत कुबेर हठात् अकचकाइत बाजल - के हाक दैछौ रे गनेसिया ?

बहुत दूर नदी सँ आवाज अबै छलै, मानव कण्ठक लगातार एगो क्षीण आवाज। कुबेर ठाढ़ भऽ दुनू कानक पाछौ हाथदैत अकानैत जवाब देलकै। ई भेल एक तरहक भाषा। पूर्वबंगक माझी श्रेणीक लोक छोड़ि ई भाषा दोसर नजि नही छ, एइ भाषा मे बात नजि, छइ मात्र तरंगायित शब्द। उन्मुक्त पाँतर मे विस्तृत नदीवा पर ई शब्द दूर सँ दूर चल जाइछ क्षीण सँ क्षीणतर होइत, किन्तु तरंगक क्रम अचकल रहैछ। अस्पष्ट गुंजन सन मद्धिम होइतहुँ यदि कानक स्पर्श करैछ, पद्मा नदीक माझी कानपाति सुनि एकर अर्थ लगा सकैछ। शब्दक दुर्लक्ष्य उत्स दिग ताकि ओ दीर्घ साँस लैछ। बाम हाथ कानक पाछौ राखि दहिना हाथ मुहक सामने आनि संचालित करैत अविराम उच्चारित आवाज सँ ओ तरंगक सृष्टि करैछ।

धनंजय मन दऽ नजि सुनलक। ओ पुछलकै - के रे ? की कहै छौ ?

कुबेर कहलकै - अपन रासू।

रासूक नाम सुनि धनंजय अवाक भऽ गेल।

बिन्दा माझीक बेटा ? की बजै छै ? नीक जकाँ सुनलिही तऽ ?

रासूक आवाज नजि चिन्हबै का ? अखनिते अतै, देखि लियहक।

धनंजयक विस्मय जेना कमैए ने चाहैछ। बहुत दूरक नाओ दिस तकैत ओ बाजल - रासू तऽ होसेन मियाँक द्वीप गेल छलै ने ?

है।

एली केना ?

कुबेर विरक्त होइत बाजल - से हम केना कहिअ, अतै तऽ पुछि लिअहक। तीन मियाँ छोड़ि देने हैतै, ओ अपनो पड़ा सकैए, बिन बुझने की कहिअ ?

कालक बाद फेर हाक सुनाइ पड़लै, एइ बेर आर स्पष्ट। हाकक आवाज मे नो गंगी प्रयुक्ताक सुर छलै से तीनू के बुझना गेलै। गणेश कुबेर दिस ताकि किन्तु आगे लेल जे मुह खोललक से खोलनहिँटा रहल; बाजल नजि किछुओ। हाकक जवाब देना लेल कुबेर सुदीर्घ साँस लेलक।

किछु कालक बाद एगो पुरान जर्जर सन नाओ आबि भिड़लै। दूगो अनचिन्हार माझी नाओ खेबि अनने छल। आन गामक नाओ। नाओक खोल मे तत्तरास कटहर भरल जे नाओक कगनी पानि सँ सामान्य कने उपर भसैछ। नाओपर कोनो छज्जा नजि - झिसी मेदुनू माझी आ रासू तीनू भीजल। झटपट रासू के एइ नाओ पर उतारि, फुसुर फुसुर गारि सन पढ़ैत माझीदुनू अपन नाओ के ठेलि मुह घुमबैत लग्गा धेलक। पद्मा नदीक चिरन्तन रीतिक अनुसार कुबेर पुछलकै - कोन गाम सँ एलहो माझी, जेबहो कोन गाम ?

जवाब देबाक रीतिओ चिरन्तन। ओ सभ सक्रोध बाजल— सुलपी सँ, मेला जेबै।

ओकरा लोकनिक तामसक कारण सहजे बुझल जा सकैछ। सुलपी सँ सोझे मेला जेबाक बदला रासू के एइठाम पहुँचैबा लेल ओकरा लोकनि के पद्मा पार कए पड़ल छलै। बदला मे रासू बुते देल जे किछुओ पार नजि लगलै सेहो बात स्पष्ट। किन्तु ओकरा लोकनिक ई क्रोध केवल क्रोधेटा, एकर कोनो परिणामक सम्भावना नजि। रासू जकाँ दुरवस्था मे पड़ि फेर केओ जखन पद्मा पार कऽ देबै लेल कहतै, एहिना तमसाइयो कऽ बिना कोनो प्रत्याशाक भरती नाओ लेने ई सभ तीन कोस अतिरिक्त लग्गा भाँजत, मना नजि कऽ पाओत। ई कोनो विशेष बात नजि, परोपकारो नजि, ई भेल रीति, अपरिहार्य नियम। अचरजक विषय ई जे एइ नियमक पालन केनाइ आ फेर तमसा केनाइ सेहो अनियम नजि।

नाओ पर आबि रासू किछुखन जड़वत ठढ़ भेल रहल। तकर बाद कुबेर केँ पँजिया गदगद कण्ठे बाजल — हम आबि गेलिअ हओ कुबेर भैया।

केना एलही रे रासू ?

कहै छिअ भैया, सभ कहै छिअ। पहिले तोरा आर के नीमन जकाँ देखिली, कते दिन बाद घुरलीहए।

कुबेर ओ गणेश के ओकरा आँखि मे नोर देखाइ पड़लै। धनंजय पड़ल छल पाछु दिस। ओकर उपस्थिति मे रासू आबि कुबेर के आह्लादक संग पँजिऔने छलै से देखि ओकरा इर्षा आ असंतोष भेलै। ओना रासूक आविर्भावक उत्तेजना ओकरो थोड़ नजि छलै, किन्तु तकरा नुकबैत ओ शान्त आ उदास भावें बाजल— बैस रे रासू, बैस।

कुबेर के छोड़ि रासू छावनीक नीचा अधभीजल तखता पर जा बैसल। उनटे हाथे आँखिक नोर पोछि अपन पहिरन जीर्ण बसन मे हाथ पोछलक। ओकर शीर्ण

कंकालवत देह दिस तीन जोड़ा आँखि टकटकी लगओने छलै। आइ सँ तीन साल पहिने जखन ओ होसेन मियाँक संग सपरिवार मयना द्वीपक यात्रा केने छल, तखनो ओ ओ खूब हृष्ट-पुष्ट छल से बात नजि, किन्तु एना टुटलो नजि छल ओ। ओकर माथक पैघ-पैघ केश जटा मे परिणत भऽ गेल छइ, सौँसेदेह भरलदाग, कैकटा घाओ घावो नीक जकाँ सुखैल नजि छइ। पैर दुनू, ठेहन सँ घुड़ीधरि फुलल। देहक चांग जेना देह सँ फराक भऽ सुखाकऽ टौट आ कारी भऽ गेल, एखन वर्षा मे भीजि, भीजल जूताक चाम सन सिमसिमाह देखा पड़ै छइ। कनिजे पहिने ओते दूर सँ ओतक जोर हाक देबाक दम ओकरा कतए सँ एलै सोचि कुबेर अवाक भेल छल।

रासू जेना औंघाए लागल छल। धनंजय पुछलकै — मयनाद्वीपे सँ एलै रासू ?

है।

पड़ा कऽ ?

हँ, बैसाख मास।

बैसाख मास ? एते दिन कहाँ छलही ?

मोआखाली मे छलिऐ। बेहस्पति दिन एलिऐ सुलपी। कहबऽ ने कक्का, मय खेगहा कहबऽ। अखनी भूखे परान जाइहै। हो कुबेर भाइ, छऽ नजि कुच्छो?

तत्काल कौतुहल निवृत्तिक सम्भावना नजि देखि रासू के संग लऽ तीनू गाम पारि आएल। धनंजयक घर घुरि पहुँचबाक पूर्वहि रासूक आविर्भावक वार्ता सगरो महलटेली पसरि गेल छलै। किछुए काल मे धनंजयक ओसारा महलटेलीक छींड़ी छींड़ा, स्त्री-पुरुष सँ भरि गेलै। सभक आँखि मे अपार विस्मय। तीन गाम पहिने सभ जकरा मृत्युक मुह मे सोंपि देने छलै, तीनसाल सभ जकरा प्रायः जिवारि गेल छल, ओ फेर एलै कहाँ सँ ? रासूक मामा अस्सी बखक बूढ़ पीतम माजिओ नुन देह लेने लाठी टुक-टुक करैत आबि हाजिर। ओसाराक चट्टाई पर मोहकन जकाँ भेल बैसल रासू, एक समय परिचित एइ जनता दिस निश्चल भेल जे जहाँए ताकि देखैत छल। क्षीण दृष्टि पीतम माझी लग जा बड़ी कालधरि ओकरा निहारि रहलै। चिन्हलाक बाद भावावेग मे ओकर हाथक लाठी खसि गेली आ ओही तलमला कऽ भागिनक देहे पर खसल आ कानए लागल। कानए लागल ओ चीट लगने नजि, कानए लागल ओ ई बजैत जे रासू असगरे घुरल आ सभ कहाँ रहलै ?

माहि अनाहारक पीड़ा बर्दास्त नजि कऽ पाबि एक दिन रासू सपरिवार घर जाइ छल, दू मुट्ठी चाउर दऽ पीतम तकरा लाघव करैक कोनो चेष्टा नजि कएलक।

तैं ओकर ई कानब जे शोभा नजि दैत छइ, से बात नजि। ताहि दुर्दिन मे मामक स्वाभाविक उदासीनताक स्मृति रासूओ मन मे पोसि नजि रखने अइ। केवल ताहि दुर्दिनक स्मृति नजि, सभ किछु जेना ओ एतेकाल बिसरने छल, अपन दुख बेदनाक सर्वांगीण इतिहास। पीतमक कानब देखि-सुनि ओहो हठात् भोकारि पाड़ि कानए लागल - हम असगरे घुरलिए हओ मामा, सभ के गंगाक पानि मे भसा असगरे घुरि एलिए।

कनबाक बीचहु मे पीतम अकचका उठल। आ अकचकाइते पुछलकै - से की कहै छैं रे रासू, सभ खतम ?

रासू सहमति जनबैत बाजल - हैं मामा, सभ खतम। हमर अपन कहि आर केओ नजि। केओ नजि। एक स्त्री, दू पुत्र ओ एक कन्या, एक संग एइ चारु के लए ओ निरुद्देश यात्रा केने छल होसेन मियाँक जंगलाकीर्ण मयनाद्वीप उपनिवेशक, एक एक कऽ चार ओइ मृत्यु नगरी मे निरुद्देश भऽ गेलै। एहन गंभीर शोकाबह सम्बाद सँ केतपुरक मलहटेलीक निवासी सकल नर-नारी मूक भऽ गेल। अथच ई सम्बाद रासूक आकस्मिक आविर्भावो सन विस्मयकर नजि। ई सभ जनिते छल। समुद्रक बीच जाइ द्वीप मे सृष्टिक आरम्भहि सँ लोकक बास नजि, ओतए गेने ककरो बाँचैक उपाय छैक ? जहिया रासू सभ मयनाद्वीप कऽ विदा भेल तहिए सभ केओ निश्चित जनै छल जे ओ सभ मरै लेल जाइए। रासू जे जीवित अवस्था मे घुरि आएल, अचरजक बात तऽ सैह, तेहन अचरज जे रासू के सामने देखितो जेना विश्वासे ने होइ जे ओ सते घुरि आएलए।

धनंजयक स्त्री बुतिक माए एगो कलै कएल बासन मे कने घोर आनि कऽ देलकै। रासू एके साँस मे गट-गट कऽ पीबि गेल। समवेत जनता एतेकाल विशृंखल भेल छल, आस्ते आस्ते सभ एक एकटा सुविधाजनक जगह पाबि बैसि रहने रासू के घेरि एगो सुन्दर शृंखलाबद्ध सभाक रूप लेलक। तकर बाद एकटा पर एकटा प्रश्न। जवाब मे कहल गेल रासूक प्रत्येक बातके सभ बेस आग्रहक संग हजम करैत रहल।

पीतम सिहरैत पुछलकै - मयनाद्वीप मे बाघो- सिंह छइ ने रे रासू ?

छइ माने ? भरल छइ।

कहि कऽ सभक मृदु सिहरन लक्ष्य करैत अर्द्धमृत अवस्थाओ मे गर्वक उत्तेजना रासू के जेना नवजीवन दान देने होइ, असोथकित भेल टुटल झुकल बैसल रहबाक बदला हठात् से सोझ भऽ गेल। बाजल - बाघ-सिंह! बाघ

मिहक पागे डेरा गेलह ? की नजि छइ मयनाद्वीप मे। साँप जे छइ, एक एकटा सीप जामनी के गोड़ि जेतै। राइत मे समुद्रक गोहि उपर आबि लोक के खींचि कऽ लऽ जाइ छइ।

हैं, बजैत-बजैत रासूक मुह खुजि जाइ छइ आ सुनैत-सुनैत 'हा' भेल रहैछ जेना सीप लोकनिक मुह। होसेन मियाँक मयनाद्वीप एहन भयाओन जगह छइ।

जे सभ रथक मेला गेल छल, एक-एक कऽ ओ सभ घुरि रहल छल। साँझक समय मलहटेलीक अडने अडने आजुक साँझ उतरैछ आनन्दक संग। सधबा जोगण सभ ताल तीन पढ़िया साड़ी उनटा पुनटा कऽ देखैछ, नव-नव काचक कुल्हासीक देखि मुग्ध होइछ, काठ ओ मोती-माला यत्नक संग पौती मे सजा करि लैछ। तेना-भुटका सभ पिपही बजबैछ आ माटिक पुतरा-पुतरी सँ खेला करैछ। आहनाद बहनकारी ई तुच्छ वस्तुओ जाइ खोपड़ी मे नजि अबैछ, ताइठाम जे विवाद परागल रहैछ तेहनो बात नजि, कोनो ने कोनो रूप मे सोनाखाली मेलाक आनन्दक देत जातो पहुँचते छइ। एगो कटहर, दू टा अनारस, आध सेर बतासा एकरा सभक उपनिवेशक जे दरिद्रतमो परिवार, केवल नून आ अदृष्ट के ठकि पकड़ल पोती माछक तेलहि मे तरल पोती माछ संग दिन पर दिन अधपेट भात खात रहैछ, ओकरा सभ के खुसी हेबाक लेल आर बेसी की चाही ? कुबेरक पोतपोती बुढ़का सिधू दास एक पैसाक सम्बल लऽ मेला गेल छल। पैसा ओ जेना नजि कल्पक किन्तु मेला सँ जे विपुल सम्पति संग्रह केने आएलए ताइ सँ ओकर पैप पोतवार मे उत्सवक शेष नजि। सिधू भीख नजि मडलकए, बस परि लायि गेलै। दिन भरि मेला मे घुरि जेना-तेना संग्रह कऽ लेलक। संग्रह केलक केवल एकरा विगत पञ्जुली आम, एकटा पधिलल साँस खजबा कटहर, सेर तीनेक पिकलेन जाउरानि आ एगो खस्सीक माथा (मुड़ा)। गरीबक उत्सव लेल आर नजि लाली ? गडनीक छइ तैं की फेकबाक वस्तु भेलै! सीरा एक तरहें कही तऽ ओ कोनो केनकए, किन्तु ताइ सँ की ? भीख सिधू ककरो सँ नजि मडलक, पाइ की ककरी नजि घोरीलकै।

कुबेरक ओसारा लग ठाढ़ भऽ सिधू बाजल- हमरा बिनु लेनहि घुरि अएलें मुबेर ?

कुबेर ओसारा पर टिबरीक इजोत मे एगो सहथक बरछी सभ परीक्षा करैत छल, मुबेर बिनु उठोनाह बाजल - तों तऽ हीरूका कऽ नाओ सँ पहिने घुरि एलह।

सिधू ओसारा पर उठि जाइछ। से अएलिए कुबेर, से अएलिए। ठट्टा केने जामनी - से नजि बुझलिही ? सहथ बेस अनलैं। कते लेलकौ ?

आठ आना।

आठदस हाथ नम्मा सोझ पातर बाँस मे दस बारहटा लोहाक बरछी लगौल माछ मारबाक औजार के गंभीरताक संग सिधु ओ परीक्षा करैछ। डाँट दिस भऽ अन्हार ओसारा पर, फेकबाक अभिनय करैत बाजल - ओजन कम नजि छइ, जीति गेलैं कुबेर। कालि-परसूधरि हमहूँ एगो कीनि आनब।

सिधूक मतलब की छइ से ठीक सँ नजि बुझि पबैए कुबेर। सहथ के ओ घरक एक कोना मे ठाढ़ कऽ कऽ राखि अबैछ। बेर मे वर्षा बन्न भेने गुमकी धेलकै। आकाश मे एखन बेसी मेघ नजि, किन्तु कखन जे मेघ करिया जेतै आ मुसलाधार बरिसऽ लगतै से नजि कहल जा सकैछ। रासू के पीतम अपना आङन लेने गेलैं। भऽ सकैए एखन फेर ओकरा घेरि सभा बैसल होइ, अपन निर्वासनक कथा कहि रासू सभ केँ मुग्ध केने हैत। जोरक भूख नजि लागल रहने भऽ सकैए कुबेरो ओइठाम जा बैसैत। पीसी हंडी मे भात रन्है छलै। रासूक रोमांचक गपक लोभ रहितो बिनु खेने कतौ जेबाक खेमाता ओकरा नजि।

सिधू बैसल बैसल अर-दर बजैत रहैए। बात मे कोनो सामंजस्य नजि, अनिर्दिष्ट अवान्तर विषय बात। कुबेर बिनु बुझनहिँ हूँ-हाँ करैत जाइछ।

पेट मे भूख आ मन मे पीतम माझीक आङन जेबाक इच्छा, बुढ़बा सिधूक बकबक सुनैत-सुनैत ओ अकच्छ भऽ जाइए।

शेष मे सिधू जेना प्रसंगेक क्रम मे बजैछ - खस्सीक एगो सीरा अनलिये कुबेर, विराट सीरा - भैसक माथ नाहित दू गो सिंघ।

कते मे देलकऽ ?

मेला उसरबाक समय छलै, सस्तेदेल्कै। पहिने तऽ पूरे पाँच आना मडैत छल, अन्त मे चौदह पैसा मे देलक। छौड़ी के रान्है लागी कहलिये तऽ कहलक जे बलू तेल मरिच नजि छइ, चाउरो ने कि शेष।

सिधूक बात सुनबाक समस्त आग्रह जेना कुबेर के हेरा गेलै। ओ पीसी के पुछलकै - भात भेलौ पीसी ? ओ एकदम सँ पाछू घूरि बैसल।

कनेकाल अपेक्षा कऽ सिधू उठि गेल। बाँसक एक टोकरी मे राखल सीरा आनि कुबेरक सामने रखैत बाजल - देख कुबेर फुसि नजि ने कहलियौ। घेंट लग बेस माउस छलै, हे देखही - टोकरी लग मुह लऽ जा ठेकना-ठेकना गुदगर जगह ओ कुबेर के देखबैछ। करुण दृष्टिजे कुबेरक मुह दिस तकैत बजैछ - तेल मरिच दऽ कऽ जे बेंजन बनतै - अमरित। अमिनुद्दी सँ पियाजु लहसुन माडि आनि

तऽ हमरा किए देखबै छऽ ? रान्हऽ गऽ ने बेंजन।

पियाजु पड़बै साफ-साफ बाजल - तेल मरिच आ दू मुठ्ठी चाउर दऽ दे कुबेर। तीरी ऐबी बेंजन।

कुबेर संदेह करैत बाजल - ठीक देबऽ ने ?

सिधू आहत सन होइत बाजल - देबौ नजि ? से की कहै छैं कुबेर ? तीरी नजि ऐबी तऽ जेब कहौ ?

तेल भराल्ला आ चाउर लऽ सिधू उठि गेल। सोइरि सँ माला बाजलि-पी बज्जात मे अइ ई बुढ़बा। सीराक भाग ने आर किछु देतै - देखैत रहौ।

कुबेर तय्यार होइत बाजल - नजि देतै तऽ नजि देतै। एके माघे तऽ जाइ तऽ ने जाइ छइ, पार कहियो एने डेडा कऽ बिदा कऽ देबै। हमरा लग चलाकी कऽ काँ बित कहीं ?

भात बतरलाक बाद तपते मार-भात, तरल हिलसा माछ ओ मिरचाइ सन लाल जीभ भेल तरकारीक संग पले मे कुबेर अपन पेट भरि लेलक। कने काल बाद एगो जेना तऽ सिधूक अङना सँ सीराक तरकारी आनै लेल गोपी के कहैत लौ बढना सँ बहरा गेल।

पीतम माझीक घर मलहटेलीक एक दम उत्तर सीमा पर। बड़दधराक भीतरे बऽ बाबुन जेबाक रस्ता। बड़दधरा मे एकदिस बान्हल दू गोटा लटल गाय आ सीरा मिस गखल ओकर प्रसिद्ध बड़का जाल। एते पैघ जाल केतुपुर मे आर नकरी लग नजि छइ। घर मे ओसाराक झमेला नजि, बड़दधरा पार कऽ दुकए होइत पैघ पकय घर मे। दू कातक छोट-छोट दुनू घर मे जेबाक बाट सेहो एही जगह मे। जेजुपी ओ भेराजाल सन घर बनेबाक ई अदभुत ढंगो कम प्रसिद्ध नजि पीतम माझीक। लोक भाम देने छइ कैदखाना। घरक पाछौ थोड़े खाली जगह, एक काट एगो डबरा। डबराक ओइकात बाँसबनक बाद बस्ती नजि छइ, बहुत तऽ छति विपुल भानक खेत, अषाढ़क आरम्भे मे आधा सँ बेसी पानि मे डूबल। जेजुपन मे मलहटेलीक प्रायः सभक परिचित एक जोड़ा पाँचफूट नम्मा गहुमन पाणि बाध करैछ। डबरा मे रहैछ कएकटा सनगोहि।

बड़दधरा घर मे ठीके सभा लागल छलै। कुबेर घर दुकिते अवाक भऽ देखलक जे सनगोहि गम नजि, होसेन मियाँ। पीतमक काठक सन्दुकक उपर केथरी ओछा होसेन के बैसक देल गेल छइ। भीड़ मे एकदम सँ मिझरा गेल अइ रासू। सभक कि कएकटा ओषण अस्वास्तिक भाव, सभ के सभ तरे आँखिए होसेन मियाँ

दिस तकैत। घरक रुद्ध बसात एते लोकक निसास सँ दुषित भऽ गेल अइ। एमहर ओमहर ताकि कुबेर सुट दऽ सभक पाछु जा बैसि रहैछ। होसेन मियाँ एठाम केना आएल ? एते लोकक सामने जखन रासूक संग ओकरा मुहा-मुही भइए गेलै तखन देखा चाही जे की काण्ड होइए।

कुबेर विषाद बोध करैछ। आह, एते पैघ एकगोट दूढ़, कर्मठ, शक्तिशाली जिद्दी, सम्मानक आकांक्षी लोक, भाग्यदोषें आइ जबद भऽ गेल। रासू ओकरा एकदमे सँ देखार कऽ देलकै सभक सामने। जे लोक एते प्रतिष्ठा अर्जित कएने छल, आइ लगैए ओकर बकारे जेना बन्न भऽ गेल होइ। सोझा-सोझी ओकरा अपमान करबाक साहस भरिसक ककरो नजि हैतै, किन्तु कौशल सँ, एतेकाल जानि ने नाना तरहें कते लज्जित केने हैतै सभ मिलि। कुबेर ममता बोध करैत जे से सोचैत रहैए। सम्भव भेने आइ ओ होसेन मियाँक पच्छे लित। लोभ देखा कऽ, फुसि आश्वास दऽ कऽ जे होसेन मियाँ रासूक स्त्री-पुत्र के सुदूर मयनाद्वीप तऽ जा कऽ हत्या केलक, ओकर एइ कीर्ति के कोन युक्ति ओ समर्थन करैत-कुबेर से नजि जनैए। ओ जकरा सँ डेराइए तकर माथ एते लोकक सामने हेर भेने ओ मने मन कष्ट पबैत छल। अन्ध आवेगक संग ओकरा मन होइ छलै जे पंगु असहाय जीव सभक लेल शक्ति के लज्जित केनाइ नीक बात नजि — मनुक्खक धर्मविरुद्ध ई आचरण।

कुबेर ई बात जनैए जे होसेन मियाँक पंचैती कऽ ओकरा दण्ड देबाक कल्पनो मलहटेलीक ई समवेत मातबर सभ नजि कऽ सकैए। तैयो ई समूह आइ पंचक भाव भंगि ग्रहण केने अइ। केना स्पष्टतः होसेन मियाँक अपमान करैत छइ एकरा लोकनिक बैसबाक ढंग, देखबाक ढंग, चुप रहबाक ढंग।

बिचलित ओ उतेजित भऽ एमहर-ओमहर तकैत कुबेर देखलक जे जहर, अमिनुद्दी एवम् आर दू गो मुसलमान माझी अत्यन्त गम्भीर भेल एक कात बैसल अइ। कहबा लेल इएह सभ केतुपुरक मुसलमान माझी समाज, आर दू-चारि गोटे जे अछियो से नामे लेल। एकरा लोकनिक संख्या पाँच— छओ घर सँ बेसी नजि। मलहटेलीक पुबारिकात एकरा लोकनिक एकत्र घेधिऐल घर-आडनक टाटी फड़की देखि सहजे चिन्हल जा सकैछ। जते किए ने जोर्ण भऽ जाउक, फटलाही बोरा आ सुपारी गाछक पात सँ मरम्पति कऽ कऽ टाट फड़क के ई सभ सोझ कएने रहत। अथच खूब कठोर भावें जे पर्दाप्रथा के मानि चलैए सेहो नजि कहल जा सकैछ। स्त्रीगण के बाहर नजि गेने चलनिहार नजि। नदी सँ पानि आनै लेल जाए पड़ैत, पुरुषपात गाम पर नजि रहने दोकान सँ सौदा आनै लेल जाए पड़ैत छइ, घरक

सबूत पड़ैत। सजमनि कदीमा फड़ने, मुर्गीक अण्डा पाड़ने गाम मे जा बेचि कबज पड़ैत छइ। टाट-फड़क पर्दा करै छइ केबल आडनक आ कमबयसी बेटी जे लोक से गेहन केओ हो। ई सभ आ महलटेलीक अमुसलमान अधिवासी लोक सदाभावक संग रहैछ। धर्म जते किए ने पृथक होउक, एकरा लोकनिक दिनचर्या मे कते पारोप्य नजि। ई लोकनि समान भावें धर्म सँ पैघ एक अधर्मक पालन करैत — हागिदयक। विवाद जँ कखनो बझितो छइ तऽ से सम्पूर्ण व्यक्तिगत, मेलो जे जाइ छइ कानि मे। कुबेरक संग सिधूक जाइ कारणे विवाद होइ छइ, कुबेर ओ अमिनुद्दीक विवादो होइ छइ ताही कारणे। कने गारा-गारी ओ हाथा-हाथी भऽ कानि जाइ छइ।

मायामता प्रायः जहर माझिए करैछ। कहैछ — कुबेर भाइ जाएदहो। अरे ओ अमिनुद्दी, गहल जो। बच्चा लोग के नाहित झगगर करे लागोहै, तोरे शरम मे ती।

कुबेर लक्ष्य करैत आश्चर्यित भेल जे इएह अमिनुद्दी आइ एक विशिष्ट व्यक्ति भऽ गेलए। ओ होसेन मियाँ दिस नजि, ताकि देखैए अमिनुद्दी के। लोकनिक अत्यन्त सेहो अत्यन्त सुस्पष्ट। जहरक मध्यस्थता मे अनेक बेर एकरा गणनाइ मने मन अमिनुद्दीक उपर ओकर राग छलैक। नजरि मिलते ओ मुँह भंग लैछ।

सभ चुपचाप बैसल, जेना ककरो मुह मे बकारे ने होइ। हठात् जानि ने की कुबेर लोग मियाँ कुबेर के सम्बोधित करैत बाजल — पाछौं किए बैसलऽ कुबेर गार ? सामने आवऽ ने। खाना पीना भेलै की नजि ?

कुबेर जतना बड़ उल्लास बोध कएलक। ओ अगुआ कऽ सभक सामने जा बैसित बाजल — भेलै मियाँ भाइ भऽ गेलै।

बाबा तामें अपन ललौनदाढ़ी हँसोथैत होसेन मियाँ बाजल— गणेश के नजि कते भरी, कती गेल ?

मला ने। मेला सँ घुरतीकाल मझिला बाबू बजा कऽ कहले रहथिन, गामे बसि गेने गणेश ? माछ लेने जो, आडन मे दऽ दियही। ई कहि ओ एक डाली चुनना माछ दलथिन। भऽ सकैए माछे दै लेल ओ बाबूक आडन गेल हो।

मझिला बाबू अर्थात् मझिल जमिंदार। नाम अनन्त तालुकदार। केतुपुरक जमिंदार छनि। महलटेलीक जे केओ दू-एक बिघा जमीन रखने अइ, मझिले कऽ के नामान दै छनि। मझिल बाबूक नामक चर्च होइते सभ के सभ मनोयोग से कियेक बात गुलक। होसेन मियाँ पुछलकै — मझिला बाबू कहिया अएला ?

बिहस्पति दिन।

हीरू माझी आँख मिलमिलबैत बाजल— देखै छी मझिला बाबूक सभ खबरिए रखैए कुबेर। भुवन साहाक संग मामिलाक की भेलै कह तऽ ?

बाबू के हाँस चरक दखली भेटि गेलनि। सुनलिये जे भुवन साक नायेब के ने कि जहल भऽ गेलै कका। साँइथिक कुंज गोसाँइ गबाही देलकै, ओ ने कि अपने आँखिए नायेब के बाबूक कचहरी मे आगि लगबैत देखने छलै।

पीतम बाजल — हूँ। तों केना जनलै ?

कुबेर सगर्व बाजल — से की पुछै छऽ मामा ? हमरा सँ कोनो बात छिपल छइ। शीतल बाबूक ओइठाम सुनलिये।

शीतलक नाम सुनिते पीतम चुप भऽ गेल। नकुल शैतानी करैत पुछलकै — शीतल बाबू! ओ तोरा भेटलथुन कहाँ कुबेर ?

कुबेर बिहुँसैत बाजल— नकुल भाइ, जेना दुधमुहे होअ, कुच्छे ने जनै छहक। शीतल बाबू लग हमर पाइ बाँकी अइ। कालिए राति अपन युगीक ओइठाम तगादा मे गेल छलिये। पाइ देबाक इच्छा डकूबा के नजि छइ। बेस खातिर करैत कहलक — बैस रे कुबेर, चिलम पी। चिलम पिबैत भरि देशक गप-शप होइत रहलै। कहने तऽ खिसिया जेबऽ नकुल भाइ। शीतल बाबू बजैत रहै जे मझिला बाबू ने कि कर्ज उधार मे डूबल छइ।

बुढ़बा पीतम माझी कछमछ करैत छल। नकुल तैयो शैतानी करैत बाजल — युगीक ने कि बच्चा होनहारी छइ रे कुबेर ?

कुबेर कहलकै — पता नजि। देह कने चिकनैल देखलिये।

अजीब एकरा लोकनिक रसिकता! युगी पीतम माझीक बेटी छइ। एखन मलहटोलीक एक कात मे एगो घर बान्हि माझिल बाबूक मोहरिर शीतल घोषक संग रहै छइ। एते लोकक बीच पीतम माझीक सोझे मे ओकर बेटीक मादे अनायासे नकुल जे रसिकता करैछ, सभ केओ हँसैत तकर उपभोगो करैछ, बिना कोनो बाधा ओ दुबिधाक।

पीतम पिते कपैत कहलकै निकल, निकल तों हमरा घर सँ नकुलबा, दूर हो।

नकुल बिहुँसैत बाजल — तमसाइ किए छऽ मामा ? जवाब नजि देल होइ छऽ ? मझिला बाबू कुबेर के एते खातिर किए करै छइ पुछहक ने! कुबेरक बेटा एहन गोर नार केना भेलैए से पुछहक।

30 / पद्मानदीक माझी

कुबेर मुक्का तानि कहै छइ — मारि देबौ नकुलबा, खून कऽ देबौ तोरा हम।

भुझि पड़ैछ जेना सभाक चेहरे बदलि गेल होइ। रासू ओ होसेन मियाँ के तऽ काऽ सभा मे जे असन्तोष ओ प्रतिवादक भाव आएल छलै प्रसंगान्तर भेलाक कारण से एखन बिला गेलै। ओइ मादे जेना आर ककरो किछु बजबाक वा सोचबाक भाव होइ। होसेन मियाँ उठि कऽ ठाढ़ होइए।

बिहान एक बेर हमरा ओइठौं जइहँ रासू भाइ। पाइ-कौड़ी किछु पओना होइ, तऽ तऽ कऽ फारकती हैब। मयनाद्वीपक जमीन नजि लेने जंगल झाड़ काटैक मजदूरी दै छिये हम, खेनाइ आ लत्ता कपड़ा फराक। बिहान जइहँ। होसेन मियाँ अपन लालकी दाढ़ीक दोग सँ बिहुँसैए, बजैछ — सोचैत हेबै जे होसेन मियाँ ठकहारा भइ। तोरा ठकने होसेन मियाँ के कोन फेदा। कोन साला के जबरदस्ती मयनाद्वीप पर गलिआइए ? अपना मने गेल छलै — झूठ कहै छिऔ ? घुरि ऐबाक छलौ तऽ बनली ने किए ? साथे लेले अबितियौ।

रासू माथ झुकओने सुनैत रहैए। अमिनुद्दी पुछलकै — चललऽ ने की मियाँ भाइ ?

है।

तऽ सुनि राखऽ, हम मयनाद्वीप नजि जेबऽ से कह देलिअ।

होसेन मियाँ ओहिना बिहुँसैए।

तोरा जाइ लागी कहाँ कहलियौ अमिनुद्दी। मन ने होइ हौ तऽ काहे जेवें?

पातरकी कपड़ाक पंजाबी घामे भिजि गेने होसेन मियाँक छातीक सघन लीमलाजि झकझक करैछ। ओइपर हाथ फेरैत ओ फेर बाजल — जानौ सँ बेसी तोरा सभ के मानै छियौ, आइ एइ दिलपर तेहन चोटदेलै। कुबेर भाइ, जेबऽ ने की परे ?

कुबेर राजी होइत उठि आएल। दुनू बड़धरा होइत बाटपर आबि गेल। आकाश सभन मेघ सँ भरि गेल छलै। दुर्भेद्य अन्हार मे महलटोलीक बाट पैरक लागी मे जेना अदृश्य भेल। खूब सावधानी सँ पैर बढ़बैत अगुआए पड़ैत छलै। जेना जेना पोरवार नजि रहने, घरक कात-करोट दने टेढ़-मेढ़ बाट ओ सभ खोजियो न जेबैत। कुबेरक धरक लग आबि आकाशक जमाओल मेघ हठात् गलि गेने पल खातिर ओ सभ भिजि गेल। कुबेरक संगहि होसेन मियाँ हाजिर भेल ओकर टुटली गइया मे।

ओसारा पर झटुक अबै छलै तें होसेन मियाँ के घरे मे बैसाबए पड़लै। कुबेरक दुनू ननकिड़बा - लखा ओ चण्डी सुति रहल छलै, जागल छलै गोपी। चटाइपर जमि कें बैसैत होसेन मियाँ ओकरा दुलार सँ लग बजा बाजल - बीबीजान बड़ पियास लागल अइ कने पानी नजि आनब ? गोपी एक लोटा पानि आनि देलकै। होसेन लोटा उपर कऽ पानि पीबि लोटा एक कात मे राखिदेलक। घरक चार सँ जे पानिकं धार चुबै छलै से आँजुर मे भरि लोटा अखारि शुद्ध कऽ लेलक गोपी।

राति बढ़ले जाइ छलै, मुदा बरसा थम्हैक कोनो लक्षण नजि। पीसी ठेकीवला घर मे जा फटुक लगा सुति रहैछ। भाइ सभ लग सुतल गोपीक नित्रे दुनू आँखि मुना जाइ छइ। थाकल-ठेहिआएल कुबेर हफिआइए। बाहर होइत रहै छइ अविрам बरसा। कनेकाल बरसा हेबाक पश्चात घरक झड़ल कोनटा सँ पानि भीतर आएब आरम्भ होइछ। होसेन ताकि कऽ देखलक आ मने-मन कालि कुबेर के घर छारै लेल खढ़ देबाक बात बाजल। कुबेर एक बेर उठि मालाक अवस्था देखि आएल। बेस यत्न सँ कुबेर ओकर सोइरिक चारुकात टाटक समस्त भुर बन्न केने छल, ओसाराक एक दिस भासियो गेने जाइ सँ सोइरि मे पानिक झटुक नजि पड़ै। ओछैनक नीचाक माटि केवल सिमसिमाह, जकर कोनो प्रतिकार केनाइ कुबेरक साध्य सँ बाहर छलै। आर किछु दिनक बाद माला एइठाम सँ मुक्ति पाओत। ओकर छाती-पीठ मे जे थोड़-बहुत दर्द छइ से एइठाम रहैक कारणे बढ़ि नजि गेने रच्छ।

माला डेराइते बजैए - हमरा दू मुठ्ठी मुरही-चूड़ा देतै ?

किए, भात नजि खेलकैए?

खेलिअइए, भात घटि गेलै, पेट नजि भरलै। एखन भुखे पेट मे ताप दैए।

इहो फिरीसान फिरीसान कऽ देलकै। बाजि कुबेर कलसी ताकि पीसीक अपना लेल नुकाओल चूड़ा मे सँ थोड़े आनि माला के देलकै। उठि कऽ बैसि अन्हारे मे मुँह मे चूड़ा दऽ माला पुछलकै - होसेन मियाँ के खाइ लेल नजि दैत ? की देबै ?

मेला सँ आम अनने छलै ने ? सैह दौक, की करतै ! भूख सँ तऽ लोक खून भऽ जाइ छइ।

कुबेर के हठात् मन पड़ि जाइ छइ। सोचलक सिधूक आडन सँ जे माउस भेटलैए ताही सँ अतिथिक सत्कार केने बेजाय की। मुसलमान लोक, माउस बैगी पसिन्न करत। किन्तु तुरते कुबेरक ई उत्साह जेना सेरा जाइ। एहनो एक दिन छलै 32 / पद्मानदीक माझी

बतिवा सीराक तीमन पेने होसेन मियाँ धन्न भऽ जाइत, आइ जकर तकर रान्हल जा खबो करत की नजि, संदेह ! खाली खेनाइए किए, खाइ लेल कहनहु भऽ सकैछ की अपमान बोध करए। ताइ सँ आम जखन घर मे छइ तऽ सैह देब नीक।

घर जा कुबेर जेना अवाक भऽ गेल। चटाइ पर चित भेल पड़ल होसेन मियाँ पोंफ कटैत छल। ओ आस्ते सँ बाजल मियाँ भाइ ! जवाब नजि पाबि गोपी के ठेलि कऽ उठौलक।

सिधूक आडन सँ तीमन अनने छलही गोपी ?

नित्रे मे अधमरु सन गोपी कहलकै, उँ हैं।

ई हू माने ? आनै लेल कहि गेल रहियौ ने हरामजादी ?

कुबेर तेना ने ओकर पाँखुर धऽ झिकझोरलकै से ओ चौकि कऽ उठि बैसल। कहलकै - आनै लेल तऽ गेल रहलिए बाउ, नजि देलकै। कहलकै जे बिलाड़ि ने कि मगदा खा गेलै।

बिलाड़ि खा गेलै कहलकौ ?

गोपी सहमति जनौलकै। कुबेर तामसे लाल होइत बाजल - साला जोचवोर भात, बितने बिलाड़ि के खुअबै छिऔ, साला बज्जित।

हाथ छुरबाक संगहि गोपी ओंधरा गेल। निन्न ओकरा नोतले रहै छइ। घरक बाह कोन मे पानि पड़ैत छलै, कुबेर ओकरा ठेकना कऽ देखलक। पानि बहबै लेल बी पगी पातर सन पनिबट बना देने छलै। माटि गलि कऽ ओकरा प्रायः पानी बने छलै। पानि जमा भऽ घरक भीतर दिस बहुत दूरधरि अगुआ आएल छलै। बी हाथे सँ पनिबट साफ कऽ पानि बाहर दिस बहओलक। तकर बाद पानी गम्भीर समस्याक मादे सोचै लागल। ढिबरी मे तेल बेसी नजि छलै। कनिजे काल मे मिझा जेतै। होसेन मियाँ के जगा कऽ आम खेबाक अनुरोध करत की ? बरसाक कारणे ठण्डा लगै छलै। ओ आराम सँ सुतल छल। उठओने कहीं तमसा ने पाव।

नित्रे मे होसेन मियाँ करोट फेरलक। देखु, हठात् कुबेर की आविष्कार केलक। होसेन मियाँक नम्मा पंजाबीक जेबी सँ बहरैल अबैछ टाका पैसा रखबाक पगी नजि सन बैग। बैग ओ आइए मेला मे किनलकए ताइ मे संदेह नजि। सखे गवका बैग मे कते टाका पैसा रखने अइ होसेन मियाँ के जनैछ। बैग फुलि कऽ बस भीत भेल छइ।

कुबेरक देह मे थरथरी पैसि गेलै। एक मुठ्ठी टाका ओ रेजकी मे सँ एगो अठन्नी छोड़ि आर किछु लेबाक साहस नजि भेलै ओकरा। फेर ओ सोचैए जे एतेरास रेजकी की होसेन मियाँ गनि-गुथि कऽ रखने हैत ? ओ आर एगो चौअन्नी आ एगो एकन्नी बहार कऽ लैए।

बैग के होसेन मियाँक नम्मा पंजाबीक जेबी मे राखि फू दऽ ओ ढेबरी मिझा देलक। तखने एगो भयाओन घटना घटलै।

गोपी रुद्ध निश्वासे बजैए — बाउ!

कुबेरक देह सिहरि जाइ छइ।

— चुप रहै गोपी। सुति रहै।

— हमरा बिहान पाइ देबहक ?

देबौ, एखन चुपचाप सुति रह।

गोपी आर किछु ने बजैए। अन्हारे मे दू हाथक एगो छोटकी चटाइ बेस सावधानी सँ ओछा कऽ कुबेर सुति रहैए।



तीन

भोर सँ पहिने होसेनक निन्न टुटि गेलै। उएह आवाज दऽ कऽ कुबेर के जगजीवक। आँखि खोलिते कुबेरक मन मे अकारणे एगो डर सन्हिया गेलै। की भेलै। ई कौन आफन्द ? हैं राति मे ओ होसेन मियाँक पाइ चोरओने छल। एकबेर गोपीक मिलागना कुबेर आश्वस्त भेल। होसेन मियाँ के आदर करैत पुछलकै — चलली ते की मियाँ भाइ ? भूख तऽ खुबे लागल हैत — राति मे किछु खेबो ने बाली। एगो फाम करु ने, बरु दू गो आम खेने जाउ।

भोरि भोर निन्न सँ जगनहु होसेन मियाँ बेस नीक जकाँ हँसि सकैए।

खाना के बात छोड़ऽ कुबेर भाइ, घर जा कऽ खाना पीना हैतै ने।

एगो प्रकाण्ड हाफी करैत बीड़ी धरा होसेन मियाँ उठि कऽ ठाढ़ भेल। सुतल जग मियाँक नजरि देखि पुछलकै — लड़की के की उमेर भेलै कुबेर भाइ ?

गोपी साल हैतै भरिसक।

गादी नजि देबहक ?

तबै ने। आस्ते-आस्ते ने हैतै।

होसेन जेबी सँ बैग बहार कऽ कऽ खोललक। देखिते तऽ कुबेरक मुह सुखा गेलै। किन्तु नजि, टाका-पैसा गनि कऽ देखै लेल बैग नजि बहार केने छल होसेन। एगो नीजनी बालि ओ कुबेरक हाथ मे दैत कहलकै — बच्चा सभके कुच्छे खरीद

दियहक। कहि कऽ बैग ओ फेर अपन जेबी मे राखि लेलक। कुबेर निसास छोड़लक। जे आफद एबे ने केलै ताइ लेल किए ओकर छाती धड़कतै, मुह सुखेतै ? खुसी सँ बेसम्हार भऽ ओ पुछिए बैसल — बैग नवे लगैहै, मेला मे किनली ने की कालि ?

होसेन कहलकै — हैं।

बा-चीत करैत दुनू बाहर आबि ठाढ़ भेल। एखन बरसा नबि होइ छलै; किन्तु मेघौन रहबाक कारणे भोरक चेहरा अस्वाभाविक ठमकल सन लगै छलै। होसेन एकबेर माथ उठा आकाश दिस तकलक। बाजल इया अल्ला, नमरल असमान के नीचा पिरथी केतना असहाय लागैए। भीजल तितल कातर सन रूप। होसेनक मनक कोन मे एक स्वाभाविक कवि छलै, जीवनक भिन्न अवस्था मे रहने भऽ सकैए ओ किछु गीतक रचना करैत। ताइ मे सँ दू एकटा मुहे-मुह प्रचारित भऽ स्थान पबितै शताब्दीक संचित ग्राम्यगीतक अमर अलिखित काव्य मे। बाट-घाट, मसालक आलोक मे आलोकित आडन घरक गीत, भनिता मे होसेनक नाम — दूर दूरान्तर धरि पसरि जाइत, लोक कहितै होसेन फकीर, चल केतुपुर, देवान फकीर होसेन साहेबक दरगा पर दीप लेसि आबी। होसेन जेना कुबेर के निठाहे बिसरि जाइए। बहुत दिन पहिने कुबेर जकाँ फाटल चिटल कपड़ा पहिरि अधपेटा खा, पानि-कादो मे जखन ओ दिन कटैत छल, साँझ सकाल तखन ओकरा मन मे गीतक पाँति सभ जेना हुलकी दैत रहै छलै। चुआठ चारक नीचा मैल चटाइ पर भूखल पेट तहिना राति काटि आइ फेर होसेनक मन मे गीत हुलकी दै छइ।

कुबेर भाइ, तोरा गीत बनबऽ अबै छऽ ?

नबि मियाँ भाइ। अपन जुगला के अबै छइ। मुहे मुह फटफट बना लैए।

हमरो अबैए।

साँचे मियाँ भाइ!

होसेन एखन लाजुक। ओ एमहर-ओमहर तकैए। दाढ़ी सहलबैत कुबेर लग अपराधी जकाँ बिहूँसैए। सत्ते, लोकक आदि अन्त पाएब कठिन।

तकर बाद होसेन बजैए — सुनबऽ ?

कुबेर बाजल — तऽ, कहियौ ने मियाँ भाइ। एक घड़ी चुप रहि होसेन सुर बान्हि आरम्भ केलक।

अमा निशा अकास जमीन अलग केने राख बन्धु कते सुतै छे

बामा बीबी दहिना बेटा अकाल फसिल बाज मियाँ कते सुतै छे
मानक पाते रातुक पानी भेलै रुपा हाँड़ी कने उठियो देखबे ने
छप्पर पर इजोत करै के जे चोरी-चोरी कोनो खबर रखबे ने
तोरे लागी अगम बाटे खेबैत चिराग नाओ एलै जे मन जगाबै मियाँ
पाल सुला कऽ नित्य — मेघक बन्धु कहाँ जाओ पुछै खाँचाक चिड़ैया
निन नै टुटए मन ने जागए विधिक सीना-सिर
समय बितल विदा हेबाक माझी तैयो थिर माझी कते सुतै छे
कुबेर अभिभूत होइत बाजल — मुहे-मुहे बनेलिए मियाँ भाइ।

खुसी नबि भेने उपाय की ? होसेन मियाँ आर नबि बिलमल। दुपहर एखन गामक चार लेल खढ़ आनै गेने कुबेर सुनलक, ओ विदेश गेलए। कतए गेल, तें कबजा पता नबि। किन्तु होसेन मियाँक बात कखनो अनट नबि होइ छइ। कुबेर तेज खढ़ ओ राखि गेल छल।

गोपीक बएस छइ एगारह। कुबेर ओइ मे एक वर्ष कमा कऽ आ एक वर्ष कमा मे राखि लोक के कहै छइ नओ। नओ वर्षक छौड़ीक जे एगारह वर्षक बाढ़ि, बिगारक बजार मे तकर दाम छइ। गणेशक सार जुगल एखन पड़ोसक गाम सँ गणेशक गाम खबरि लेबाक लाथे आएब जाएब शुरू केलकए। सोझा-सोझी ओ किछु नबि बजैए। गप-शपक बीच उनटा-पुनटा प्रश्न कऽ कऽ जानए चाहैए जे कुबेर की तर बजैछ। गप उठने बड़ीकाल धरि बेटीक प्रशंसा कीर्तन करैत कुबेर कहैत जायाया देलकैए दू कूड़ी तीन कूड़ी टकाक। बुद्धि रहने जुगल अंदाज केलक। गणेशक कुटुम्ब बुझि पाइ कौड़ीक मामिला मे ओकर खातिर नबि सने कुबेर। जुगल के सेहो भरिसक तकर आभास भेटि गेल छइ, तें हिलसा माछक भास मे होएबाक प्रतीक्षा मे अइ। हाथ मे कते पाइ जमै छइ से देखि बात सजोत। कुबेर की से बात नबि बुझै छइ ? सभक मनक बात ओ ओकर मुह शिब गले मे अंदाज कऽ लैछ।

लोक बेजाए नबि अइ जुगल। एतेदिन अवस्था खराप छलै, तें बत्तिस गामक बएस भरि बियाह नबि कऽ पओलक। एमहर अपने चेष्टा सँ ओ अवस्था सुगमलकए। उन्नतिक लेल ओकर प्रशंसनीय प्रयासक बात ककरो सँ नुकाएल गेल छल। दूय एकटा कऽ कते दिन सँ कते कष्ट कऽ ओ किछु टका जमओने छल। तकर बाद गणेशक संग बहिनिक बियाह दऽ तैस टका पओने छल। सभ

केओ सोचै छल जे एइबेर जुगल बियाह करत, बियाह लेल छोड़ि एते कष्ट सँ के टका जमबैए ? किन्तु जुगल से नजि केलक। समस्त जमा कएल टका सँ एगो पैघ नाओ कीनि ओ सभ के अवाक कऽ देने छलै। दू सए टकाक नाओ। तँ टका ओ कम नजि जमओने छल। चाहने ओ एइ टका सँ तीन-तीनटा बियाह कऽ सकै छल। अन्ततः एकटा बियाह कऽ बाँकी टका सँ एगो छोट-छीन नाओ कीनै मे कोनो बाधा नजि छलै। तकर बदला कमेबाक एइ स्थायी साधन लेल समस्त पूँजी लगा ओ जे सुबुद्धि ओ दूरदर्शिताक परिचय देने छल तकर तारिफ तऽ करहि पड़त। देखु, एके साल मे जुगलक लटकल घर नव भऽ गेलै, दुबरैल देह भरि गेलै, बियाहक लेल सेहो ओ टका पैसा जमओने अइ वा नजि से के कहत! जहाज घाटपर एते पैघ नाओक भाड़ा सहजे भऽ जाइ छइ। रेलगाड़ी सँ आ पैर जहाज घाट आबि कते लोक ओ माल कते गाम जाइछ। एक-एकटा बनीज वस्तुक समय मे कते महाजन गामे-गाम बेना देल माल संग्रह करै लेल चढ़ल दरे कतेको नाओ भाड़ा करैछ। आर खाली भाड़ाए तऽ नजि। उपरी आमदनिओ की कम ? धानक बोझाइ लऽ कऽ भरिदिनक बाट जाइत काल दस-बीस सेर धान नाओक चोरा खोधरि मे नुका रखबाक ढेर सुयोग रहै छइ। केवल धाने नजि, केराओ, मटर, हरदि, मिरचाइ आदि कते कि जिनिस भरिसाल जुगल एहिना कते अनैए। उन्नति आरो करत ओ। कारण अवस्था मे परिवर्तन भेनहु कोनो विषय मे लेसमात्रो शिथिलता ओकरा मे नजि एलैए। आइयो ओ पहिने सन कंजूस। डेली-खोडीक माझी समाज मे ओ एकटा मातबर लोक। एक दिन उएह जे गामक मोड़ल बनत ताइ मे ककरो संदेह नजि छइ।

माला चाहैए जे गोपीक बियाह जलदीए भऽ जाइ। एते बएस भेलै, आर कते दिन बएस चोरा कऽ बेटी के कुबेर घर मे बैसओने रहत ? लोक जे एही बीच कनफुसकी आरम्भ कऽ देने छइ। घरबला के माला तगादा दैत कहै छइ - सुनै छइ, जुगला कुच्छे बाजै नजि छइ ? कुबेर इशारा करैत कहै छइ - बाजै नजि छइ।

की बाजै हइ ?

से सभ सुनि ई की करतै। मौगी मेहर चुपचाप रहौ। बच्चा जनमाबै खातिर पिरथी पर एलैए, जते पार लगै जनमाबौ - चिन्ता किए करै छइ ?

माला के तामस होइ छइ।

मुह मे जेना लाबा फुटैत होइ — खाली देह मे आगि लेसैबला बात, सोइरि मे मतारी ने बलू मधु चटओने रहै ?

पित नजि चढ़ाबौ गोपीक मतारी से कहि दै छिए। मारि खेतै।

मारतै ने की ? अबौ मारौ, मारौ एकरा लखाक किरिया छइ जे नजि मारै।

कुबेर औंघाइत निद्रातुर नजरिए स्त्री दिस देखैछ। सते, टेल्ह कोरा मे रखने गुब्बार पातर ओकर बहु जेना राजरानी सन लगैत होइ। बच्चो तऽ गोरे भेलैए - बूझि पड़ैछ। एइ बएस मे लखा आर चण्डीक जेहन ताम सन रंग छलै तेहन नजि। गोइरि मे जते दिन छलै, कुबेर विश्वास नजि केने छल, एखन ओकर मन मे संदेह जगलैए जे छओड़ा तऽ ठीके गोर हतै। मालाक रंग कारी नजि छइ, लाली गोराइ, फखनो काल ओकरा बाबू लोकनिक घरक स्त्रीगण सन गोरे देखाइ छइ। पनाहलीक कोनो मौगीक देहक रंग एहन नजि छइ। ओकर एकटा पैर ठेहुन सँ नीचा टेढ़ बकुली नजि रहितै तऽ कुबेरक आडन ओ पैरक गरदो झाड़ै लेल नजि आबतै। किन्तु मालाओ सँ ढेर गोर छइ छओड़ा। आर कने पैघ भेने विवर्ण भऽ गत मे ओकरो रंग मालाएक रंग सन भऽ जेतै। सैह बरू होइ। कुबेर सैह चाहैए। ओ जते किए ने शान्त आ सुविवेचक हो, जखन-तखन लोकक अधलाह इंगित सँ ओ तऽ जरिते छइ। माला दिस तकैत कखनो काल धिन तऽ होइते छइ, एगो वितृष्णा भूत व्यथित क्रोध। कुबेरक नजरि जेना झलफला जाइ छइ। एखन साओनक गड पाहल सप्ताह मे अकाशक मेघ के पलोभरिक विश्राम नजि। लगातार कएक मात आधरल पानि मे भीजि कुबेर के फेर बोखार लगै छइ।

कते काल चुप्पी मे बीति गेल छलै, तैयो बन्द भेल आलोचना पुनः आरम्भ की लेल कोनो भूमिकाक प्रयोजन नजि भेलै। एखने झंझ-मंझ भऽ गेलैए ? के करत ? केहन शान्त ओ मोलाएम कुबेरक कण्ठ-स्वर।

साफ-साफ जुगल कुच्छे ने बोलै छइ गोपीक माय।

मालाक कण्ठ स्वर मे सेहो मिसियोभरि झाँस नजि।

नजि बोलै हइ ? किए ? गोपी पसिन्न नजि हइ।

गनेसिया बोलै छलै जे बलू पसिन छइ। जुगला अपने कुच्छे ने बोलै छइ। एक दिन हमरा पुछैत रहै - नाडड़क बेटी की नाडड़ होइ छइ ?

ई की कहलकै ?

हम कहलैए जे जुगला तौ केहन बुद्धि छै। नाडड़ कि कोनो रोग छइ जे मातारी के रहने बेटी के भऽ जेतै। हमर गोपीक चलनाइ तऽ इनरक परी सन छइ। जेना के गोपीक माय, गनेसिया हमरा एगो बात कहलकै। नकुलबा ने कि जुगला

के भाँड़े छइ। निमन-निमन लड़कीक खबरि दऽ अबै छइ। जुगला दू एक लड़की बिना देखने गोपी के बियाहतै ताइ मे संदेह बुझाइए।

एतबा बाजि कुबेर जेना सुति रहल हो। किन्तु माला ओकरा चिन्है छइ। ओ भरोसे रहैए।

सुनै छइ गोपी माए— आर एगो विरतान्त। रासू ने कि बजैए जे ओ गोपी सँ बियाह करत।

माला चौकल नजि। खाली बाजलि— चार चूल्हक उपाइए ने छइ।

बुझाइए कुबेर एइबेर सत्ते सुति रहल। कारण बड़ीकाल अपेक्षा केलाक बादो माला ओकर आर कोनो बात नजि सुनि पओलक। बैसल-बैसल ओ चिल्हका केदूध पिअबैत रहल। ओमहर भनसा दिस बैसि पीसी गोपीक माथक ढील तकैछ, भरि राति छौड़ी माथ नोचैत रहै छइ। लखा ओ चण्डी भरिसक गुल्ली डण्टा खेलाए गेलैए, अथवा कतौ बनसी पथने पोठी माछ पकड़ैत हैतै। ओ सभ जतऽ कतौ किए ने जाओ, जे किछु करओ पानि मे भिजने जर बोखार नजि हैतै, डुबिओ कऽ नजि मरतै। माला के तकर डर नजि छइ। ओकरा खाली एही बातक चिन्ता रहै छइ जे दुनू भाइ कतौ मारि-पीट कऽ कऽ खून ने भऽ जाइ। पंगु हेबाक कारणे बाहरक जगत सँ ओकर परिचय नहिजे सन छइ। केतुपुर सँ दस मील उत्तर चरडाडा गामक एहने एक टुटल भाडल खोपड़ी मे ओकर माइक कोनो एक बाभन ठाकुरक संग सम्बन्धक जे कनफुसकी चलल छलै, कहाँदन ताही पापक प्रमाण स्वरूप ई टुटल टाड लेने ओ जनमल छल। पैघ भेल आडनेक भीतर। लाठी पर भर दऽ नडड़ाइत पड़ोसक राम गोआरक बड़दधराक लगहि कदमगाछ धरि छलै ओकर गतिविधिक सीमा। एही कदमगाछतर टेल पड़ोसक नेना भुटका खेलाइत आ मारि-पीट करैत। नमहर छओड़ा सभ छोटका सभ के मारैत-मारैत ओदबाध कऽ दितै। कतेको खेप तऽ एइ मारि-पीटक चपेट मे वयस्को सभ आबि जाइत आ टोला मे एक भीषण काण्ड बझि जइतै। दूर मे ठाढ़ भेल माला सभ काण्ड देखैत रहैत। ओकरा बड़ डर होइतैक। आन धीया-पुता के मारि लगने तऽ ओ किछुओ ने बजैत, किन्तु जाइ दिन सभ मिलि ओकर छोट दुनू भाइ के मारनाइ शुरू करितै ताइ दिन ओ मुह खोलैत - ओकर मुरली सन मेही आवाज भरियेल सुनाइ पड़ितै, सभ दौड़ल अबैत। ओना ताइ सँ पहिनहि माला के भ्रातृ प्रेमक मूल्य धरि चुकाबै पड़ितै। भाइक बदला बेस मारि पड़ितै। केओ कने घक्का देने ओ ओंघरा जाइत। तखन चारि पाँच गोटे मिलि ओकर हाथ पैर पकड़ि राम गोपालक बड़दधराक पछुआरक गोबर माटि मे फेंकि दितै।

तहिए सँ ओ छओड़ा सभक मारि-पीट सँ डेराइए। ओ अपन दुनू बेय के घर मे अँटकओने राखए चाहैए। किन्तु मोजर ओकर केओ करिते ने छइ। बैसल बैसल जकर दिन बितै छइ, के तकर मुह तकैत, बात सुनतै ? माला लाख मना करौ, लखा आ चण्डी पल खसिते उड़ि जाइ छइ। ठकि-फुसिया कऽ किंवा जोर जबरदस्ती राखए चाहने बकुटि कऽ आ हबकि कऽ सोनिते-सोनितान कऽ दै छइ। तैयो रोजे माला नाना तरहँ ओकरा सभकें रोकबाक चेष्टा मे त्रुटि नहि करैछ। सन्तान स्नेहक हिसाबें मलहटोलीक जननी सभक बीच माला मे मौलिकता छइ। बेयक उमेर आठदस पार कऽ गेने तकरा सभक लेल चिन्ता केनाइ मलहटोलीक महिला लोकनिक रीति नजि। चिन्ता करै लेल आन विषयक अभाव नजि छइ ओकरा सभ के। दुधमुहा धरि ठाढ़ माइक कोर मे नजि पाओल जाइछ। निष्ठुर नजि होइ, तेहन पतियो प्रायः नहिजे सन। दूय खढ़-पातक लटकल खोपड़ीक संकीर्ण संसार, तकरो काज उदेम थोड़ नजि। पुरुष सभ माछ मारि अनैछ, थोक बेच बिकिन करैछ। धामा माथ पर लऽ अडने अडने माछ बेचनाइ ओकरा लोकनिक काज नजि। ई काज मलहटोलीक महिला सभ, सन्तान प्रसवक दू-एक मास आगाँ-पाछाँ छोड़ि, सालोभरि करैछ। कोरक बच्चा छोड़ि आर कोनो सन्तानक छोट-छीन विपद आपदक बात सोचैयोक पलखति जेना ओकरा लोकनि के नजि होइ। स्नेह करबाक मानसिकता-कोमलताओ नजि। नवजात शिशु के जेना ओ सभ पाशविक तीव्रताक संग ममता करैछ, वयस्क सन्तानक लेल ओकरा सभ मे तेहने असभ्य उदासीनता रहैछ। बेय मुइनहु ओ सभ शोक नजि करैछ, खाली रेघा-रेघा कनैतय अइ। माला पंगु, आलसी, घरक एक कोन मे पड़ल ओ स्वतंत्र जीवन यापन करैछ, तें मलहटोलीक रुढ़ वास्तविकता ओकरा किछुटा रेहाइ देने छइ। बेय-बेटी के सिनेह करबाक मनो ओकरा छइ, पलखतियो भेटै छइ।

बेय दुनू के ओ फिरि पबैए साँझक बाद। दिनभरिक बाद चिड़ैक बच्चा जकाँ थाकल ठेहिऐल छओड़ा दुनू घुरि अबैछ आडन, नडड़ी माइक तखन ओकरा लोकनि के प्रयोजन होइ छइ। मलहटोलीक आन समस्त खोपड़ीक लेल जे अभिनय अज्ञात, प्रत्येक दिनान्त मे कुबेक खोपड़ी मे से अभिनय अभिनीत होइछ। बाहर सभ तरहक बदमासी शैतानी कऽ घर मे लखा आ चण्डी शान्त भेल रहैछ, सज्जन ओ आज्ञाकारी शिशु सन माए लग घुसिएल रहैछ। दिन भरि एकतरफा अवहेलित सिनेह जे माला के बेकार बुझाइ छलै, दोसर पक्षक ग्रहण केलाक संगहि जेना अपूर्व ओ मधुर लागए लगलै। माला लग बैसि ओ सभ भात खाइछ। एक बेयक मुह मे स्तनदेने आर दूय के भात सानि मुह कऽ खुएबाक सख मालाक असगरेक नजि,

एना नजि खुएने ओ सभ खाइओ ने चाहै छइ। आर हैं, माला खिस्सो कहै छइ। मालाक माथ भरती ढील, देह मे माटि, पहिरन फाटल चीटल गन्हाइत वस्त्र, तैयो एहना समय जे ओ केहन सभ्य सुसंस्कृत महिला, असमानता तकरा स्पष्ट कऽ दैछ। लखा आ चण्डीक उधार देहक भीजल चमड़ा चकचक करैछ। ढिबरी सँ उपर उठैत धुआँ, माथक उपर चारक सड़ल खढ़-पात, चारुकात सोडरक बलप टिकल टाट आ नीच-ऊँच सिमसिमैल घरक माटि। आदिम सभ्यताक आवेष्टनी। अभिनय सुमार्जित सभ्यताक।

हिलसाक मौसम मे कुबेर कदाचिते एइ समय आडन घर मे रहैछ। जे दिन रहैए पैघ लोकक पोसुआ कुकूर सन उदास आँखिए देखैत रहैए सिनेह ममताक ई सभ विचित्र काण्ड कारखाना। देखैत-देखैत ओ हफिआइए, पैघ लोकक पोसुआ कुकूरे जकाँ चटाइ पर कर फेरैत उठि बैसैए। मुँह बओने रहैए गम्भीर सन भेल। लखा ओ चण्डीए जकाँ ओहो ध्यान सँ खिस्सा सुनैए। माला के से बुझै मे भाखत नजि रहै छइ। तें छओड़ा सभ के सुति रहनहु ओ थम्हैत नजि अइ, हाथ हिला हिला, मुहक भाव-भंगिमा बनबैत, रसिया रसिया कऽ निन्नभेर नेना सभ कें खिस्सा कहै मे ओ ओस्ताद! एके खिस्सा बेर-बेर कहितो ओ अपन श्रोता सभ के समाने मुग्ध कऽ सकैछ। गोपी ओंघराइत पोंघराइत माइक देह मे सटि आएल। पीसी दुआरि मे ओंगठल बैसल रहैछ। मालाक खिस्सा सुनै लेल आर के सभ आएलए से देखू। गणेशक बहु उलुपी, बेटा मनाइ आ बेटी कुकी। आर आएलए सिधूक तोतराहि बकलेलही बेटी बगली। बीच मे बाजि केओ मालाक खिस्सा कहैकाण बाधा नजि दै छइ। सभ चुप-चाप सुनैत रहै छइ। खिस्साक बीच-बीच मे माला ओकरा लोकनिक संग दू-एकटा बात कऽ लैछ।

की गे उलुपी, भनसा भऽ गेलौ ?

चुलही मे दूगो भाँटा देने छलिए आ हिलसाक शोर।

कुकी, देह झाँपि कऽ बैस हरमजादी। छौंड़ी जेना नटिन।

कहि टेढ़े आँखिए कुबेर दिस ताकि माला फेर खिस्सा कहए लगैछ।



चारि

पह बेरक बारसा मे आउँस धानक फसिल नष्ट भऽ गेल छलै।

भीतम माझीक घर पछुआरक तेतरि गाछक जड़ि पर्यन्त कोनो साल पानि नजि गेली। एइबेर धान पाकैक समय हठात् पानि एते बढ़ि गेलै जे गाछक जड़ि सँ धावा तीन हाथ उपरधरि पानि मे डुबल रहलै सप्ताहभरि। इएह पानि जखन जखन पानि नजि होइतै, पानिक संगहि धानक गाछे बढ़ल चल जइतै। किन्तु पानिवाक समय पानिक संग प्रतिद्वन्द्विता करैत धान केना बढ़ि पाओत।

पह बारसा भेल छलै एइबेर। केतुपुर सँ मील पाँचेक दूरक चन्नाक द्वीप जखन गामक एगो नीच द्वीप आधा-छिधा पानि मे डुबि गेल छलै। बहुतो लोक जे द्वीप छोड़ पला गेल छल। बहुत दिन पहिने खेलाड़ि पद्या जाइ भूमि-खण्डक जखन काफे छल, के जने छल जे ओ तकरा हठात् ग्रास कऽ लेत। उपरका गाम जखन से बारसाक पानि घर मे दुकनहु पूर्वबंगक लोक भय नजि पबैछ। ओइ पानि मे मनाइ नजि रहै छइ। किन्तु पद्याक वक्षपरक छोट छीन द्वीप मे जे सभ गाम, जखन पानि अवसर पबिते ओइ सभ गामक आडन-घर, माल-जाल, मनुख केँ जखन पानि जकाँ भसा कऽ लऽ जाएत।

कते गाम जे एइबेर पाँच-सात दिन धरि पानिक नीचा डूबल रहल।

मालाक गैह्वर चरडाडा तऽ भरिडाँड़ पानिक नीचा छलै। सुनलाक बाद जखन जखन कतिन बरताहि भेल छल। जखन तखन कहितै - केहन पाथर हिरदे

हमर बाप भाइ डुबल मरि रहलए आ एकरा बुते एक बेर खोजो-पूछा
काएल पार नजि लगै छइ।

गणेश के संग लऽ कुबेर एक दिन खोज खबरि लेबा लेल गेल।

डबरा-डबरी, पोखरि, खेत सभ एकाकार भेल। दू मास पहिने जाइ खेतक
आरि धेने लोक जाइत अबैत छल, एखन ताइताम लगाधरि थाह नजि पबैछ।
कोनो-कोनो गाम द्वीप सन लगैछ, कोनो गाम मे लोकक आडन घर मे भरि ठेहुन
पानि लागल। सभ मचान बान्हि ताइ पर दिन कटैत। जकरा पार लगलै, गाय
बड़द लेल सेहो मचान बना लेलक, जकरा तकर ओरियान नजि तकर निमूधन
दिन-राति पानिए मे ठाढ़। गाछक डारिपर केवल चिड़ै-चुनमुनी सुख सँ अइ।
भूचर मनुख आ मालजालक दुख कष्ट अवर्णनीय। हठात् कोनो आडन सँ
कानबक आवाज सुनि कुबेर नाओ लेने पहुँचल। ओसाराक खुट्टा पकड़ि घर मे
हुलकी दऽ देखलक जे बाँसक खुट्टीपर दूटा तखतपोस एकट्ठा केने ताइपर घरक
वस्तुजातक संग सम्पूर्ण परिवार बास करैछ। प्रायः मास दिनक एक नेना के छाती
मे सटने गृहस्थ घरनी बफारि कटैत। बच्चा के की भेलैए ? गत राति नीचा पानि
मे खसि डुबि कऽ मरि गेलै। कते पानि छइ नीचा मे, हाथो भरि तऽ नजि हेतै।
बच्चा के छाती लगा जननी सुतल छली, कखन केना जे खसि पड़लै के जनैछ ?
मासदिनक शिशु, अपने सँ घुसुकि-फुसुकि नजि सकैछ। इएह सोचि तखतपोसक
चारुकात अड़कन नजि दऽ दुनूकात दुनू बेक्ती बीच मे शिशु के लऽ सुतल। भऽ
सकैछ बच्चा के छाती सँ लगओने नित्रे मे जननी करोट फेरने होथि। नित्रेभर
अवस्था मे कातदिस ससरि उएह ने तऽ विसर्जन देने छली सर्वनाशा बाढ़िक पानि
मे अपन सन्तान के ?

चरडाडा पहुँचि सगर गाम जलमग्न देखल गेल। कतौ हाथोभरि जमीन
अबंच नजि। घरे-घर स्रोतहीन कादोपानि थकमक करैत। कुबेरक ससुरक समस्त
परिवार बड़का घर मे काठक एगो छोटसन स्थायी मचान पर आश्रय लेने।

दू गोट गाय आ बाछक लेल तीनटा सुपारी गाछक बीच मोट बाँसक
तिनकोनमा मचान बान्हल गेल छलै। पोसुआ कुकूर सेहो ओहीपर जगह पओने
अइ। मालाक बूढ़ बाप बैकुण्ठ मचान पर बैसल डेराएल दुनू गाय के घास खुअबैत
छल। घरक चार पर बैसि बंसी पथने माछ धरैत छल मालाक जेट भाइ अधर
आ घरक भितरका मचान पर चढ़बाक सीढ़ी सँ भनसा घरक चारधरि पासापासी
दू गोट बाँस बान्हि ई सभ जे पुलिया बनओने छल, ताइ पर बैसल छल कएकटा
नंग-धरंग नेना भुटका। कुबेर आएलए सुनि मालाक छोट बहिन कपिला सीढ़ी सँ

कुबेरक सासु नजि उतरलै। घरक मचाने सँ बेटी ओ नाति नातिनक
साथ पछि बरसाक देवता के शापान्त करैत बाजए लागल जे एते बएस ओकर
संग सभ भयंकर काण्ड तऽ ओ बापोक जन्म मे नजि देखलक। केहन सर्वनाश
के जेना लोकनिक भऽ गेलै से कुबेर की जानत। बान्हि छेकि सड़ै लेल देने
जाइ पाइ, आधा पाट जे केना कतए भसि गेलै पता नजि। भासि की जेतै, केओ
जाइ जेनी निश्चय। गरीब अइ ओ सभ, कते आश लगा एइबेर धानक खेत
मे पातक जास केने छल, के जे ओकरा लोकनिक एहन सर्वनाश केलकै!

मचान सँ बैकुण्ठ, चार सँ अधर, सीढ़ी सँ कपिला आर पुलिया सँ नंग-
धरंग नेना भुटका सभ उतरि आवि नाओ पर आराम सँ बैसल। कुबेर चिलम
बैकुण्ठ के देलकै।

कपिला कहलकै — नाओ लऽ कऽ एला माझी, बहिन के किए ने लेने
कते दिन देखला भऽ गेल। धीया-पुता के तऽ आनिए सकै छला ?

कुबेर कहलकै — लेले एबै विचारले रही। मुदा तौ सभ एइ जग कोन
जग के रीति सोचि हर भेल। गोपी तऽ आबै लेल कनैत-कनैत बताहि भेल छलै।
जे जेनाक माली कपिला ?

कपिला गृह धिजकबैत कहलकै — हमर बात छोड़हो।

कुबेर स्वाभाविक प्रश्न पर कपिलाक विरक्ति देखि कुबेर अवाक् भऽ बैकुण्ठ
के देलकै। भारिमुह धुआँ छोड़ैत बैकुण्ठ की जेना इशारा सँ कहलकै। कुबेर
के विरक्ति बूझी जोग नजि भेलै, तैयो ओ कने बिहुँसैत सन बाजल — ओ!

कपिला छवख स्वर मे पुछलकै — हँसलहो जे माझी?

कुबेर बाजल हँसली नजि कपिला, हँसब किए ?

कुबेर बियाहक समय बड़ चंचल छल कपिला। तखन पंगु माला के बियाहने
जग मे भारिमुह कपिलाक चंचलता एते बेसी बुझि पड़ल होएतै कुबेर के। अन्हार
के कखन केनितार के मद्धिम इजोतहु मे आँखि झलफला जाइ छइ, तेज इजोत मे
जे जेना भऽ जाइछ। तकर बाद कपिलाक बियाह भेल रहै। एगो बेटी भऽ
जाइत तै गत भऽ गेलै बर्ख दुएक पहिने। के जानए कते शान्तशिष्ट भऽ गेलए
जाइ जाइ, केहन संसारी भऽ गेलैए ओकर मन ? आर की कोनो दिन
जाइ जाइ तै की बँतक हिरला लगा ताइपर झुलत ओ ? किशोर बएसक अपूर्व
झुलत के घातक उपर सँ फेकि देत पोखरिक पानि मे ? डिडी लऽ असगरे
जाइ जाइ तै की बजबाक दण्ड देत ? सम्भव छइ जे एइ जीवन मे फेर कहियो

तमसा कऽ चेरा फेकि ओ कुबेर के नजि मारतै। से नजि मारौक! ओ चेरा फेकि नजि मारतै ताइ मे अपसोच करबाक की छइ ? कनेकाल बाद पासापासी दुनू बाँसक पुलिया पर सँ कपिला के घर दिस जाइत देखि कुबेरक दुनू आँख झलफला गेलै। हँ उएह बितल दिनक स्मृति गांथल छइ कुबेरक मन मे।

पानि घटबाधरि ओकरा ओइठाम केतुपुर जा कऽ रहबाक हकार सकल के देलकै कुबेर। ई हकार साधारण बात नजि, किन्तु सभ के चलि गेने चलतै केना ? आडन घर, वस्तु जात सभ किछु सामयिकभावे उठा कऽ लऽ गेने होइतै, मुदा से तऽ सम्भव नजि। निमुह गाय बाछ सभक की हेतै ? जा सकैए छओड़ा-छौड़ी सभ - आर ओकरा सभ के देखै सुनै लै कपिला यदि जाए तऽ जाओ। माला बुते एते कच्चा-बच्चा के सम्हारल तऽ नजि ने पार लगतै।

कपिला जाएत ? बेस।

कुबेरक सासु बड़ बजै छइ। बजलै - तोरा कहियौ की कुबेर, छौड़ी के लऽ कऽ जान अवग्रह मे पड़ल अइ। हँ रे बाप, कपिला दऽ कहै छिऔ। माला लेल किए चिन्ता हएत ? सोन सन जमाइ तौ, हमर नाडड़ बेटी के माथ पर रखने छै। एइ कपरजरौनीक बात कहै छिऔ - अपन कपिलाक। अलच्छीक मरनो नजि!

ओ बड़ कचोटक कथा। सुखे सँ घर गृहस्थी करै छल कपिला, की जे शनिक नजरि पड़लै। जड़कालाक आरम्भे मे घरबलाक संग कलह कऽ क बापक घर चलि आएल। तमसा कऽ ओकर घरबला श्यामादास दोसर बियाह कऽ लेलक, कपिला के छोड़ि देलकै।

ई बात कुबेर के नजि बुझल छलै। ओ आश्चर्य करैत बाजल - ओ!

तकर बादो कपिला के सासुर पठाओल गेल छलै - फागुन मास मे। श्यामादास ओकरा घर नजि दुकए देलकै, भगा देलकै। मनुक्ख तऽ नजि, जानवर छी जानवर। तें ने कुबेरक संग तुलना करैत दिन राति कपिलाक माए ओकरा गारि-सराप दैत रहै छइ।

से धरि सत्ते, पंगु रहितो माला के कहियो ओ अनादर नजि केलकै। तें से एहन प्रशंसाक बात? मालाक लेल, अपन दीन-हीन परिवारक ओइ आलसी अकर्मण्य रमणीक लेल, हठात् कुबेर निविड़ स्नेह अनुभव कएलक। सत् गृहस्थ ओ, सत् स्वामीक रूप मे जे प्रशंसा ओकर जननी चिकरि-चिकरि कऽ दिगदिगन्त रटना करै छइ से जेना मालाएक कीर्ति।

खेनाइ पिनाइक पश्चात् कपिला ओ तकर भाइ बहिन के संग लऽ कुबेर

केतुपुरक यात्रा केलक। कपिला खूब साज-गोज केने छलै। केश मे तेना कऽ पायिपरक तेल लगओने छलै जे चपचप करैत रहै। देह मे हरदि लेपि नहेने छलै ओ पायिमे छलै बैगनी रंगक साड़ी। सँ छोड़ि देलकै से बात ठीके, किन्तु बएस तऽ नजि छलै। आह, कुटुम्बक ओइठाम जेबाक नामे आहलादे जेना अस्थिर भेल हो।

केतुपुर पहुँचैत दिन शेष भऽ आएल छलै। माला उताहुल भेल बाट तकैत छल। किछु पाटु चोरि जाएब छोड़ि ओकर बाप भाइक आर तेहन कोनो क्षति नजि भेलैए सुनि ओ आश्वस्त भेल। माला केवल नाडड़ नजि जनमल छल, भार एगो पंगुता ओकर छइ। ओ हँसए नजि जनैए। जीवन ओकरा आलसी ओ विषण्ण बना देने छइ। भाइ बहिन के लग पाबि कते दिनक बाद ओकरा मुह सँ विषादक छायाहीन हँसी फुटलै।

एमहर कुबेर के चैन नजि। ओकरा सन गरीब के अइ दुनियाँ मे ? इएह जे एते लोक एलैए तकरा ओ खुआओत की! आँसुक फसिल नष्ट भेने एइबेर जे जेन मे अकाल पड़तै, एखने सँ तकर अन्दाज लगाओल जा सकैए। जलमग्न पिरथी पर आहारक दाम बढ़लैए। हिलसाक मौसम हेबाक कारणे एखन तऽ कोनहुना चीज जाइ छइ, एकर बाद ? दू चारि कैचा जमेबाक आशा तऽ गेल। अतिथि भाएलए, अतिथि चल जाएत। तकर बाद सपरिवार उपास। तखन मडनहु बैकुण्ठ एकोय पाइ नजि दैतै।

तखन हकारि कऽ ओकरा लोकनि के ओ किए अनलक ? ओकर दुखक दिन मे जे सभ घुरिओ कऽ ने तकै छइ, किए ओ तकरा सभ के एते खातिर करए गेल ? एना आदर सँ बजा नजि अननहु बाढ़िक किछु दिन ओ सभ मचान पर तीके ठाक बिता लीत। मने मन कुबेर तमसा जाइए। माला खुसी भेलए। हँसी फुटलैए ओकरा मुह सँ ? घरबलाक दुख नजि बुझि ओ मौगी बाप-भाइ लेल कीत रहैए। ओकर हँसैत मुह मे चूल्हक छाउर दूसि देबाक मन होइ छइ कुबेर के। माला एना उताहुल नजि भेने की ओ जाइत चरडाडा? के अनैत ओकर भाइ बहिन के हकारि कऽ ?

प्रत्येक दिन साँझक समय कुबेर के माछ मारै लेल जेबा सँ पहिने पीसी सभ के भात परसि दै छइ। कुबेर एखने खाऽ कऽ उठलए। तैयो ओकरा अपन गोया पुताक संग आरो किछु लोक के पतियानी मे बैसल खाइत देखि भविष्यक भविष्यक भूखे ओकर भरल पेटक अन्न जेना मुहुर्ते मे हजम भऽ गेल होइ। माला जेना बेस तत्परताक संग सभ के खुअबैछ। गोपीक पातक सानल भात ओ आदरक संग अपन भाइक पात पर धऽ दैछ। ई दृश्य कुबेर के देखल नजि जाइ छइ। ओ

नाओ पर जा बैस रहैछ। सम्भवतः तखन गणेश ओ धनंजय - केओ ने आपन रहै छइ। कुबेर असंगर चुपचाप बैसल रहैए। नदीक ढेउ मे नाओ हिलैत रहै छइ। सो-सो बसात बहैत रहै छइ। अन्हार तेहन गाढ़ - होइ छइ जे धुएँ जकाँ हवाक संग उड़िया जेतै।

कपिला जे पाछाँ-पाछाँ एलैए से की कुबेर जनैए ?

ओकर आकस्मिक हँसीक आवाज सुनि डरे कुबेर जेना अधमरु भऽ जाइछ। ओ थरथर कापए लगैछ। सोझ राति निर्जन नदी तीर पर एना के हँसत ? मनुख तऽ नजि भऽ सकैए, निश्चय नजि।

कपिला बजैछ - पीनी छोड़ि एला माझी।

कुबेर नाओ सँ नीचा उतरि पीनीक ढेप लैए। बजैछ एना खटँस जकाँ खिखिआइ छै किए कपिला ? अँए ?

कपिला कहलकै - डेरा गेला ने, अँए ? बाहरे मरद ! कहिते कहलकै - हमरा अपना लग रखबऽ माझी ?

कहैत आ अबदार करैत कपिला कुबेरक हाथ पकड़ि खिचैछ। चिरदिनक शान्त निरीह कुबेर के ओ जे कहाँ लऽ जेतै। मालाक बहिन छी ने कपिला ? हैं। कुबेर ओकर दुनू कान्ह सकत सँ धऽ अवाध्य बाँसक कमची जकाँ पाछाँ झुका दैछ। कहैछ - बदमासी जँ करबै कपिला तऽ नदी मे डुबकुनिआ देबौ।

कपिला धपास दऽ ओतै कादोए पर बैस रहैछ। हँसिते-हँसिते बजैछ - बाह-बाहरे मरद।

ओकर सहजहि कादोपर बैसि गेनाइ, दुष्ट हँसी आ खोंचारनाइ सन परिहास सभ बड़ रहस्यमय ओ दुर्बोध्य। हठात् कुबेर के जेना डर होइ छइ। ओ सस्नेह कहै छइ - पाँक मे किए मरै छै कपिला ? लोक की कहतौ ? जो, आडन जो।

कपिलाक मन मे की छइ से के जानए ? ओकरा चलि गेलाक बाद कुबेरक आँखिक उत्सुकता अन्हार मे नुका जाइछ। कपिलाक आनल पीनी चिलम मे भरि ओ सोंटब आरम्भ करैछ। चिलमक भागीदार नजि रहबाक आनन्द की ओकर मानसिक चंचलता के आस्ते-आस्ते शान्त कऽ दै छइ, अथवा नदीक बसात - नाओक हिलबा डोलबा मे पद्माक प्रेम ? माला जे कोनो दिन उठि नजि सकल, धुरि-फिरि चारुकात जीवन के छिड़िया कऽ समेटि कऽ नजि राखि सकल ताइ लेल कुबेर के कहियो अपसोच नजि भेलै। गतिहीन मालाक आबद्ध घनीभूत जीवन ओकरे हृदय मे उथल-पुथल करैछ - लटकल चारक नीचा छोटसन ओछैन परक

गु मालाक तुलना दुनियाँ मे नजि। किन्तु अन्हरिया राति मे पीनी पहुँचाबै लेल ओ तऽ कोनो दिन नदी तीर-धरि दौड़ल नजि आबि सकैछ - बाँसक कमची जकाँ नवागम भंगिमा मे सोझ भऽ ठाढ़ नजि भऽ सकैछ।

बैगनी रंगक साड़ी पहिरि, केश मे चपचप तेल देने कपिला खाली लीला खिनाए मे पटु नजि, कुबेरक सेवा-यत्नो ओ करैछ, जाइ सेवा यत्न सँ जीवन मे कुबेरक कहियो परिचय नजि छलै। राति-भरि पद्मा धार मे काटि भोरे आडन गेने एखन ओ बिनु मडनहि पैर धोइ लेल पानि पबैछ। पनिभत्ता लेल हल्ला नाचि करए पड़ै छइ। खाकऽ उठैत देरी चिलम भेटि जाइ छइ। प्रस्तुत रहै छइ ओकर दीन-मालिन ओछैन एवम् गर पबिते कोनो दिन मोछ धऽ खीचि, कोनो दिन बिठुआ काटि, हँसी दाबि पल खसिते निपत्ता भऽ - निन्न एबाक पहिने कपिला ओकरा सपना देखा दै छइ।

आनक पेट भरै मे अपने अकिंचन भेल जाइतो तँ कुबेर के घरक प्रति आकर्षण बढ़ैत छइ। घटैत छइ बाट-घाटक पानि।

ओ तऽ मनुखक आँखिक पानि नजि, घटबे करतै। एक दिन मालाक जेठ-भाइ अधर खोज-पुछारि करए अबैछ। कुबेर के ओ सरिपहुँ कुबेर बुझि लेने छइ वा नजि, उएह जनैए, कर्ज चाहिए दूगो टका। टका नजि भेटने ओकरा तामस होइ छइ। सभ के ओ घुरा कऽ चरडाडा लऽ जाए चाहैए। कुबेर मना नजि करै छइ। मालाओ नजि। भाइ बहिन के लग पेबाक आनन्द पुरनाए मे लगिते छइ कते दिन ? ताइ पर कपिलाक चपलता ओ हँसीठठक लेल भऽ सकैए माला के इर्षाओ होइत होइ। भऽ सकैए कोनो दिन कुबेरक संग कपिलाक लट्ठापट्टी पर ओकर नजरि पड़ल होइ। एकठाम थिर भेल बैसल रहनु नजरि तऽ ओ सभ ठाम खिरबिते रहैछ।

किन्तु कपिला नजि जाइए। झगड़ा कऽ कऽ, गारि गंजन कऽ कऽ ओ अधर के भगा दैछ। के जानए की छइ कपिलाक मन मे।

मयनाद्वीप सँ रासूक आकस्मिक आविर्भावक विस्मय गामक लोक लग पुरान भऽ गेल छलै। आब ओकर अनुभवक गप सुनबाक कौतुहल ककरो नजि। रासू कहए चाहैए, बेर-बेर शुरू सँ शेष धरिक खिस्सा विस्तारपूर्वक कहए लेल ओ छटपट करैए, किन्तु श्रोता भेटिते ने छइ। कते सुनत लोक। सुनैत-सुनैत तऽ सभक कान जेना बहीर भऽ गेल होइ।

होसेन मियाँ किछु टका देलकैए रासू के। रासूक इच्छा छइ जे ओइ टका सँ ओ एगो कनियाँ कीनए। गोपी भेने नीक। किन्तु कुबेर एइ प्रस्ताव पर कान

पात नजि दैछ। कते टाका होसेन मियाँ ओकरा देने हैतै ? हजार ने लाख ? आर छैहे की रासू के ? घर दुआरि ? जीवन जीविकाक साधन ? आ से बात जै छेड़ियो दी तऽ गोपीक लेल तऽ पात्र ठीके भेल छइ - गणेशक सार जुगल। जुगल सन पात्रक अछैत कुबेर जकरा तकरा हाथ मे अपन बेटी देबे किए करत ?

रासू के किन्तु बड़ पसिन छइ गोपी। मयनाद्वीपक गप करैक बहने ओ कुबेरक आङन-अबैछ आ कनडेरिए आँखिए गोपी दिस तकैत रहैछ। इनरक परी सन सुन्नर बुझाइ छइ ओकरा गोपी। भाइ के कोरा मे लेने झुकि कऽ ठाढ़ हेबाक की सुन्नर ओकर ढंग ! हैं, ओकर केश अबस्से रुक्ख छइ, आ कने ललौन सेहो। कपार कने उँच। ठोर मोट हेबाक कारणे पिचलाहा नाकक बुलकी ओइ मे ठेकि जाइ छइ, नीक जकाँ हिलि-डोलि नजि पबै छइ। आर हैं, बड़ गन्दा रहैछ गोपी। मुदा तैयो तऽ रासू नजरि हट नहिजे पबैछ। तैयो ओकरा कहाँ मन पड़ै छइ जे एहन अतुलनीय रूप ओ कतौ देखने अइ ! तेहन ने रंग छइ गोपीक, केहन मोहक ओकर चलनाइ-फिरनाइ, तकनाइ ?

बएस रासूक बेसी नजि भेलैए, जुगलो सँ कमे छइ। नव सँ घर-संसार बसेबाक ओकर समय नजि बितलैए। गोपी के पओने ओ फेर सँ आरम्भ कऽ सकैए। गोपीक जे बाढ़ि छइ, बियाहक बखं दिनक भीतरे स्वामीक घर करए आवि जेतै। पाँच-छओ वर्षक कोनो छौंड़ी के बियाहि ओकर समर्थ हेबाक आशा मे मुह बओने बैसल रहबाक धैर्य आब रासू के नजि छइ। जकरा सभ के ओ मयनाद्वीप मे विसर्जन दऽ आएलए, तकरा सभ के जल्दीए आपस चाही। असगर-असगर रहै मे बड़ तकलीफ होइ छइ रासू के। एम्हर पीतम माझीक संग झगड़ा भऽ गेलैए। होसेन मियाँक देल टाका उचड़ि लेबै लेल पीतम बेस उताहुल भेल छलै। तँ रासू फराक भऽ गेल। के जनै छल जे गामे मे पीतमक बेटी जुगिए अपन असगरआ असहाय पिसिऔत भाइ के एते खातिर करतै। शीतल के कहि बाबू सभ सँ अपन घरक काते मे थोड़े जमीनक जोगार उएह धरा देलकैए। रासू एगो घर ठाढ़ केलकए ओइठाम।

रासू असगरे रहैए ओइ घर मे - भऽ सकैए गोपीक ध्यान करैत रहैत हो। बेर मे केतुपुर गाम सँ सौदा आनै जाइतकाल कोनो-कोनोदिन बाटक निर्जन भाग दिस ओ गोपी के ठाढ़ भेल देखैए।

रासू पुछै छइ— कहाँ जाइ छै गोपी ? ओ कने स्नेहिल हँसी हँसैए। ढट्टा सँ बहार करैछ एगो काच बैसाओल पितरिया औंठी आ मुडाक माला। बजैछ - लेबै।

गोपी आनन्दक संग उपहार ग्रहण करैछ। रासू ओकरा नीक लगै छइ। रासूक 50 / पद्मानदीक माझी

एहन उपाय कने दुख बोध करैए। के जानए कहाँ छइ से मयनाद्वीप, जहाँ सभ के मन आपलए रासू। जिनगी मे बड़ कष्ट पओने अइ ओ। ततबे नजि, रासूक बातो बिचार बड़ मधुर, सुनै मे बड़ दीब लगै छइ गोपी के। आर ओकरो कते खातिर की छइ रासू। ओ जेना कते पैघ भऽ गेल हो, एगारह बखं छौंड़ी नजि हो।

बीच-बीच मे रासू जुगी सँ सलाह लैछ। कोनो एहन उपाय की नजि कएल जा सकैछ जाइ सँ कुबेर के राजी कराओल जा सकए ? सलाह परामर्श खूब होइ छइ, उपाय नजि होइ छइ। शीतल के नजि रहने ओकर साफ-सुथरा औंछैन पर जाग्य मे बैसि, ओकर हुक्का गुड़गुड़बैत बतिएबाक लाभ होइ छइ रासू के। आर एते छइ जुगीक समवेदना। रासू के जुगी खूब खातिर यत्न करै छइ। मयनाद्वीपक गिरगा बेर बेर सुनितो ओ नजि अघाइए। मयनाद्वीप मे कते लोक छइ ? की-की फाँसल होइ छइ ? द्वीपक चारुकात भरिसक समुद्र छइ ? आइ रासू सँ ई सभ गप्य करैत जुगी के नीक लगै छइ। जुगीक बएस बेसी नजि छइ, बाइस हैतै। बड़ जान ओकर स्वभाव, बड़ सरल ओकर मन। शीतल ओकरा सुखे सँ रखने छइ। मलहटोलीक दुख दैन्य सँ अढ़ केने। असीम संतोष छइ ओकरा मन मे। एते जाग्या, एहन कोमलता मलहटोलीक आर कोनो लड़की मे नजि छइ। मलहटोलीक फाँसी घर मे जै कोनो दिन भानसक उपाय नजि रहै, चोरा-नुका कऽ एकबेर जुगी भरि पार्थिव गेने ओकरा उपासक डर नजि रहै छइ। अपन कष्टक बात कानि-कानि जे जते नीक जकाँ बखान कऽ पबैए - जुगी तकरा तते बेसी चाउर दै छइ। अपन लोचक पाइ दान कऽ कऽ शीतल सँ बात सुनैछ। शीतल लोक हिसाबे बड़ कंजूस। जुगीक दानी स्वभाव ओकरा पसिन नजि छइ। किन्तु एहन विचित्र मानुस मन जे जुगीक एही स्वभावक कारणे शीतल ओकरा सँ आर वेशी सिनेह करैछ। जुगी के ओ कंजूस हेबा लेल अबस्से कहै छइ किन्तु साँझखन घर घुरला पर जाइ दिन जुगी ओकरा डरे नजि कहै छइ जे आइ फल्ली आबिओकरा ठकि फुसिया जे पओनके से लऽ गेलै, ताइ दिन शीतल के जेना उड़ी-बिड़ी लागि जाइ छइ।

माछक दाम बावद कुबेर किछु आना कैंचा पबैत। शीतल के ऋण सधेबाक जाइत नजि छइ। तगादा दैत-दैत कुबेर फिरीसान भऽ गेल। तैयो एक दिन सकाल सकाल ओ आश लगओने पहुँचल।

जुगी भानस करै छल, शीतल आ रासू करै छल गप-शप। कुबेर के देखिते गाम आस्थर भऽ उठल। बैसक दऽ बेस खातिर करैत हुक्का बड़बैत कहलकै - लै, पीबऽ।

नजि। कुबेर के समय नजि छइ बैसबाक। हुक्का चिलम पीबाक समय नजि

छड़। शीतल झटपट ओकर पाइ दऽ दौक, ओ चल जाएत। ओ बैसि कऽ हुक्का पीबै लेल आएलए ने की ? हैं, कुबेर आइ पितैल अइ। आइ ओ अपन माछक दाम लैए कऽ रहत।

शीतल पहिने सरलताक संग बिहुँसैत बाजल — एते तामस किए कुबेर के, सेहो सबेर सकाल ? फेर ओहो तमसा जाइछ — जो-जो, नजि देबौ पाइ, नालिस करै गऽ।

रासू बुझाइए कुबेर के खुसी करए चाहैछ। ओ शीतल के कहै छड़ — दऽ ने दिऔ शीतल बाबू, दऽ दिऔ ओकर पाइ।

पाइ दै छड़ जुगी। झगड़ाक बीच दस आना पाइ आनि कुबेरक सामने राखि देलकै आ फेर शीतल के धमक दैत कहलैक — कने-मने पाइ लेल झंझट-झमेला नीक लगै छड़ ? की जोर जुगीक ! शीतल किछु ने बाजल, कुबेर दिस आँखि तराड़ि कऽ देखैत घरक भीतर चल गेल।

पाइ समेटि कुबेर उठल, संगहि उठल रासू। की विनय रासूक, केहन सभ खुसामदक बात ! चलैत-चलैत रासू नाना तरहक बात करैछ। एइबेर ओ एगो बेबसै आरम्भ करत, बेबसै छोड़ि पाइ कहाँ छड़ ? एगो दोकान लेत ओ देवीगंज मे। कथिक दोकान लेत तकर निस्तुकी एखन नजि केलकए। सोचि विचारि एकटा किछु ठीक करत। कुबेर की सलाह दै छड़ ? जिनगी मे उन्नति करत रासू। जानक बाजी लगा ओने दुनियाँ मे की ने भऽ सकै छड़ ? आइ भिखमंगा — कालि राजा ! कुबेर गंभीर मुह बनओने जवाब देलकै — हैं। सोचैए मयनाद्वीप जाऽ कऽ बड़-बड़ बात बजनाइ सिखि आएलए रासू। चालि चलनाइ सिखलकए।

खेत सभ दिस देखला सँ पता चलै छड़ जे पानि कते घटलैए। धानक गाछ सभ झुकि गेल छड़। पद्मा सँ आइ जोरगर हवा चलै छलै। चारुकात असंख्य चिड़ै चुनमुनीक कलरव। कुहेस मे भीजल उँचका जमीन सभ पर पसरल छड़ पिरौन रौद। शरत् कालक आगमन मे संदेह नजि। नदी तीरक काशबन आब उज्जर दपदप भऽ जाएत। कुबेरक संग रासू ओकरा घर तक अगुआ अबैछ। नू, गोपी एखन आडन मे नजि अइ। भऽ सकैछ कपिलाक संग नदी सँ पानि आनै लेल गेल हो। कुबेर रासू के बैस' लेल नजि कहै छड़। ओ पीसीक एकान्त घर मे सुतै लेल चल जाइछ। रासू आस्ते-आस्ते आपस भऽ जाइछ। जाइए नदी कात। गारि सुनैए कपिलाक। तकर बाद हन-हन करैत विदा होइए केतुपुर गाम दिस। नजि, नदी कात ओना ठाढ़ रहनाइ ओकर उचित नजि भेलै। कपिला जँ कुबेर के कहि दै ?

पाँच

भादवक बाद आसिन। आसिनक बिचबिचवा पूजा।

एक दिन प्रबल अन्हर बिहारि भऽ गेलै। कालवैशाखी एकर परतर की करत। दिन भरि टिपिर टिपिर पड़ैत रहलै, सांझ मे आकाश कारी सघन मेघ सँ भरि गेलै, माझ राति मे शुरू भेल अन्हर बिहारि। बसातक से की बेग आ की गर्जन ! विशाल विशाल गाछ मड़मड़ा कऽ टूटि खसलै। मलहटोलीक आधा छिधा खोपड़ीक चार उड़िया गेलै। पद्मा समुद्रे जकाँ विपुल ढेउ बनबैत तीर पर पछाड़ खाइत रहल। भरि मलहटोली बुढ़-बुढ़ानुस आ स्त्रीगण सभ हाहाकार करैत राति खेपलक। नेना भुटका सभ मे किछु तऽ डरे सकदम भेल छल तऽ किछु हिचुकि-हिचुकि कनैत रहल। हिलसाक समय शेष भऽ गेने मोट कमाइक सुयोग दू दिन बादे शेष भऽ जेतै, तँ महलटोलीक कोनो घर मे समर्थ-सकर्थ पुरुष पातक नामो निसान नजि। सभ अपन-अपन नाओ पद्मा मे भसा छिड़िया गेल अइ दूर दूरान्तर धरि। केओ घुरत भोर मे, केओ सम्भव छड़ जे घुरबे नजि करत। अन्हर आरम्भ होइते स्त्रीगण सभ अडने-अडने पीढ़ी बैसा देने छड़ — अन्हर बिहारिक देवता ओइपर बैसता, शान्त होएता। घरे-घर ओ सभ माथ-कपार पीटि मधुसूदन के सुमिरैछ। देवताक ई केहन रोष ? किए ई प्रलय काण्ड ?

परात भेने बिहारि कमलै अबस्से किन्तु एकदम सँ थम्हलै नजि। सों-सों करैत बसात बहैत रहलै आ मेघ बुनिए लगलै। मलहटोली दिस नजरि नजि देल जाइ। सघन विन्यस्त कुटीर सभ के केओ जेना कूड़ा कर्कट जकाँ हिला-डोला

छिड़िया देने होइ। कोनो घर झुकल तऽ कोनो घरक चार नजि, कोनो घरक चार तऽ छइ मुदा ताइपरक खढ़-पात निपत्ता, कोरो-बाती झकझक करैत। आडन सँ बाट-घाट धरि पसरल गाछक डारि पात। कुबेरक सुतबाक घर खसि पड़लै। गोपी के बड़ चोट लगलै, जानि ने ओकर दहिना टाङ टुटलै वा बांचल छइ। चार उड़ि कऽ दूर पीतमक बड़दधरा पर जा खसलै। हीरू आ सिधूक एकोटा घर साबुत नजि बँचलै। अनुकूलक तीनटा घर मे एगोक चार नजि आ बाँकी दूटाक चारक खढ़ निपत्ता। रासूक घर एकात मे छलै, भीत आ दू गो खुट्टा छोड़ि घरक चिन्हो नदारद। शीतलक घरक चारुकात बड़का-बड़का गाछ छइ। एकोगो गाछ खसने घर कुन्नी-कुन्नी भऽ जइतै, किन्तु गाछेक कारणे ओकर घर बाँचि गेलै। मलहटेलीक आर बहुतेक क्षति भेलैए थोड़-बहुत। मुसलमान माझी सभ मे सभ सँ बेसी नोकसान भेलैए अमिनुद्दीक। विशाल एगो सिनुरिआ आमक गाछ जड़ि सँ उखड़ि, जाइघर मे ओकर बहु आ धीया-पुता छलै, ताही पर खसि ओकरा मटिया-मेट कऽ देलकै। अमिनुद्दीक बहु पिचरा-पिचरा भऽ तैखन मरि गेलै। भिनसर खीचि कऽ बाहर करैकाल धरि बेटा जीबै छलै, घण्टाभरि बाद ओहो शेष भऽ गेलै। केवल बेटिया बाँचि गेल छइ। अमिनुद्दी अपने जे कहाँ अइ, के जानए! भऽ सकैए कोनो उँच जगह पर आश्रय लेने हो, वा पद्माक उताल तरंग मे जलसमाधि लऽ लेने हो। ओतेटा बेटा ओकर ककरो बोल भरोस नजि मानैछ, बपहारि करैए आ ओँघराइए। जाइ बेटाक परदा लै गरीब अमिनुद्दी खोपड़ीक चारुकात उँच कऽ परदा टाट लगओने छल, आइ जकरा मन होइ देखि जाओ। काल्हि जे ओ अपन करिया आँखि मे काजर कएने छल, एखनो से धोखलैए नजि। टाटक फाँक दऽ ओकर कजरैल आँखिक सलज्ज ताकब देखि कालि बेर मे जहरक जुआन बेटा बेस खुसी भऽ पद्मा मे नाओ भसओने छल। पद्मा सम्भवतः ओकरो एतेखन पिरथी सँ धो-पोछि देने हेतै।

भीत आ उदास महलटेलीक नर-नारी कपैत कपैत पद्माक तीर पर जा ठाढ़ होइछ, आरक्त आँखि तँकैत रहैछ पद्माक उन्मुक्त जलराशि दिस। घाटपर तीनगो नाओ बान्हल छलै, एगो अदृश्य भऽ गेलै, दू गो उपर तीर पर उठि आएल छइ। कने हटि कऽ गाछ पात समेत तीर धसल छइ, आर थोड़ेक मे फाट धेने छइ - शीघ्रे धसना खसतै।

पद्माक तीर पर ठाढ़ भेने कोनो लाभ नजि। तँकैत-तँकैत आँखि पथरा गेनहुँ कालि जे सभ नदी मे नाओ लऽ गेल छल, तकरा सभ के देखि पाएब सम्भव नजि। जे सभ नदी मे डुबि गेल से सभ तऽ गेबे कएल, जे सभ कतौ उँचका

जगो पर आश्रय लेने होएत, पद्माक शान्त नजि भेने तकरो सभ के फिरि एनाइ सम्भव नजि।

उँचका बाट भऽ आबि सकैए।

किन्तु एखनो बाट घाटक पानि एकदमे हटि नजि गेलैए। के कतए उँच जगहक आश्रय पओने अइ, के जानए। भऽ सकैछ ओइठाम सँ पैरे एबाक सुबिधा नै होइ। घर लेल सभके उचाट लागल हेतै, भऽ सकैछ भोरक इजोत होइते एइ जगादिनी नदीक तीर लागल नाओ खेबि ओ सभ घर घुरबाक चेष्टा करत।

दिन चढ़ला पर बसात आस्ते-आस्ते खसि पड़लै। शान्त भऽ आएल पद्मा। बागिया मे एकटा दूटा कऽ मलहटेलीक नाओ सभ घुरए लगलै। पहिने जे सभ पाँचल, लोक तकरा सभ के घेरि कलरव करए लागल - आर सभ ? बाँकी सभ कहाँ अइ ? केना अइ ?

सभक हालचाल ओ सभ नजि कहि सकल। के कोनठाम तीरपर अँटकल अइ के जनैछ, मात्र दू-चारि गोटाक खबरि ओ सभ दऽ सकल। जकरा सभक खबरि ओ सभ दऽ सकल तकरा लोकनिक उद्विग्न आत्मीय स्वजनक मुह पर सँ जेना एक करिया परदा हटि गेल होइ। जकरा सभक कोनो समाचार नजि भेटलै, तकरा सभक परिवार परिजन फेर निर्वाक पद्माक सीमाहीन वक्षपर आँखि पथने रहल। ओना प्रत्येक आबएवला नाओ एकटा आशाक वार्ता लबैत रहलै जे ककरो प्राणहानिक सूचना नजि छइ। धैर्यक संग सभ केओ प्रतीक्षा कऽ सकैए - सम्भव छइ जे बेकार नजि होएतै।

अमिनुद्दी ओ नसीर संगहि घुरल। अमिनुद्दी लेल केओ घाटपर नजि आएल छलै। जहर आएल छल। नसीर के देखि ओ मात्र एतबे बाजल - बापजान, घुरलऽ ? एतबा कहि अमिनुद्दी दिस तँकैत ओकर जेना बकारे बन भऽ गेलै। ककरो मुँह मे बकार नजि। अमिनुद्दी के देखि सभ जेना बाँक भऽ गेल।

अमिनुद्दी एमहर ओमहर तकलक तकर बाद भीत उत्सुक कण्ठे जहर के पुछलकै - खबर कह मियाँ भाइ - की बात, चुप्पी लाधि लेलै जे ?

ककरो किछु कहबाक नजि छलै। ओकर हाथ भऽ जहर गाम दिस घिचने गेल।

तकर बाद आएल कुबेर ओ गणेश। ओ सभ अनुकूलक नाओ सँ आएल, धनंजयक नाओ डुबि गेलै। बोकबा गणेशक एक पैर मे मोच पड़ि गेल छलै।

मन्दार बिहारि मे नजि, पैर पिछरने ओ खसि पड़ल छल। उलुपी आइ सारा दिन पद्माक तीरे पर बितओलक। गणेश के पकड़ि ओ घर लऽ गेलै। कुबेर लेल केओ ने एलै। ओ अपन घरक विरतान्त दोसरेक मुहें सुनलक। बड़का घर खसि पड़लै ? जे घर छारै लेल होसेन मियाँ खढ़ देने छलै ? गोपीक पैर मे चोट लगलै ? विवर्ण मुह लेने कुबेर घरमुहा डेग उठओलक। घर दुआरि बहुतो क खसलै। अमिनुददीक तऽ सर्वनाशे भऽ गेलै, किन्तु अपन घर खसब सँ पैघ दुःसंवाद कुबेर लेल दोसर नजि। के जानए फेर कहिया ओ घर ठाढ़ कऽ पाओत। कतऽ माथ नुकाओत ?

बाट मे भेटलै कपिला। कुबेर के देखिते ओ जोर-जोर सँ कानए लागलि- बड़ आवेसी अइ कपिला। बाजल - घुरि एलहो माझी ? बात रखलनि, गोसैया हमर बात रखलनि—हम जे पाँच पाइक बतासा (लड्डू) चढ़ेबाक कबुला केले छी।

कुबेर विरक्त होइत बाजल—कनै छै किए ?

संग लागल चलैत कपिला अपना के सम्हारलक।

बड़ चोट लागल हइ छौड़ीक पैर मे। सुनलहो नजि विरतान्त ?

कुबेर मूड़ी हिलबैत बाजल हैं। फुलि गेल छइ ने ?

बड्डु फुलल हइ। दिन-भरि छौड़ी कनैत कनैत मरै पर कम्पर बन्हेने हइ।

चारुकात खसल पड़ल गाछ, खसल पड़ल घर, पत्र-पल्लव आच्छादित बाट—कुबेरक आँखि नोरा जाइ छइ। घर लग जा कऽ ओ ठाढ़ होइए। घर कहाँ छइ कुबेरक ? मुहे भरे अडना मे खसल छइ। सभ केओ पीसीक घर मे आश्रय लेने छइ। ओही घर दुकि कुबेर ढेकी पर जाऽ कऽ बैसल। गोपी सुतल-सुतल कुहरै छइ। ओकरा पैर मे हरदिचून लगाओल गेल छइ। ठेहुन लग बेस फुलल छइ। माला बड़ बेसी डेराएल अइ। गत रातिक प्रलयंकर काण्ड भीरु पंगु नारी के अधमरु बना राखि गेलै। ओ एखनो सम्हरि नजि सकलए। कुबेर के अएने ओ जेना स्वस्तिक निसास छोड़ि बाँचल।

पीसी भात रान्हि रखने छलै। बरखा बिहारि भूमिकम्प कोनो किछु पीसीक भात रहनाइ बन्न नजि कऽ सकैछ। कनेकालक बाद कुबेर भात खएलक। तकर बाद गोपी लग जा कऽ बैसल। दरदे छौड़ीक मुह जेना सियाह भऽ गेल होइ। दरद कमेबाक मंतर तऽ ओकरा नजि अबै छइ जे गोपी के कने आराम दऽ पबैत ! चुपचाप देखैत रहनाइ छोड़ि दोसर उपाये की ? माला आस्तेआस्ते बजैत रहैछ—मड़मड़ा कऽ घर खसबाक समय डरे घबड़ा कऽ बाहर पड़एबा काल केना गोपीक देहे पर आवि चार खसलै। घर मे रहने छौड़ी के किछु ने होइतै। बिहारिक समय

के काल जेना जेबाक चाही, घर मे रहनाइए सभ सँ निरापद से बुद्धि तऽ छौड़ी के लेल जाइ। सुनैत सुनैत कुबेर झुकैत रहैए।

हे कुबेर के जीधी लागल छइ। उन्मुक्त नदी तीर पर बैसि ओ अन्हर बिहारिक जगह खिगने अइ। भोरे पैर आएल देवीगंज, दू फक्का मुरहीय फँकने अइ। घर खसबा भरि दुश्चिन्ता सँ छाती धड़कै छलै। एखन भरिपेट खएलाक बाद आर आर गलत गलतक खेमाता नजि छइ ओकरा। मालाक सभ बात ओकरा कान मे नजि जाइ छइ। एक समय गोपीक माथलग कनेट जगह मे कात भऽ ओ कोनो तहने भुति रहैछ।

राति सँ पहिनहि मलहटेलीक सभ केओ घुरि आएल। पद्माक पेट मे नजिगल केओ। पीतम माझीक नाओधरि माझ नदी मे अन्हरक सोझा पड़ि डूबि गेलै। नाओ पर छलै पीतमक बेटा माखन, कुबेरक पड़ोसी सिधू आ ओकर भाइ मगरी। अधमरु अवस्था मे ओ सभ, एकटा द्वीपसन जगह मे राति खेपि घुरि आएलए आ एखन अपन बहादुरीक खिस्सा परसने फिरैए जे केना पहाड़ समान बीच छेउक संग लड़ाइ कऽ कऽ ओ सभ अपना के बचाओलक।

किछु दिन एहिना लंड-भंड अवस्था मे बितलै। फेर आस्ते-आस्ते ढहल दानमनैल घरक मरम्मतिक चेष्टा चलाए लगलै। केतुपुरक दू चारिटा घर खसल छलै। एक दिन माझिल बाबू अनन्त तालुकदारक सभापतित्व मे एक सभाओ भेल। क्षतिग्रस्त आर गरीब सभक लेल चन्दा करबाक व्यवस्था भेल। अनन्त बाबू स्वयं दस टका दान देलनि। गाम सँ आर पन्द्रह टका उठलै। ताइ मे सँ सात टका देल गेलै केतुपुरक नन्द भट्टाचार्य के। आहा, ब्राह्मणक दूय घर खसि पड़लै। महलटेली लेल देल गेलै दस टका - दू टका कऽ पाँच गोटे के। बाँकी टका भरिसक फंड मे जमा रहलै।

खुसीक बात जे दीर्घ अनुपस्थितिक पश्चात् होसेन मियाँ गाम घुरि आएल। घुरि-फिरि ओ सभ दिसक अवस्था देखलक, तकर बाद दाढ़ी पर हाथ फेरैत बाजल—न, रुपैया कर्ज नजि देबौ। खढ़-खढ़ही देबौ, बाँस देबौ, अपने खड़ा रहि तोरा सभक घर बना देबौ - आखिर मे हिसाब कऽ कऽ चिट्ठा बनेबौ, एगो कऽ औंठा छाप लगा दिहे।

सएह ठीक।

पुरना टुटल भाङल घरक बदला जँ नव घर उठए तऽ चिट्ठा बनेबा मे कोन हरज ? जकरा सभक घर खसि पड़ल छलै, सभ खुसी भेल। जकरा सभक घर

नजि खसल छलै ओ सभ दुखी होइत सोचलक, ओकरो सभक घर खसि पड़ने बेजाए नजि होइतै।

सभ केओ खुसी-खुसी होसेन मियाँक सहायता स्वीकार कएलक, नजि कएलक तऽ केवल अमिनुद्दी! ओ मूड़ी हिलबैत बाजल — नजि मियाँ, घरक काम नजि।

आम गाछक तर ओकर घर जेना धुरी थौआ भेल छलै तहिना पड़ल रहलै। सत्ते तऽ, घर लऽ कऽ की करत ओ ? के छइ ओकरा ? ककरा लेल दुख दैन्यक नीड़ बान्हत ? मलहटेलीक सभ फेर सँ पद्मा मे नाओ भसओलक, अमिनुद्दी मुदा कतौ नजि जाइछ। ककरा खातिर ओ पद्माक अतल जल मे जीविकाक संधान करत ? केवल बेटीय छइ — ममिन। किए छइ की जानि! भरिदिन ममिन हुकुरैत रहैछ, अमिनुद्दी चाहितो नजि देखैछ।

आस्ते-आस्ते सभक नव खुट्टा, नव टाट ओ नव चारक घर ठाढ़ भेलै। होसेन मियाँ मजदूर सभ के की कहने छलै से उएह जानए, कुबेरक घर सभ सँ पहिने उठलै। घर देखए आबि होसेन मियाँ गोपी लेल बड़ दरद देखओलक। बाजल — असपताल लऽ जाहक कुबेर भाइ, मालूम होइए जे चोट बेसी लागल छइ।

तकर बाद एगो चिट्ठा बहार कऽ बाजल — औंठा लगा दहक कुबेर भाइ, एकैस रुपैया दस आनाक चिट्ठा छऽ, दू रुपैया छौड़ि दै छिअ। औंठा लगा राखह जखन पार लागह, दऽ दिहऽ। नहिजो देने मामला नजि करबह। होसेन मियाँ बिहुँसैए— जान दऽ कऽ तोरा सभ के दरद करै छी, चिट्ठा किए ? लिखि रखलौं — हिसाब रहतै, ने तऽ एकर कोन काम ?

कुबेर कहलकै — पुरना बाँस, पुरना टाट देने खरचा कम लगितै ने मियाँ भाइ ?

किए ? पुरान किए ? खरचा लेल कोन चिन्ता, से तऽ हमही ने दै छिअ। दै छिअ की नजि ?

हैं मियाँ भाइ, से तऽ अहीं दै छी।

औंठा छाप दऽ कुबेर होसेनक मुह दिस तकलक। होसेन मियाँक बड़ डर होइ छइ कुबेर के, बड़ टान छइ ओकर होसेन मियाँ दिस। पता ने कोन जादू टोना सँ कुबेर के वश केने छइ ओ ?

गोपीक पैरक ने तऽ दरदे कमै छइ आ ने फुलनाइए। छौड़ी के लऽ कऽ महामोसकिल मे पड़ल अइ कुबेर। आखिर मे माला जकाँ गोपीओ की नाङड़

58 / पद्मानदीक माझी

भऽ जेतै ? कोन उपाय करत से किछु ने फुराइ छइ कुबेर के। होसेन मियाँ जेना कहै छलै, सदर असपताल लऽ जाएत ने की ? सेहो तऽ कम झंझट नजि! एते दूरक बाट केना लऽ जाएत ओकरा ? दरदे ओ बिछानो पर करोट नजि फेरि पबैए, एते उठा पटक ओकरा बरदास हेतै ? किन्तु पैरक जे हाल छइ, जल्दीए कोनो ने कोनो उपाय नजि केने नजि।

एही बीच पूजा सेहो आबि गेलै। चरडाडा सँ एकदिन फेर आविर्भाव भेल अधरक। फेर ओ झगड़ा दन कऽ सभ के लऽ जाए चाहलक। छौंड़ा-छौंड़ी सभ तऽ ओकरा संग चरडाडा घुरि गेलै, मुदा कपिला नजि गेल। कहलकै — किए, घर खसलाक बाद जखन ओ सभ एक संग ढेकी घर मे दिन कटै छल, दुख कष्टक ठेकान नजि छलै, तखन अधर किए ने आएल ? एखन नव घर उठलैए, रहबाक कोनो दिकदारी नजि, तखन एकरा लोकनि के एइ विपत्ति मे छोड़ि ओ केना जाएत? कुबेर सेहो समर्थन करैत बाजल — हैं, किए जाएत कपिला ओकरा लोकनि के छोड़ि एइ विपत्तिक समय मे ? सत्ते, जान प्राण सँ सभक सेवा-टहल करैत छलै कपिला। बड़ कृतज्ञ भऽ गेल छल कुबेर ओकरा लग। बड़ नीक अइ कपिला। जानि ने किए जे ओकर घरवला ओकरा छोड़ि देलकै।

केतुपुर मे चारि दिन पूजाक ढोल-ढाक बजलै — उत्सव भेलै। मलहटेलीक बुढ़-बच्चा सभ साँझ-परात ठाकुर दर्शन कएलक। केओ-केओ तारी पीबि बेस मतलामी कएलक। शीतल एक दिन एगो देशी शराबक बोतल शेष कऽ रासू के पकड़ि नीक जकाँ पीटि देलक। रासूक उपर ओकर एते तामस किए छलै के जानए।

एक दिन साँझखन लखा के संग लऽ कपिला शेष ठाकुर दर्शन लेल गेल। कने बाद मे कुबेर सेहो दुधरल दुधरल हाजिर। ओ देखलक जे शीतलक संग हँसि-हँसि कऽ कपिला बतिआइए। शीतल भेल बाबू लोकनिक कर्मचारी, पूजाओ बाबूए लोकनिक — भाव भंगी एहन जेना उएह सर्वे-सर्वा हो! किन्तु ओकरा संग हँसि-हँसि एते की गप करैए कपिला ? तकर बाद शीतल परसाद माडि आनि कपिलाक आँचर मे बान्हि दै छइ, कपिला भरि मुह हँसि दैए। एते लोकक बीच कपिलाक एहन निर्लज्ज आचरण देखि तामसे कुबेरक दम अँटकए लगै छइ। ओ हाक दैछ — लखा! चल, घर जाइ। कपिला कहलकै — अएलह ने की माझी ? कने थमहऽ, हमहुँ जाएब, एकबेर मा के परनाम कऽ ली।

कुबेर बाजल — लखा, अएलें रे हरमजादा ?

कपिलाक प्रणाम शेष करैत करैत लखा के संग लऽ कुबेर डेग झारलक।

मुदा कनिजे दूर गेलाक बाद ओकर डेग छोट होमए लगलै। नजि, कपिला लेल ओ नजि घुरत, तखन आस्ते आस्ते चलै मे तऽ कोनो दोष नजि। कपिला आबि जै संग धरै तऽ धरौ। अन्हार भऽ गेल छइ, ओकरा असगर छोड़ि गेनाइ ठीक नजि हैतै। भऽ सकैए जे ओ शीतल के घर पहुँचा दै लेल कहै। एतेय अन्हार रस्ता शीतलक संग संग जाएत कपिला ? ताइ सँ नीक जे बीड़ी किनबाक बहने एही ठाम ठाढ़ रहए कुबेर।

बीड़ी किनैत-किनैत कपिला पहुँचि गेलै। कुबेर मुदा नजि टोकलकै। तीनू गोटे चुपचाप चलए लागल। कपिला जतले आँखि कुबेर दिस तकैछ। अन्हार मे किछु देखाइ नजि पड़ै छइ। जाइत-जाइत भेंट होइ छइ रासू सँ, जुगी के संग लेने ओ ठाकुर देखै जाइ छल।

कपिला जुगी के कहलकै — बहिन, एगो काम करबे, हमर लखा के संग लेने जो ने।

कुबेर आपत्ति करै छइ— किए, लखा कि ठाकुर नजि देखने अइ ?

कपिला कहलकै — छओड़ा-माढ़रि हइ, मन नजि भरल हैतै। तोहर लखा तऽ बुढ़ नजि भऽ गेलह माझी जे एक नजरि देखि हाली-हाली बिदा हेतह घर दिस। जो रे लखा, जुगी मौसी जरे चल जो। बहिन, छौड़ा पर कने खेयाल रखिहें, बड़ बदमास हइ।

मतलब की छइ कपिलाक ? लखा के किए साहि देलक ? किछुओ जेना बुझबा मे नजि अबै। कपिला चुपचाप बाट चलैए, कुबेर मने-मन तमसाइत रहैए। अन्त मे एगो तेतरि गाछक नीचा, जाइठाम बाटक दुर्भेद्य अन्हारक रचना भेल सन लगैछ, हठात् कुबेर सकत सँ कपिलाक आँचर धऽ खीचैत बजैए — शीतल सँ तोहर एते कथीक गप, आँइ ?

कपिला कहलकै — ई की करै छहो माझी ? खुजि कऽ गीर पड़तै जे परसाद। कपिला आँचर छोड़बाक चेष्टा करैए। ओ मिनती करैत कहै छइ, धीया-पुता नाहित नजि करहो माझी, छोड़हो - रस्ता मे ई केहन काण्ड शुरू केलहो ?

बजैत-बजैत कपिला आर आँचर खीचा-तीरी नजि करैए। कुबेर के पँजिया लेने ओ शान्त भेल रहैए। हठात जेना करुण कण्ठे कहै छइ— मन निमन नजि है माझी - छोड़बहो नजि ? मन बेकल अइ।

कुबेर ओकरा छोड़ि दै छइ।

चलैत-चलैत पुछलकै, मन किए बेकल छौ गे कपिला ?

के जनैत छल जे कपिला एहन जवाब दैतै।

सोआमी के मन पड़ैए माझी।

ओ! तकर माने शुरू सँ शेषधरि सभ कपिलाक फाँकी, सभयए छल। एतेकाल ओ रसिकता करैत छल कुबेरक संग। बड़ बेस, रसिकता कुबेरो जनैए।

ओ कपिलाक गाल अँइठि दैछ आ हीं-हीं कऽ हँसए लगैछ। बजैए — सएह कहै कपिला — सएह कहै तऽ। जे सोआमी तोरा छोड़ि देलकौ - दूर कऽ देलकौ - तकरे खातिर मन खराप! तऽ जाइ ने छै किए सोआमीक घर ?

जेबै।

बाजि कपिला हन-हन करैत चलए लगैए।



छओ

ओइ दिन राति मे गोपीक पैरक दरद बेस बड़ि गेलै। ओकरा नवका घर मे आनल गेल छलै। सगर राति ओ छटपट करैत, कुहरैत बितओलक। माला ओकरा माथ लग बैसल जागल रहल। कुबेर सेहो देर राति धरि जगले छल। तकर बाद ओ सुति रहल अबस्से, किन्तु नीक जकाँ निन्न नजि भेलै। भोरहरिया मे उठि कऽ बैसैत ओ आवाज देलक — गोपीक माए ?

जवाब देलकै कपिला — निन्न हइ।

कुबेर उठि लग आबि कहलकै — जो, तोंहू सुतै गऽ कपिला, हम बैसै छी।

कपिला जतले कण्ठ बाजल — बाह रे मरद! राति भरि सुति भोर मे बोलै हए जो कपिला, सुतै गऽ, हम बैसै छी। कौआ डकै हइ, सुनै छहो माझी ?

सएह तऽ फरिच्छ भेल जाइ छइ जे।

झाँप खोलि कुबेर बाहर भेल। गणेशक आडन जा ओकरा हाक दऽ उठओलक। जुगल कालि बहिनीक आडन नोट खेबा लेल आबि राति एतै सुतल छल। ओहो उठि आएल। कुबेर बाजल — गणेश, छौंड़ी के तऽ असपताल लऽ जाए पड़तै। बड़ तकलीफ होइ छइ। रातिभरि चिचिआइत चिचिआइत मरै पर छलै।

गणेश बाजल — हैं ? बैस कुबेर। चिलम पी। असपताल लऽ गेनाइ तऽ आसान काम नजि छइ। केना लऽ जेबही से सोचलै हैं ?

नाओ ए पर ने लऽ जेबै- आर केना ?

सामन्याक समाधान देखि गणेश खुशी होइत बाजल — तब चिन्ता नजि। नाओ जुगलाक नाओ मिलतै — ओ नाओ लऽ कऽ आएलए। देबही नजि जुगला नपान नाओ ?

जुगल खुसी-खुसी नाओ देब स्वीकारलकै। कहलकै जे ओहो संग जेतै। नद बेगी फुलल छइ भरिसक गोपीक पैर। कहाँ चोट लगलै ? पहिने किए ने बेटी के असपताल लऽ गेल कुबेर। पहिने लऽ गेनाइ उचित छलै। से जे होउक, जे आइ असपताल लऽ जाइक होइ तऽ देरी केने की फेदा ? बेर भऽ गेने असपताल मे डाकडरो नजि मिलतै।

एकटा चओड़ा काठक तखता पर सुता, धऽ पकड़ि गोपी के नदी तीर पर लऽ जाएल गेलै। हाथ मे केथरी गेरुआ (बालिस) लेने कपिला संग मे गेलै। एही बीच सगरो मलहटोली ई खबरि पसरि गेलै। गामक कोनो छौंड़ी के असपताल लऽ गेनाइ प्रतिमा विसर्जन सँ छोट बात नजि भेलै मलहटोलीक लोकक लेल। भोरे-भोर नदी तीर पर छोट-छीन भीड़ जमि गेल छलै। प्रश्नक जवाब दैत-दैत कुबेर फिरीसान।

कपिला पहिने नाओपर चढ़ि केथरी ओछ, गेरुआ राखि देलकै। तकर बाद गोपी के उठा कऽ ओइ पर सुता देल गेलै। दरदे आ डरे गोपीक मुह सुखा गेल छइ। असपताल ? जानि ने केहन भयंकर हेतै ओ जगह! के जानए ओइठाम ओकर कोन गति हेतै। कपिलाक एकटा हाथ गसिया कऽ पकड़ने रहल गोपी।

नाओ खोलल जेतै तैखन देखल गेल जे रासू दौड़ल अबैए। किनार पर अबिते ओ फानि कऽ नाओ पर चढ़ि गेल।

कुबेर पुछलकै — की रे रासू ?

रासू हकमैत-हकमैत बाजल — हमहूँ जाएब।

चलओ! एते पैघ नाओ छइ, जगहक अभाव थोड़बे हेतै। बेसी लोक रहने गोपी के चढ़ावै उतारै मे बरु सुभीते हेतै।

महकुमा शहर अमिनबाड़ी — ओहीठाम छइ असपताल। केतुपुर सँ अमिनबाड़ी बेसी दूर नजि छइ, घण्टा तीनेक लगलै पहुँचै मे। रासू के सेहन्ता छलै जे गोपी के घाट सँ असपताल धरि लऽ जेबा मे ओहो हाथ लगाओत, किन्तु तकर प्रयोजन नजि भेलै। सकल के नाओ पर बैसल रहै लेल कहि जुगल उतरि गेल। कनिजे काल बाद ओ कहाँ कतए सँ खोजि एगो पालकी लेने आएल। जुगल कि कम होसियार लोक अइ। पालकी चढ़ि गोपी असपताल गेल।

असपताल मे तखन रोगीक भीड़ लागल छलै। नान्हिय एगो छओड़क फोंसड़ीक आपरेशन होइत छलै, की जे ओकर चीत्कार। से देखि सुनि गोपीक तऽ मुह सुखा गेलै आ ओ गुंगुआए लागल। कुबेरक भिन्ने चेहरा पीअर पड़ि गेलै। थोड़-बहुत सभ भीत ओ संत्रस्त! केवल रासूय अविचलित अइ। मयनाद्वीप सँ पड़ा आबि नोआखालीक असपताल मे ओ पनरह दिन कटने छल- ई ओकर परिचित जगह छइ, ओ सभ के अभय दैत बाजल — कोनो डर नजि, डर कथिक ? सभ ठीक भऽ जेतै।

उएह जा डाकडर के गोपीक हालात कहि नाम धाम लिखा आएल। की गुमान रासूक! कुबेर देखओ जे केहन पकिया लोक अइ ओ। देखि राखओ।

लगभग एगारह बजे डाकडर बाबू आबि गोपीक पैरक परीक्षा कएलनि। परीक्षा कऽ हुनक तामसक ठेकान नजि छल। रासूए छाती तानि-गप करैत छल। ओकरे गोपीक अभिभावक बुझि धमकबैत किछु उठा नजि रखलथिन डाकडर। एतेदिन ओ सभ की करैत छल, बैसल घास कटैत छल ने की ? पहिने नजि आनि भेलै गोपीक कें ? एखन जँ पैर काटि बाद देमए पड़ै ?

आपरेसन टेबुल पर पड़ल गोपी कपिलाक हाथ गसिया कऽ पकड़ने छल। ओ तऽ गोंगिया-गोंगिया कनिते छल बीच-बीच मे कपिला सेहो घना उठबैत आ फेर डाकडरक धमक खा चुप भऽ जाइत। परीक्षा निरीक्षा शेष कऽ डाकडर बड़ भयानक बात कहलथिन — गोपी के राखि जाए पड़तै। ओना ओ इहो कहलथिन जे रखनाइ वा नजि रखनाइ गोपीक बापक मरजी, कोनो जोर जबरदसती नजि छइ।

असपतालक बरण्डा पर परामर्श सभा बैसल। डाकडरक धमकओने रासू उदास छल, ओ फेर कोनो बात नजि बाजल। भऽ सकैए एतेकालक बाद गोपीक हालात जानि सेहो मन खराप भऽ गेल होइ। घर मे गोपी कानए लागल — मौसी गे मौसी, हम अइजग नजि रहबै गे मौसी, हमरा लेने चल। आर बाहर कुबेर, गणेश आ जुगल गम्भीर भेल बतिआए लागल जे आब की कएल जाए। ओना सलाह परामर्शक कोनो मतलब नजि होइ छइ। डाकडर जेना कहलथिन तकर बाद गोपी के नजि रखने उपाय नजि, तैयो ओ सभ अज्ञ ओ डेरबुक, गामक लोक किने, नीक जकाँ सलाह परामर्श बिनु कएने कोनो निर्णय कइए ने सकैछ।

गोपी के महिला वार्ड मे भरती करा देल गेलै। तकर बाद आर ओकरा सभ के गोपी लग रहबाक उपाय नजि छलै। फेर उएह चारि बजे ओ सभ आबि छौड़ी सँ भेंट कऽ सकैछ।

गोपी कपिला के किन्हु नजि छोड़तै। कानि कानि ओ कहए लगलै — मौसी गे मौसी, हमरो लेने चल गे मौसी — हमरा कहाँ छोड़ने जाइ छै ?

चलैत-चलैत ओ सभ नदी घाट पर घुरि गेल। बाट मे थोड़े चूड़ा मुड़ही कीनि लेलक। एते बेर धरि ओ सभ किछु ने खएने छल।

चुपचाप ओ सभ जलखै केलक। आब ? आब ओ सभ की करत ?

जुगल के रुकबाक उपाय नजि छलै। नाओ ओकर भाड़ा ठीक भेल छइ। सकाले देवीगंज जेबाक बात। कुबेर की एखन गाम घुरत ? गामक घाट पर सभ के उतारि जुगल सोझे देवीगंज रमाना देत।

कुबेर कहलकै — तों सभ जो। बेर मे छौड़ी के एकबेर बिनु देखने हम नजि जाएब।

रासू कहलकै — हमहूँ रुकै छी, आँइ ?

कुबेर कहलकै — नजि रासू, तौहू चलि जो। हम अपने कहाँ रहब तकर ठीक नजि — तों रहि की करबै ?

गणेश रहए चाहलक, किन्तु कुबेर तकरो बुझा-सुझा जएबा लेल राजी करओलक। कपिला तऽ अबस्से घुरत तें ओकर रहनाइ वा गेनाइक बाते ने उठलै। कपिला सेहो ने किछु बाजल। किन्तु अन्ततः कपिलाए नाओ पर नजि चढ़ल। ओहो बेरधरि रहत, आर एक खेप गोपी कें बिनु देखने ओ की घुरि सकैछ ? मौसी-मौसी कहि छौड़ी हाकरोस करैत हेतै। केओ ओकरा टस सँ मस नजि कऽ सकल। कुबेर कते कहलकै जे अपने ओ कहाँ रहत तकर कोनो ठीक ठेकाना नजि ताइपर स्त्रीलोक संग मे रहने जे कते असुविधा, कते हंगामा — आ फेर लोके की कहतै ? मुदा कपिला कोनो बात पर कान-पात नजि देलक।

नाओ चलि गेलै।

कुबेर मुह फेरि देखलक, नदीक बसात जेना कपिला के स्पष्ट केने हो। साड़ी देहक संग मिलि गेल छइ। बैगनीए रंगक साड़ी पहीरि कऽ जे आइयो ओ बहराएल अइ से तऽ कुबेर एतेकाल लक्ष्ये नजि कएलक। आब ख्याल पड़ने ओकरा जेना असंतोषक बोध भेलै। कपिला के लऽ कऽ एखन ओ की करत, कहाँ जाएत ? की मतलब छइ कपिलाक ? खगते की छलै ओकर रहबाक ?

की देखै छहो माझी ? कोन सोच मे पड़ल छहो ? कपिला पुछलकै।

तोरा तकर की ? कुबेर बाजल।

पिताइ किए छोहो ? हे उएह देखहक जहाज अबै हइ।

ओहीठाम नदी तीर पर ठाढ़ ओ सभ देखैत रहैए। चक्राकार घुरि जहाज जेटी पर आबि कऽ लगै छइ। आइ कते भीड़ छइ जहाज मे। आइ शेष पूजा छइ, देश-देशान्तरक लोक घर घुरि रहलए। आर कुबेरक भाग देखू, बेटी कै विदेशक एइ असपताल मे छोड़ि हतबुद्धि जकाँ नदीतीर पर ठाढ़ भेल अइ। कहाँ जाएत, की करत तकर ठीक नजि! भौं-भौं करैत जहाज चलि पड़लै। नदीक आलोड़ित पानि ढेउ जकाँ उठि तीर पर पछार खेलक। बेटी लेल एहिना ढेउ उठै कुबेरक मन मे।

हठात् कपिला पुछलकै — माझी, पाइ-कौड़ी अनने छोहो ने ?
हैं।

कते ?

ताइ सँ तोरा कोन काम ?

हमरो लग थोड़े हइ, लगने कहिहऽ। कपिला अपन आँचरक खूँट मे बान्हल कैचा देखओलकै।

कुबेर हैं नजि किछु ने बाजल। जेटी खाली देखि कने कालक बाद ओही पर छाँह मे ओ सभ जा कऽ बैसल। कुबेर कपिला दिस नजि तकैए। एकर बाद एक बीड़ी धरा सोंठैत रहैए — मिनटे-मिनटे बीड़ी पिनहार जेना ओ कोनो पैघ लोक हो।

घुरबऽ केना माझी ? कने काल बाद कपिला पुछलकै।

पता ने! तोहर जे काण्ड-करखाना! तोरा लऽ कऽ जे की करब ?

हमरा लागी फिकिर नजि करहो माझी।

एतेकाल बाद की सोचि कुबेर हैंसल। बड़ अबोध छैं तो कपिला। घरबला सुनतौ तऽ की कहतौ सोचलिही ?

कहौक।

हऽ, कहौक। कलंक किनबाक साध सोलहो आना बुझाइछ कपिलाक। कुबेर गम्भीर भेल मूड़ी हिलबैछ। ई तऽ नीक बात नजि। एक आडन मे जे सभ रहैछ, ओकर सभ के केबल दुर्नाम किनबाक लेल एइठाम एना पड़ल रहबाक कोनो माने नजि होइ छइ। खाली गोपीक लेल की कपिला रहि गेल ? गोपी के ओ एते सिनेह करै छइ के जानए। कपिलाक मन बुझबाक खेमाता भगवान कुबेर के नजि देलखिन।

बेर खसलापर दुनू गोटा असपताल गेल। एइबेर प्रथमे कुबेर के बुझेलै जे कपिला रहि कऽ नीके कएलक। एइ तरहें कपिला जकाँ गोपी के बोल भरोस देल ओकरा बुते कहाँ पार लगितै। तकर अलाबे गोपी के लऽ कऽ डाकडरक जे काण्ड — कपिला नजि रहने साहस कऽ कऽ के रहितै गोपी लग ? गोपीक ठेहुन पर हाड़ैत नजि टुटल छइ, एकटा बेस पैघसन बाँसक कमची पैसि गेल छइ माउसक भीतर। पैर फुलि तकरा अढ़ केने छइ। डाकडर बेरिया मे तकरा खीचि कऽ बहार केलनिहें, तकर बाद जतबादूर धरि सम्भव हाड़ के अपना जगह बैसा — डाँड़ सँ पैर धरि काठक तखता दऽ बैडेज कऽ देलनिहें। कुबेर से सभ नजि देखलक — बाहर बैसि केबल गोपीक आर्तनाद सुनैत रहल।

ओ दुनू जखन असपताल सँ बहरा बाट पर आएल तखन साँझ पड़बा मे बेसी देरी नजि छलै। दूर मे विसर्जनक बाजा बजैत छलै। एखन ओकरा सभ के गामे फिरए पड़तै। एइठाम कहाँ बिताओत राति ? कालि फेर कुबेर आबि गोपी के देखि जेतै। नदी घाट पर जा कुबेर एक-एकटा कऽ नाओ तकलक जे कतौ कोनो चिन्हार माझी भेटि जाइ। चिन्हार माझी दू चारिटा भेटलै अबस्से मुदा आइ विजयाक साँझ मे तऽ केओ नाओ खोलत नजि। देवीगंज दिस जकरा सभ के जेबाक छलै से सभ दिने-देखार चलि गेल छल। तखन गहनाक एगो नाओ खुजतै। कुबेर के मन होइ तऽ भाड़ा दऽ कऽ जा सकैए। नजि तऽ कालि सकाल धरि अपेक्षा करओ, जे कोनो नाओ ने किए केतुपुर दिस जाओ, कुबेर ओइ सँ गाम घुरि सकैए।

कते नाओ जेतै कालि, भाड़ा दऽ कऽ किए जेबहु कुबेर भाइ ? कहैत कोनो चिन्हार माझी कुबेर के अपना नाओ पर राति कटबाक अनुरोध केलकै। केबल चिन्हार माझी किए, पद्मा नदीक माझी अइ ओ, पद्मा नदीक जे कोनो माझीक नाओ पर राति बीच रहबाक अधिकार ओकरा जन्मगत छइ, किन्तु एइठाम राति बितओनाइए जे मोसकिल। कपिलाक संग एकठाम राति काटि कालि ओ गाम मे केना मुह देखाओत ? कोन विपत्ति मे जे धऽ देलकै ओकरा कपिला।

भाड़ा दऽ गहनाक नाओ मे गेनाइ छोड़ि दोसर उपाय नजि। कते भाड़ा लेतै के जानए। पुछला पर गहनाक माझी कहलकै — सोनाखाली होइत किनारे-किनारे ओ सभ देवीगंज जाइछ, पद्मा पार कऽ कऽ कुबेर के ओ सभ केतुपुर मे उतारि दऽ सकै छइ। हासाइलक चओर धरि ओ सभ ई किनार धेने जाएत, कुबेर ओइठाम उतरि सकैए। भाड़ा लगतै माथा पिछु तीन आना।

हासाइलक चओर सँ केतुपुर तीन कोस सँ कम नजि हैतै। राति-बीच कपिला एते दूर चलि सकत वा नजि — सन्देह। कुबेर पुछलकै — की करी कपिला ?

कपिला कहलकै — आइ नहिजे गेली ? कालि बिहाने गोपी के देखि मेला घुरब।

आ रहब कहाँ ? नाओ पर ?

से कि सम्भव छइ ? नाओक माझी गुण्डा ने बदमास - के जनैए। कपिला की नदी घाट पर उदाम नाओ मे सुतल रहि सकत ? उएह तऽ घाटक होटल देखाइ पड़ै छइ ओतै - घर भाड़ा लेल जाए।

आर की करत कुबेर ? दर दाम कऽ छओ आना मे एगो पैघ घरक एक कात करची टाट सँ बेदल कनेटा जगह भाड़ा केलक। दरजा वा झाँप किछु नजि, दुकबा लेल कने फाँक छोड़ि देल गेल छइ। घर मे पँतियानी सँ मोट-मोट पटिया ओछओल - अतिथि लोकनिक रात्रिशयनक व्यवस्था। घेरलाहा जगह एकेगो पटिया मे आच्छन्न। बाहर एगो उदाम घर मे खेबाक व्यवस्था। भनसा घर मे सेहो कएकटा पीढ़ी बैसाओल। घरक माझठाम एगो करिऐल शीशावला लालटेन राखल - बाँकी सभठाम नमका घँटवला डिबिया।

कुबेर जा उदाम घर मे बैसि खा आएल। घरक बाहर लोकदिस पीठ केने आकाशक नीचा बैसि कऽ खेलक कपिला। तकर बाद कुबेर एक पैसाक पान किनि अनलक आ बेदलाहा जगह मे बैसि दुनू पान चिबाबै लागल चुपचाप। दिनभरि कते दौड़-बड़हा झंझट-झमेला गेलैए, दुपहर मे नहेनाइयो नजि भेलै। पेट मे भात पड़लै - आस्ते आस्ते दुनू झुकए लगैए। आर कने राति चढ़ने कुबेर हुलकी दऽ देखैए, किछु लोक कपड़ा माथ तऽर धऽ पटिया पर सुति रहल, कोनो पटिया पर केओ-केओ बैसल चिलम पीबि रहलए।

कुबेर उठि ठाढ़ होइछ, बजैछ - सुत कपिला।

तौ कहाँ जाइ छहो ?

जाएब कहाँ ? ओइ पटिया पर जा कऽ सुतै छी।

डेराएल दबले कंठे कपिला कहै छइ — नजि, नजि जाहो माझी।

कुबेर की तमसा जाइए ? जोर सँ पुछै छइ — तऽ की करू हम ?

डेरैबै माझी।

आर की करत कुबेर, फेर ओ पटिया पर बैसि जाइए। कपिला अपन चद्दरि के नुड़िया ओकरा गेडुआ बना दै छइ। ओकरा अपन माथ तर देबा लेल एगो चटुआ छइ। कुबेर के सुति रहने कपिला अपन केश खोलि ओकरा आडुर सँ

सरिअबैत-सरिअबैत बजैए — गोपी लागी परान उड़ल अइ माझी। छौंड़ी डरे भरिसक कनैत-कनैत परान तेजने हेतै।

बुझना जाइछ जे कपिला कनैए।

की जानि कहियाधरि छौंड़ी नीक हेतै आ घर घुरतै। बिहान ओकरा छोड़ि केना घुरबै माझी ?

कुबेर काठ भेल पड़ल रहैए। एइठाम कपिला कनैए, गाम पर भऽ सकैए कनैत होएत माला। बाट दिस तकैत की जानि कते की सोचैत होएत। आर गोपी की करैत होएत से जेना सोचलो ने जाइ छइ।

दोसर दिन भोरक पहिने निन्न टुटलै कपिलाक। ओ हाफी करैत उठि बैसल। हिला डोला कऽ कुबेर के उठओलक। टाटीक बाहर रातुक अतिथि सभ एखनो फाँफ कटैत, खाली होटलक मालिक बाहर दुआरि लग मटियातेलक काठक वक्सा पर बैसल चिलम पीबैत। भनसा घर मे खवासिन चूल्हक छाउर बहार करैत छलै। सुतल कुकूर कपिला के देखिते उठि ठाढ़ भऽ नाडड़ि पटपटबए लागल।

मृदु मधुर शीत पड़लैए। कुबेरक चद्दरि पहिरि पहिने कपिला नदी मे डूब दऽ आएलि। तकर बाद नहाए लेल गेल कुबेर। कुबेर के घुरि आएबाधरि कपिला, ओइ बेदला जगह मे नुकाएल छलि। पुरुषक नजरिक आइ बड़ लाज होइ छइ कपिला के। दिनक इजोत मे ओकरा बुझाइ छइ जे दुनियौंभरिक लोक जनैए जे जकरा लग ओ राति मे सुतल छलि से ओकर घरबला नजि छइ।

मुरही आर बतासा किनि कुबेर घुरि आएल। दु फाँका फाँकि कपिला बाजलि जे आर ओ नजि खाएत। नजि खाओ, कुबेरक अपने पेट मे बड़ जगह छइ। आस्ते-आस्ते मुरही बतासा शेष करैत ओ बाजल - चल कपिला, जाइ असपताल।

रौद तखन उठले छलै। एते सकाल ओ सभ गोपी सँ भेंट नजि कऽ सकल। नओ बजे धरि असपताल मे बैसल रहए पड़लै। तकर बाद घण्टाभरि गोपी लग बैसि, ओकरा बोल भरोस दऽ घाटपर धुरि आएल। जहरक सार नुरुलक नाओ काठक बोझ उतारि देवीगंज फिरल जाइत छलै - ताही नाओ पर ओ सभ उठि बैसल।

गामक घाटपर नाओ सँ उतरि कुबेर बाजल — तौ आडन जो कपिला, हम कने गणेश लग सँ भेल अबै छी।

आडन मे जे झड़-झमेला, कन्ना-रोहटि हेतै तकर पहिल झाँट कपिलेक उपर

दऽ जाओ। कपिला किन्तु असगर आडन जाए लेल राजी नजि भेलै - खोंझाईत कहलकै - बाहरे मरदबा!

तखन आर किछु नजि बाजि कुबेर हन-हन करैत घरमुहा बिदा भेल। पछुआ गेलि कपिला। बाट मे जकरे सँ भेंट होइ सएह उत्सुकता सँ गोपीक मादे पुछै - मुह घुमा परिहास, मुह झाँपि हँसनाइ, कटु वचन किछुओ ककरो सँ नजि प्राप्त भेलै कुबेर के। एहन की सुनाम छलै गाम मे कुबेरक जे कपिलाक संग अनजान जगह मे राति बिंतओलाक बादो से सुनाम अक्षत अम्लान छइ ? की बात छइ ? चलैत-चलैत हठात् कुबेर के मन पड़लै, दुइए गोय तऽ नजि, गोपी लऽ कऽ तऽ तीन गोय ने भेल। गामक लोक तऽ ओकरा आ कपिला के होटल मे करची टाट सँ बेढल निर्जन जगह मे रहबाक कल्पना नजि ने केने हेतै - गोपी के सेहो ओकरा लोकनिक संग होएबाक बात सोचने होएतैक। तँ ककरो मन मे संदेहक अवकाश नजि।

कुबेर ठाढ़ भेल। बाजल - देख कपिला, केओ पुछने कहियही जे राति असपताले मे रही, गोपी लग।

कपिला मुह चमकबैत कहलकै - दूर हो! फुसि बात हमरा बोलऽ नजि आबै छऽ माझी।

एतबा कहि कने पहिने जेना कुबेर चलै छल तहिना हन-हन करैत कपिला अगुआ गेलि। के जानए की छइ कपिलाक मन मे! मना नजि मानि कालियो अमिनबाड़ी मे रहि गेल, आइ मना नजि मानि साँच बात बाजए चाहैए। बाजओ। पुरुष मानुस अइ कुबेर, ओकरा कथिक डर ? कपिलाक सत्यवादिताक फल जँ ककरो भोगए पड़तै तऽ से भोगत ओ अपने।

आडन जा कुबेर देखलक जे माला लग बैसि कपिला विस्तार सँ अमिनबाड़ीक गप कहि रहलए। कातक चटइ पर ओ बैसि रहल। माला के सभ किछु कहि देतै ने की कपिला! होटल मे राति बीच रहबाक बातो ? कपिला कहैत जाइत छइ साँझखन जे केहन विपत्ति मे ओ सभ पड़ल छल। असपताल मे रहए नजि देलकै, घुरि कऽ आएल तऽ नाओ सेहो नजि, आब जाओ तऽ कहाँ जाओ। शेष मे एक मुखतार बाबू दया कऽ कऽ ओकरा लोकनि के आश्रय देलथिन। की नाम छलै मुखतार बाबूक माझी ? मुह फेरि कपिला कुबेर सँ पुछलकै।

कुबेर थतमत करैत बाजल- की जानि ?

पुछलहो नजि ?

कुबेर मूड़ी हिलओलक।

दू दिन गोपी के देखए गेनाइ नजि पार लगलै। जीविका उपार्जन मे व्यस्त गल रहल कुबेर। तेसर दिन भोरे माला शुरू कऽ देलकै - बाप रे बाप, केहन कठोर कुबेरक हिरदे! छौंड़ी के जे ओ कहाँ राखि आएलए, आर की ओकर खोजो-खबार नजि लेल जेतै ? जिनगी भरि लेल की छोड़ि अएलैए छौंड़ी के ? एना जे निफिकरि भेल अइ कुबेर ?

भरि राति मछबारि कऽ कुबेर तखने आडन घुरल छल। खा-पीबि दुपहर मे ओ रमाना होएबाक बचन दऽ माला के शान्त कएलक। तकर बाद सुतै लेल गल पीसीक घर। सुति उठि नहा कऽ आबि ओ टेढ़ आँखिए कपिला दिस देखैत रहल। की जानि कपिला आइ संग जाए चाहत वा नजि ? कपिला किछुओ ने बजैए - एक बेर सोझा आबि फेर अन्तर्धान भऽ जाइछ।

खाए लेल बैसि कुबेर कहै छइ, खेलाक बाद अमिनबाड़ी रमाना हेबै कपिला। आइ नजि घुरबहो ?

पता ने! भऽ सकैछ जे होटले मे रही।

होटल मे किए ? रहिहऽ, मुखतार बाबूक ओइजग रहिहऽ।

बाजि कपिला हँसैछ। लाजे माथ झुकओने खाइत रहैए कुबेर। न, कपिलाक मनक थाह पाएब कुबेरक बश नजि। ओ कखन की बाजत कखन की करत, किछुओ अन्दाज नजि लगाओल जा सकैछ।

खा-उठि कुबेर अपन मैलहा चद्दरि देह पर लऽ जएबा लेल तैयार भेल। बड़ गम्भीर भऽ गेल अइ ओ, जेना ओकर कोनो पैघ अपमान भेल होइ जे होएबाक नजि चाहैत छलै। बड़ कठोर अइ कपिला, बड़ दुर्बोध ओकर व्यवहार।

विदा होएबाकाल कुबेर के चारि आना कैचा दैत कपिला कहलकै - गोपी के फल कीनि दिअहो माझी। तकर बाद माला दिस घुरि पुछलकै - माझी जरे जइयौ दीदी ?

माला कहलकै - तोरा जाइके कोन काम ?

तकर बाद कपिला उदास भेल बिहुँसैत कुबेर दिस ताकि पुछलक - माझी की बोलै छहो ?

कुबेर मूड़ी हिला झटपट बहार भऽ गेल। अमिनबाड़ी ओ पहुँचल बेरखन। कपिलाक देल पाइ सँ ओ स्टीमर घाट पर समतोला किनलक आर फेर गेल गोपी के देखै लेल। नदी तीर पर ओ घुरि आएल साँझखन। आइ गाम घुरबाक नाओक अभाव नजि, तैयो जानि ने किए कुबेर के घुरबाक मन नजि होइ छलै। बड़ी राति

धरि नदी तीर पर बैसल रहि ओ भात खएबा लेल होटल पहुँचल। खाइत काल ओ सुनलक जे बजार मे आइ भसान यात्रा होइ छइ। आइ कुबेरक संग नजि रहने ककरो डर नजि हैतै। खा-उठि ओ बजार दिस डेग बढ़ओलक।

बजार मे टीनक छाओनीक नीचा जाइठाम तर-तरकारीक दोकान बैसै छइ ओही ठाम यात्राक आसर लागल रहै। बेश लोकक जुटन। कुबेर एक कात मे बैसि रहल। पान बीड़ीक दोकान छोड़ि एते राति मे के आन-चीजक दोकान सजओने रहत। वेश्या सभ सेहो आएलए यात्रा सुनै लेल। पेसादार कोनो दल नजि छइ आलू-पेयाजु, नून-तेल बेचनिहार लोक सभक सौखीन दल। कतेको तऽ प्रायः पढ़ी-लिखी ने जनैए, एकरा-ओकरा सँ पढ़ा कऽ सुनि सुनि पार्ट मुखस्थ कएने होएत। कतेको केँ कठिन शब्दक तऽ उच्चारणो ने कएल होइत छइ। शब्द के तोड़ि-मरोड़ि कऽ तेना बजैछ जे हास्यास्पद भऽ जाइ छइ, कथ्य आ साधु भाषाक जेना एक अपरूप खिचचरि। पोशाक परिच्छेदक जेहने अभाव तेहने अभिनेता निर्वाचनक बुद्धिक। बालक लखीन्दर लग ओकरा सँ हाथभरि नम्मा बेहुला निर्विकार भावे पार्ट बजैए। आबाज पातर होएबाक कारणे आर चर्मकार मौगियाही अभिनय कऽ सकैए सोचि ओकरा बेहुलाक रोल देल गेलैए - आर किछु देखबाक प्रयोजन नजि।

तैयो राति जागि लोक सभ भसान यात्रा देखैए— एकबेर नजि, अनेको बेर। टुटल हारमोनियम आ फुटल तबलाक संगत, मशालक लाल इजोत, आलू-पेयाजु बेचैवला, नून-तेल बेचैवला अभिनेता, तैयो एइ यात्रा लेल केहन आकर्षण। कुबेर धीर भेल बैसल रहैछ। आस्ते-आस्ते अभिनय चलैत रहै छइ, मा मनसा एगो गीत गबै छथि, चाँद सौदागर दूय बात बजैए। मुइल लखीन्दर उठि एगो गीत गाबि फेर मरि जाइए। कखन केना कोन दृश्यक आरम्भ होइ छइ, साँपक काटल लखीन्दर लेल बेहुलाक बहुल विलापक पश्चात् फेर मा मनसा किए गीत गाबि-गाबि चाँद सौदागर के डेरबैत छथि जे हुनकर पूजा नजि देने लखीन्दर के साँप कटतै - से सभ बुझबाक प्रयोजन नजि पड़ै छइ। कुबेर मन सँ यात्रा सुनैए। रातिक शेष मे यात्रा शेष भेने पेयाजुक जाइ खलिया बोरापर ओ बैसल छल ताही पर सुति रहैए। किन्तु बेसी सुतबाक सुयोग ओकरा नजि भेटै छइ। सकाल होबए सँ पहिने ओकरा ठेलि ठालि उठा देल जाइत छइ। ओइठाम आब दोकान लागत।

बेस देरी सँ ओ गाम घुरैछ। देखैए जे आडन मे पाहुन आएल छइ। कपिलाक स्वामी श्यामादास।

पद्यानदी नम्मा-चओड़ा जुआन लोक, घेंठधरि झुलैत माथक बाबरी-केश, पद्यानदी नाकक नीचा एक जोरा उद्धत मोछ - खम्ह मे ओंगठि ओकर बैसबाक गाम भंगी देखि बुझना जाइछ जेना विश्व ब्रह्माण्ड मे ओ ककरो परबाहि नजि कोत हो। कुबेर उदास भऽ जाइए। की जानि किए आएलए श्यामादास!

श्यामादासक अएबाक उद्देश्य जनबा मे बेसी विलम्ब नजि भेलै। ओकर गामही स्त्री मरि गेलै। ओ कपिला के लऽ जाएत। कखन जाएत ? बेर खसला पर कखनो विदा भऽ सकैए - ताइ लेल की ? कुबेर जँ अबदार कऽ एकदिन रहि जाए लेल कहै - श्यामादास के ताइ मे आपत्ति नजि होएतै।

बैसल-बैसल ओ सभ गप-शप करैत रहैए। एक समय कपिला आबि पद्यानदीक कान मे की सभ खानगी बात कहलक फिसफिस कऽ फेर हँसैत चलि गेल। पीसीक घर मे दुकबा सँ पहिने उनटिक कऽ आँखि नचा एगो दुर्बोध्य इशारा ओ केलक।

एते अबेर कऽ कुबेर घर घुरलए, कपिला तऽ एकोबेर खएबाक बात नजि कहलकै ? तऽ की कुबेरक भूख पियासक बात मन रखबाक प्रयोजन नजि रहलै कपिला केँ ? गोपीक बातो तऽ ओ नजि पुछलकै ?

आइ कुबेरक देहक चाम बड़ रुक्ख लगै छलै। कते दिन सँ तेल नजि लगओने छल। श्यामादास आएल छइ तँ बुझाइए आइ फेर कपिला चपचप कऽ नारिकेरक तेल लेलकए। करिया एकटा सीसी मे विलासिताक ई उपकरण कपिला सदा सर्वदा तैयार रखैए। कोनो उपलक्ष भेने माथ पर सीसी उनटि लैए। श्यामादास के बैसय लेल कहि कुबेर कपिला सँ कने तेल मडलकै। कपिला की केलक, तीमने रन्हबाक तेलवला बाँसक माली लेने आएल आ कहलकै — लैह माझी, हाथ ओरऽ। कुबेरक हाथ ओरने ओ उपरे सँ माली उनटा देलकै - कुबेरक हाथ मे एको ठोप तेल नजि खसलै।

कपिला बाजल दैया रे दैया, तेल तऽ छिते ने हइ। बाजि की हँसी कपिलाक!

कुबेर किछुओ ने बाजल। बाँसक माली ओकरा हाथ सँ छीनि ओइ दुपहरिया मे भुखले पियासले गामक दोकान सँ दू पाइक तेल कीनि अनलक। ओसारा पर बैसि कपिला के देखा-देखा बड़ी काल धरि सगरो देह रगड़ि-रगड़ि ओ तेल मालिस केलक। अपना देह के जेना ओहो कपिलाक केशे सन चपचप बना कऽ छोड़त।

ओइदिन दिन भरि ओ कपिलाक संग बात नजि कएलक।

किन्तु साँझक बाद माछ मारै लेल जाइत काल ओ पीनीक गोला लेब बिसरि

गेल। नाओ पर जा असगरे ओ प्रतीक्षा मे बैसल छल तैखन गणेश ओ धनंजय आबि योग देलकै - तकर बाद मृदु ज्योत्स्ना मे पद्माक रहस्यमय वक्षपर नाओ भासि गेल, किन्तु पीनी पहुँचाबै लेल केओ ने अएलै।

प्रात भेने कपिला के संग लऽ श्यामादास चल गेल।



सात

हिलसाक समय शेष भऽ गेलै। धनंजयक तीन गोटे नाओ हिलसा माछ पकड़बाक काज मे लगाओल गेल छलै। एकटा नाओ पर ओ अपने रहैत छल आ बाँकी दूटा पर रहैत छलै ओकर दुनू बेटा। आसिनक अन्हार मे एगो नाओ टूटि गेलै। आब एगो नाओ ओ रखलक माछ पकड़ै लेल आ दोसर लगओलक भाड़ा खटबाक काज मे। बेटा दुनू माछ धरतै आ अपने ओ एकटा लोकक संग नाओ खेबत।

कुबेर के धनंजय पसिन नजि करै छइ। गणेश के ओ अपन नाओक माझी बनै लेल कहलकै। किन्तु गणेश एहन बोका जे से गेल पुछै लेल, सलाह लेबै लेल कुबेर लग।

कुबेर खिसिया कऽ कहलकै - जो- जो, खटै गऽ अजान का'क नाओ पर। हमरा किए पुछै छै ? अजान का... बेसी अपन ने तोहर ?

कुबेरक अनुमोदन नजि केने जे बात हेबाक नजि - धनंजय के गणेश कहि आएल जे ओकरा नाओ पर ओ असगरे माझीगिरी नजि करत। कुबेर यदि करै तखने ओहो करत ने तऽ नजि। सुनि धनंजय कहलकै - जो मर गऽ तखन। पचास गो माझी राखब हम, कलबला (इंजनबला) जहाज बुझि लेलै ने की ?

गणेश से नजि जानए। चिरकाल ओ कुबेरक बात पर निर्भर कऽ आएलए। नाओ कलबला होइ वा खेबैबला, कुबेर जाइठाम नजि गणेशो ताइठाम नजि। कुबेरक

ओसारा पर बैस ओ निश्चिन्त मने चिलम सोंटए लागल, आ गम्भीर चिन्तित कुबेर सोचए लागल जे आब ओ की करत। करत ओ माझीगिरीए ताइ मे संदेह नजि, तैयो गम्भीर चिन्तित सन हाव-भावक संग आन किछु करबाक मादे सोचनाइ ओकरा सभ दिन नीक लगै छइ। कपिला के चल गेलाक बाद कुबेरक अभाव क्रमशः बढ़लैए। घरक लक्ष्मी जेना चल गेल होइ कपिलाक संग, पूर्णरूपे जेना ओकर भूखक निवृत्ति आर होइते ने होइक। समय सेहो खरापे जाइ छइ। चीज वस्तुक दाम चढ़ल जाइ छइ। बरिसकालक एकटा फसिल नष्ट भऽ गेलै। पटुआक खेतीक चलते आमन धानक फसिलो कमे भेलैए। चासी (खेतिहर) लोकनिक घर मे धान नजि, कैचा-कौड़ी नजि, छइ खाली पटुआ- कुबेरक घर मे तऽ सेहो नजि। पटुआ पर चासीक अनिश्चित जीवन मरन, कुबेरक जीवन धारण सुनिश्चित माझीगिरी पर, सेहो ठीक सँ जुटिते ने छइ। कुबेर के यदि एगो नाओ रहितै। पद्याक घाटे-घाटे ओ तखन अबस्से अपन जीविका जुट लैत, आनक नाओ पर लग्गा चलेबाक भरोसे बैसल नजि रहैत।

आइ कालि भोरखन कऽ नदीवक्ष पर पसरल रहैछ कतिका कुहेस, यदिओ अगहन आबि गेल छइ। पानि तर सँ माथ उठओलकए बाट-घाट कतौ-कतौ रबी-राइक पेंपी हुलकी दैछ, कतौ-कतौ बीया बोओगे कएल गेलए। राति मे कने-मने ठण्ढा पड़ै छइ, देहपर कपड़ा लेबए पड़ै छइ।

कुबेरक मन बड़ खराप छइ। किछु नीक नजि लगै छइ। गोपी असपताल सँ घुरि एलैए। ओकर टुटलाहा टाड सकवत् भऽ गेल छइ, ओ चलि नजि पबैए। भविष्य मे फेर कतौ हाड़ तोड़ि ठीक कऽ देने भऽ सकैछ ओ नडड़ाइत-नडड़ाइत चलि सकए, चलनाइ ओकर कोनो दिन स्वाभाविक नजि हैतै। जुगल के जमाए बनेबाक आशा आर नजि। छौंड़ी के बियाह देबाक आ ताइ बावद किछु पेबाक भरोसो शेष।

कोन उपाय हैतै गोपीक ?

रासू बीच-बीच मे अबै छइ। गोपीक अवस्था देखि जे ओ बड़ दुखी अइ से नीक जकाँ बुझल जाइछ। गोपीक ठेहुनक भविष्यक मादे डाकडर की कहलकैए से ओ खोधि-खोधि कऽ पुछैत रहै छइ। एक-एक दिन ओ अपनो दाबि-दुबि परीक्षा करैए। कते सावधानी सँ जे ओ गोपीक ठेहुन छुबैत रहैछ।

एमहर माला हठात् रासू के वेश खातिर केनाइ शुरू केलकए। जुगल भेल अवस्थापन्न लोक, गोपी दिस ओ आर घुरियो कऽ ने ताकत। चार-चूल्हि विहीन रासू सम्भव छइ गोपी के ग्रहण करए।

बड़ असमंजस मे पड़ल अइ रासू। आइ ओ चाहने सहजे गोपी के पाबि सकैछ। एको पाइ दहेजो ने देबए पड़तै। किन्तु ओ की एही गोपी के पसिन केने छल, एइ पंगु छौंड़ी के ? नाडड़ माला के लऽ घर बसओने अइ कुबेर, दुखी नजि अइ ओ। गरीबीक कारणे ओ अबस्से कष्ट पबैए किन्तु पारिवारिक जीवन ओकर कामना करै योग छइ। गोपीक संग भऽ सकैछ ओहो एहने सुखी संसार बसा सकए। तैयो मन ओकर आगू पाछु करै छइ। नडड़ी बहु! सम्भव छइ जे जीवन मे कोनो दिन ओ ठाढ़ नजि भऽ पबै। जँ उठबो करतै तऽ लाठी भऽ नडड़ाइत चलतै। पैरक पंगुत्वक कारणे भऽ सकैए जे ओकर देहो ने भरै आ चिरकाल कुत्सित देखाइ।

शेष पर्यन्त गोपीक पैरक अवस्था केना की रहै छइ से देखि निर्णय लेबा लेल प्रतीक्षा केनाइयो विपत्ति जनक। असपतालक डाकडर जँ टाड पहिले सन कऽ दइ ? मुइल लोक के डाकडर बचा लै छइ। एगो टूटल टाड ठीक केनाइ ओकरा लेल असम्भव नजि छइ। तखन रासू के की कुबेर जमाए बनाबए चाहत। अपसोच कऽ कऽ मरए पड़तै रासू के तखन।

ठीक भऽ जेतै से बात नजि बजलै डाकडर ? रासू पुछै छइ।

हऽ, कुबेर जवाब दै छइ।

किन्तु ई बात रासू विश्वास नजि कऽ पबैए। गोपीक पैर जे किछु दिन मे ठीक भऽ जेतै, रासू के से विश्वास दिएबाक तत्त बेसी आग्रह देखबैए कुबेर जे रासूक मन मे संदेह पैसि जाइ छइ।

हठात् एक दिन ओ अमिनबाड़ी चलि जाइए। असपताल जा पुछताछ करैए—कहै छइ जे ओ गोपीक अपन लोक अइ, कोनो तरहँ की गोपीक पैर पहिने जकाँ नजि कएल जा सकै छइ ? डाकडरक सामने कलजोड़ि ठाढ़ भेल रहैए। ओ जेना गोपीक कते दुखी, कते आकुल आत्मीय हो।

नजि, गोपीक दरदी सम्बन्धी के तेहन कोनो भरोस नजि दऽ पओलथिन डाकडर।

रासू उदास मने गाम घुरि आएल। फेर ओ देखए गेल गोपी के। जड़कालाक कुहेस सन उदास लगै छइ छौंड़ी के, रोगाएल-ट्टाएल मुह मे दू गोट आँखि दपदप करैत। एगो खढ़क आँटी पर टुटलाहा टाड राखि ओछाएन पर ओंघराएल पड़ल।

रासू ममता बोध करैए। मयनाद्वीप मे एक-एक कऽ स्त्री-पुत्र के हेरा जाइ निष्ठुर बेदना सँ ओकर हृदय विदीर्ण भऽ गेल छलै, तेहन बेदना लाख-लाख स्त्री-

पुत्र के हेरओनहु आर कोनो दिन ओ अनुभव नजि करत - गोपीक टाङ देखि मनटा मात्र केनादन करए लगै छइ।

एक दिन सकाले होसेन मियाँ कुबेरक ओइठाम आएल। बिहुँसैत पुछलकै - काम नै मिललऽ कुबेर भाइ ? कुबेर माथ हिलबैत बाजल - नजि।

होसेन बाजल - जान उपछ के तोरा आर के चाहै छी, कैसे अच्छा कर सकबऽ सेहे सोचैत रहली। काम करिहऽ हमरे साथ ?

कुबेर मने-मन डेरा गेल। की मतलब छइ होसेन मियाँक! उपकरि कऽ काम देबए चाहैए किए ? होसेन मियाँक उपकार लेने अन्ततः मंगल नजि, कुबेर से बात नीक जकाँ जनैए। कोन स्वार्थ सिद्ध करै लेल होसेन के जे कखन ककर प्रयोजन होइ छइ सएह खाली केओ ने जनैए। कुबेर सोचलक, नजि होसेन मियाँक नाओ पर ओ काज नजि करत। किन्तु से बात बाजल नजि जा सकैछ। ओकर मृदु मुसकी भरल मुह दिस ताकि जते डर होइ छइ कुबेर के, ओही डरक वशीभूत भऽ ओकरे भरि पाँज कऽ धरबाक खगता बोध ततबे बेसी। ओना आइधरि ओ एकर कोनो अपकारो नजि केलकैए - बरन् उपकार केलकैए ढेर बेसी।

कुबेर बलहु आग्रह देखबैत बाजल जे होसेन मियाँक नाओ पर काम पओने ओ बाँचि जाएत। ओ जेना जनैत नजि छल जे कुबेर राजी भऽ जाएत, होसेन मियाँ तहिना खुसी भऽ गेल। मानुस वश करैक कते कएदा जे ओ जनैए! कुबेर के कोन काज करए पड़तै कते की ओ पाओत ताइ सभ बातक कोनो चर्च नजि भेलै। होसेन खाली कहलकै जे बीच-बीच मे कुबेर के दस पन्द्रह दिन लेल घर-आडन छोड़ि जाए पड़तै - जाए पड़तै पद्माक दूरतम बन्दरगाह पर, जतए-जतए होसेन मियाँक बेबसाए छइ। कथिक बेबसाए होसेन मियाँक ? से के जनैए। से प्रश्न के करतै ? कुबेर खाली हामी भरैत गेल— ओकरा आपत्ति नजि छइ। सपरिवार मयनाद्वीन गेनाइ छोड़ि जहाँ जाए लेल कहौ कुबेर तहाँ जाएत, जे करै लेल कहौ सएह करत। बदला मे जीविकाय भेटक चाही।

कुबेर के गणेशक बात मन पड़ै छलै। एकरे खातिर ओ धनंजय नाओ पर असगरे काज करब नजि गछलक। आइ गणेश के छोड़ि होसेन मियाँक नाओ पर एकरा काज लेनाइ की उचित हेतै ? कुबेर उकस पाकस करैए। गणेशक बात जेना ठोरधरि आबि अँटक जाइ छइ, बाजि नजि पबैए। दोस्ती निमाहै मे जँ अपने काज फसकि जाइ! तकर अतिरिक्त ओकरा संग गणेशो होसेन मियाँक खप्पर मे पड़ओ से कुबेर के पसिन नजि।

तैयो गणेशोक कोनो उपाय हेबाक चाही। कुबेर सेप घोटैत पुछलकै — गणेश के नजि लऽ सकै छी मियाँ भाइ ? ओ बलगर अइ, पकिया माझी अइ गणेश। बुद्धि कने भोथ अबस्से छइ किन्तु मलहटोली मे ओकरा जकाँ लग्गा ठेलब आ पतबार खेबब आन ककरो बुते नजि पार लगतै।

होसेन कहलकै — बजा अनिहऽ गणेश के।

अखिनते ?

हैं, जा। बा-चित कैए जाइ।

कुबेर अनिच्छाक संग उठि गेल। होसेन मियाँ के असगर घर मे छोड़ि जाइत ओकरा भरोस नजि होइ छलै। गणेश के लेने घुरला पर ओ देखलक, एही बीच खबरि पाबि अमिनुद्दी आबि होसेन मियाँक बगल मे बैसल अइ। अमिनुद्दी के देखि चिन्हले ने जाइ छइ। इएह कए दिन पहिने जहरक बेटाक संग ओ अपन बेटी के बियाहने छल। स्त्री-पुत्रक अपमृत्युक पश्चात् एना धड़फड़ कऽ बेटीक बियाह लेल सभ मना केने छलै, मुदा ओ ककरो बात नजि मानलक। जे कने-मने बन्धन छलै, अधीर भऽ ताइ सँ मुक्त भऽ गेल। आब ओ की करत से उएहय जनैए।

कुबेर के देखि अमिनुद्दी बाजल — मयनाद्वीप जा रहल छियौ कुबेर, कहल-सुनल माफ करिहे - मन मे कुच्छो ने रखिहे।

मयनाद्वीप जाइ छऽ ? किए ?

तऽ आर कहाँ जेबै ?

कुबेर आ गणेश विह्वल भेल अमिनुद्दी दिस तकैत रहल। अपन सभ किछु हेरा रासू एक दिन मयनाद्वीप सँ घुरि आएल छल, एइठाम अपन सभ किछु हेरा अमिनुद्दी आइ मयनाद्वीप जा रहलए। अमिनुद्दी के लऽ जेबा लेल होसेन बहुत दिन सँ चेष्टा करैत छल, एतेदिनक बाद ओकर मनकामना पूरा भेलै। होसेनक कोनो इच्छाए की अपूर्ण रहबाक नजि ? डरे ओ सभ होसेन मियाँ दिस ताकि नजि पबैए। बुझाइ छइ जेना आसिन मासक अन्हर नजि, होसेन मियाँ स्वयं आमक गाछ खसा अमिनुद्दीक कुटीर चूर-चूर कऽ देने छलै। लोक सभ बजै छइ जे केओ-केओ भूत-प्रेत पोसने रहै छइ। होसेनो पोसने अइ वा नजि के जनैए। एक दिन जे ओ होसेन मियाँक जेबी सँ पाइ चोरओने छल जे बात मन पड़िते जेना ओकर छाती धड़कऽ लगै छइ। जकर एहन अलौकिक शक्ति छइ से कि चोरीक बात नजि जनने होएत ? घरक चार नजि, सम्भव छइ जे होसेनक पोसा अशरीरी

शक्ति ओइ दिन गोपीक पैर तोड़ि देने होइ। आइन मे नजि रहबाक कारणे कुबेर बाँचि गेल। मेघौन अमावस्याक अन्हार सन अतल कुसंस्कार उमड़ि-घुमड़ि किछु कालक लेल कुबेरक मन के आछत्र कएने रहै छइ।

कनेकाल बाद अमिनुद्दी उठि गेल। तखन होसेन कुबेर आ गणेश के बुझबाक चेष्टा केलक, मयनाद्वीप गेने अमिनुद्दीक नीके हैतै। एइठाम ओ दुख शोक मे डूबल रहत, ताइ सँ ओइठाम जा फेर सँ बियाह दान कऽ घर संसार बसेनाइ की नीक नजि हैतै ओकरा लेल ? मयनाद्वीप कि पहिने सन छइ ? आइ कालि जंगल साफ भऽ ओइठाम एखन नगर बसल छइ।

होसेन मियाँक चल गेलाक बाद कुबेर आ गणेश बड़ी कालधरि बैसल बतिआइत रहल। भविष्यक मारिते रास जल्पना कल्पना। चाकरी पाबि दुनू खुसी भेल। देबा-लेबा लेल होसेन मियाँ कंजूस नजि अइ। कहाँ-कहाँ जाए पड़तै, लगी ठेलनाइ छोड़ि आर की-की करए पड़तै - एखन ओकरा सभ के तकरे चिन्ता।

किछु दिनक बाद होसेन मियाँक बजाहटि एलै।

कुबेर आ गणेश सबेर सकाल खा-पीबि नदी घाट पर हाजिर भेल। घाट पर होसेन मियाँक एगो बड़की नाओ बान्हल छलै। नाओ पर आर दू गो माझी बैसल छलै - ओहो सभ हिन्दू। होसेन मियाँक व्यवस्था नीक छइ। एके नाओ पर हिन्दू आ मुसलमान माझी रहने ओकरा सभक भानस-भात, खेनाइ पीनाइ मे असुविधा हैतै तँ ओ अपन तीनटा नाओ मे सँ दूटा पर अगबे मुसलमान माझी रखने अइ आ एइ नाओपर रखलकए हिन्दू माझी। ओइ दुनू माझीक नाम छइ शम्भू आ बगा।

ओइ समय नदी मे कने मने कुहेस छलै। ओकरा लोकनि के करुआरि धरै लेल कहि होसेन पतवार धेलक। नाओ चलल देवीगंज दिस। देवीगंज मे होसेन उतरि गेल। घण्टाभरि बाद आबि ओ कुबेर के लग बजओलक। कहलकै जे कलकत्ता सँ बीड़ीक चलान एलैए तकरा नाओ पर अमिनबाड़ी पहुँचा देबए पड़तै। ओइठाम गिरिधारी साहाक गद्दी मे खबरि देने ओ सभ माल उतारि कऽ लऽ जेतै, तकर बाद कुबेर नाओ लऽ घुरि आओत केतुपुर। दोसर आदेश नजि भेटब धरि नाओ केतुपुर मे बान्हल रहतै।

सभ के संग लऽ होसेन रेलक माल गोदाम गेल। टाका दऽ माल खलास केलक, कुबेरक हाथ मे तीनटा टाका दैत चुपचाप जेटीपर जे स्टीमर बान्हल छलै सोझै ताइपर चढ़ि गेल।

होसेन मुह सँ किछु नजि कहलकै तैयो ककरो बुझबा मे भाडठ नजि रहलै जे समस्त भार ओ कुबेर के देने गेलैए। कुबेर आगूक सभ व्यवस्था करत। पहिने तऽ कुबेर एकदम सँ अभिभूत भऽ गेल, ई केहन सम्मान ओकर, की सौभाग्य। एते पैघ एगो नाओ, तीन-तीनटा जबरदस्त माझी, तीन-चारि सए टाकाक माल - एइ समस्त किछुक उपर असगर ओकरे कर्तृत्वक अधिकार। सभक बटखरचाक टाका पर्यन्त होसेन मियाँ ओकरे जिम्मा लगा गेलैए।

माल उठबै लेल कहैत जेना कुबेर के बकारे ने फुटलै। डेराइते ओ एकबेर सभक मुह दिस तकलक। होसेन मियाँक पक्षपात सँ पता ने ओ सभ कते खिसिआएल हैतै।

तकर बाद कुबेर चुपचाप एगो पैकिंग केस उठा लेलक। शम्भु पुछलकै - जलपानी नजि देबही कुबेर ?

कुबेर जैतले कण्ठ बाजल - पहिने माल नाओ पर लदा गेने नजि हैतै ?

से हैतै। धीरे-सुस्ते ओ सभ बीड़ीक केस सभ नाओ पर लादए लागल। काज मे ककरो जेना अंगे ने लगैत होइ। काज सँ बेसी गप कऽ कऽ कुबेरक संग अपनैती जमेबाक चेष्टा ओकरा लोकनिक अधिक। एकेटा केस राखि आबि बगा कुबेर लग एगो बीड़ी दाबी कऽ बैसल। ओकरा सभक देखादेखी गणेशो जेना देह नेरा देलक। कुबेर मने-मन विरक्त भऽ उठल मुदा मुह सँ किछु बजबाक साहस नजि भेलै।

माल बोझाइ भऽ गेलाक पश्चात् कुबेर चूड़ा-गुड़ कीनि सभ के देलकै। बैसल-बैसल तेना आराम सँ ओ सभ चूड़ा चिबबए लागल जेना आजुक लेल समस्त काज शेष कऽ लेने हो। नाओ खुजलाक बादो ओकरा लोकनिक शिथिलता नजि घटलै। तेना ने करुआरि चलबैत छल जेना सक्के ने लगैत होइ।

कुबेर बाजल - कने अंग लगा कऽ काज करै जाह, हाथ चलाबह।

शम्भु बाजल - किए ?

कुबेर साहस कऽ क कहलकै - किए की ? अमिनबाड़ी जाइ मे कि भरि दिन लगा देबहक ? होसेन मियाँ सुनने की कहत ?

शम्भु बाजल - होसेन मियाँ किए सुनतै ?

बाजि शम्भु हँसल। करुआरि पकड़ि छाती फुलबैत बाजल - होसेन मियाँक डर होइ छऽ ने कि कुबेर भाइ ?

कुबेरक परिचय एतेकाल ओ सभ पाबि गेल अइ। आब ओकरा सरदार कऽ केओ ने मानतै, संगबे जकाँ बात करतै। कुबेर बड़ उदास भऽ जाइए। कते पैघ पद पर होसेन मियाँ एकरा बैसा गेल छलै - ई एते जल्दी तकरा गमा बैसल। पहिने-पहिने जखन ओ सभ खातिर करैत अपनैती जमेबाक चेष्टा केने छलै, तखने कने दूरत्व बना राखि चलने नीक होइतै। गणेश पर्यन्त ओकरा लोकनिक संग मिलि एकरा सँ ठगू करैत छइ।

रोआब सँ बाजत ने की ? डर देखाओत ? ओ सभ निश्चिते खिसिया जेतै, किन्तु ताइ सँ एकर की बिगड़तै ? स्वयं होसेन मियाँक निर्वाचित प्रतिनिधि अइ कुबेर। तैयो ई जोर सँ नजि बाजि पबैए। ई जे किछु कहै छइ, सभ हँसि कऽ उड़ा दै छइ। नाओ आस्ते-आस्ते आगू बढ़ैए।

अमिनबाड़ी पहुँचै मे बेर खसि पड़लै। गिरिधारी साहाक दोकान मे खबरि तऽ अबस्से देल गेलै किन्तु माल खलास करै लेल ओइदिन केओ अएलै नजि। राति मे होटल मे खा कुबेर नाओपर सुति रहल। शम्भु ओ बगाक संग जा गणेश शहर मे जे कतऽ राति बितओलक से बेर-बेर पुछलो पर नजि पता चललै। तीनू आदमी रसिकता करैत हँसए लागल। मने मन बेस खिसिया गेल कुबेर। ई की तमासा गनेसिया ओकरा संग करै छइ ? जे बोकबा आजीवन ओकर खुसामद करैत रहलै, संग दोषे एकेदिन मे एना बिगड़ि गेलै ?

कने दिन उठला पर दोकानक लोक आबि माल लऽ गेलै। कुबेर आर देरी नजि कऽ नाओ खोलि देलक। केतुपुरक लगीच अएने दूरे सँ घाटपर होसेन मियाँक सभ सँ बड़का नाओ बान्हल देखाइ पड़लै। देखिते कुबेरक मुह सुखा गेलै। एते देरी हेबाक कारणे जानि ने होसेन मियाँ की कहतै! शम्भु ओ बगा सेहो हठात् काजुल ओ आज्ञाकारी बनि गेलै। घाटक लग अबिते झप-झप करुआरि चलबए लागल। नाओक गति बढ़ि गेलै।

होसेन मियाँ नाओक सामने बैसल चिलम पीबैत छल। छतरीक भीतर माटिक मुस्त सन उदास बएस चालिसेक एक पुरुष, दू गोटा माझ बएसी स्त्री आ तीनटा छोँड़ा-छोँड़ी बैसल छल। देखला सँ लगै छल कोनो मुसलमान परिवार। कुबेर ओकरा लोकनि के नजि चिन्हि पओलक। होसेन मियाँक कुटुम परिवार जे नजि छइ से सहजे बुझल जा सकैए। फाटल चीटल, मैल-कुचैल कपड़ा पहिरने, दुबर पातर देह, सुखाएल मुह - गरीबीक चिरपरिचित छाप।

डराइते कुबेर होसेन मियाँ दिस तकलक, किन्तु होसेन मियाँ विरक्तिक

मिसियोभरि लक्षण बिनु देखओने अपन दाढ़ी सहलबैत केवल एक बेर पुछलकै - माल खलास हो गेलऽ ?

कुबेर रसीद ओकरा हाथ कऽ दै छइ। तकर बाद एक टका दस आना घुरबैत कहलकै जे बाटक खर्च बाबत एक टका छओ आना लगलैए। एतबा कहैत ओ फटाफट हिसाब जोड़ओनाइ आरम्भ करैए। बेसी नजि, तीनटाका मे सँ ओ मात्र दू आना चोरि कएने छल, तैयो ओकर छाती धड़कए लगैत छइ। होसेन बिहुँसैत कहै छइ - रुकऽ भाइ, रुकै - हिसाब दिहे ने बाद मे।

से दिन छुट्टी।

कालि फेर जाए पड़तै।

एइ बेर लगपास कतौ नजि, एकदम सँ चाँदपुरो सँ आगाँ मेघनाक मोहाना दिस। गन्तव्य स्थानक निस्तुकी होसेन नजि केलकै। कुबेरक पुछलापर बिहुँसैत जवाब देलकै - धड़फड़ी कथिक! चाँदपुर जा कुबेर सिकड़ी फेकओ, ठीक समय पर स्वयं होसेन पहुँचि नाओक भार लेत; कहि देतै जे कोन बाटे चलतै नाओ ओ कतए जा अन्त हेतै यात्राक।

एइ बेर माल नजि, मानुस यात्री। होसेनक नाओ सँ जे मुसलमान परिवार आएलए - उएह सभ।

कुबेर आ गणेश कते दिन मे घर घुरत से कहल नजि जा सकैछ। घरक खरचा-वरचा दऽ जेबा लेल होसेन दुनू गोटा के पाँच गो कऽ टका देलकै।

घर घुरतीकाल कुबेर गणेशक संग कोनो बात नजि केलक। गणेशक उपर बड़ तमसाएल अइ ओ। गणेश संग-संग चलैत अलाए-बलाए बजैत रहैए मुदा कुबेर चुप्पी सधने रहैछ, ओकरा दिस तकबो ने करैए। गणेशक मोट बुद्धि, कुबेर जे तमसाएल छइ से आभास ओकरा भेलै ठीक घर लग पहुँचि कऽ।

आभास होइते ओ उदास भऽ बाजल— पिताएल छऽ ने कुबेर भाइ ?

कुबेर कहलकै - जो-जो आडन जो, बेकार बकतूति किए करै छै।

कहैत ओ हन-हन करैत अगुआ गेल। भुखाएल रहबाक कारणे गणेश तखन तऽ आडन चल गेल मुदा खा-पीबि तुरन्ते हाजिर भेल कुबेर लग। कुबेर किछु ने बजैए, घुरियो ने तकैछ। गणेश सोचि-बिचारि चिलम साजि दू-एक-दम खीचैत ओकरा कुबेर दिस बढ़बैत बाजल धर' कुबेर भाइ।

कुबेर हुक्का लऽ लेलक किन्तु तैयो किछु बाजल नजि।

असमंजस में पड़ल गणेश कान-कान सन मुह भेल बाजल - इएह होइ कुबेर भाइ, आँइ ? ठीक छइ जाइ छी हम - नजि एबऽ फेनू।

तखन ओकरा क्षमा करैत कुबेर पुछलकै- कालि राति कहाँ छलै ?

प्रश्न सुनिते गणेश भभा कऽ हँसि देलक। फेर फिस-फिस कऽ बाजल - बड़ चलाक मौगी कुबेर भाइ, की जे गीत गबैए।

पिरीत केलिए पागल भेलिए सखी, आ गे सखी।

कुबेर कहलकै - दूर हो अभगला, चलितर खराप भेल छौ, आँइ ? किए गेल छलै ?

गणेश प्रतिवाद करैत बाजल- चलितर खराप माने ? गीत सुनै मे कोन दोष छइ ?

टाटीक पाछु सँ माला भरिसक सुनै छलै, कहलकै - एक बेर फेनो कहाँक तऽ माझी। फेनो कहाँ गीत।

कुबेर दमसबैत कहलकै - चुप रहौ, गीत सुनै के काम नजि छइ।

कने कालक बाद चाँदपुर यात्राक बात उठलै। टाटीक अढ़ सँ हाथ पर भर दऽ घुसकैत बहरा कऽ माला लग आएलि। मुसलमान परिवार के होसेन मियाँ जे कहाँ लऽ जएतै तकर अनुमान सभ लगा चुकल छल। के जानए कोन गाम सँ ओकरा लोकनि केँ पकड़ि अनलकए होसेन मियाँ! केओ किछु सिखा देतै सोचि ओकरा लोकनि केँ नाओ सँ उतरौटा नजि देलकै। आदमी सोझ नजि अइ होसेन मियाँ! मरओ गऽ, एकरा सभ के की ? ई सभ भेल माझी, पाइ दऽ जे केओ लग्गी ठेलए कहतै तकरे हुकुम मानि पद्मा मे नाओ भसा देत। मनुख होइ वा माल, नाओ मे की छइ से जनबाक दरकार नजि।

बेर मे गणेशक खोज मे उलुपी अएलै, कहलकै जे जुगल आएलए।

की खबरि जुगलक ?

सात दिनक बाद ओकर बियाह। चारि कूड़ी टाका काटर दऽ सोनाखालीक रूपसी कन्या के ओ घर अनेए।

नीके बात। आनओ। कुबेर के की! आसिनक अन्हर बिहारि मे ओकर सभ आशा-भरसे उड़िया गेलै। चारि कूड़ी टाकाक भाग ओकर रहितै तऽ आनक नाओ पर लग्गी ठेलि, माछ पकड़ि मरबे किए करैत जिनगीभरि।

उलुपी अपसोच करैत बाजलि - एहन कपार गोपीक। एक बरिस सबुर नजि रहलै, पैर तोड़ि लाडऽ भऽ गेल। कते पाप कएने छलि पूरुब जनम मे के जानए।

कुबेर कहलकै - किए जुगला छोड़ि आर लोक नजि छइ देश मे ?

उलुपी मुह चमकबैत बाजलि - के बियाहतै लेडऽ छौंड़ी के ?

कुबेर क्रुद्ध दृष्टिजे उलुपी दिस तकलक, बाजल नजि किछुओ।

ओइदिन राति मे फेर हठात् गोपीक टाङ मे दर्द उपकलै। छौंड़ी की सहजे निस्तार नजि देतै ? भरिसक अधलाह समय मे जनम भेल छलै ओकर! भोर-भोर जखन कुबेर आडन सँ बहार भेल, गोपी दरदे कनैत छलै। बैसल रहबाक उपाय नजि छलै कुबेर के। बेर बसात भेने तमाकूक पात आनि टाङ मे बान्हि देबाक बात कहि, बाट मे गणेश के हाक दैत उदास मने ओ नदी तीर पर हाजिर भेल।

होसेन तखन घाट पर नजि पहुँचल छलै। शम्भु ओ बगा तखने उठल छल, हाफि करैत छल। छाओनी मे मुसलमान परिवार ओहिना मुरुत जकाँ बैसल। राति मे की ओ सभ सुतबो ने कएलक ? मूड़ी सँ पैरधरि चद्दरि ओढ़ने आर एक गोटा के बैसल छइ नाओ पर! कपड़ाक पोटरी राखै लेल नाओ पर उठिते कुबेर ओकरा चिन्हि गेलै। अमिनुद्दी।

हमरे आर जरे जेबहो ने कि अमिनुद्दी भाइ ?

हैं।

बेटी कनै नजि छऽ ?

अमिनुद्दी गछलकै - हैं। कनैत रहलै।

दूरक बाद, नाओक रस्सी, लग्गी, करुआरि सभ परीक्षा कऽ कऽ देखलक कुबेर। एगो तखता लऽ कऽ भीतर कते पानि उठल छलै से नपलक। किछु जारनि, पीनी, नारिकेरक खोइआ, चाउर दालि, तेल, नून, दूटा पितरिया हाँड़ी, दू गोटा लोहिया, कएकटा कसकुटक लोटकी कालिए संग्रह कऽ कऽ राखल गेल छलै - सभ वस्तुक तदारुकी केलक कुबेर। दायित्व की थोड़ छइ ओकर। एतै पैघ अभियानक जे परिचालक अइ ओ।

तदारुकी शेष कऽ कुबेर बैसि कऽ एगो बीड़ी धरओलक आ ध्यान सँ देखए लागल छाओनीक भीतरक परिवार के। केहन मनमरु जे देखाइ छइ ओकरा सभ के सकालक मद्धिम इजोत मे! ककरो मुह मे बकार नजि। सभ जेना चिन्तित हो,

डरे सकदम। धीया-पुता पर्यन्त मे जीवनक स्पन्दन नजि! गाम छोड़ि, देश छोड़ि निरुद्देश्य यात्राक विषाद ओकरा सभ के आच्छन्न कएने छइ।

कने कालक बाद कुबेर पुरुषलोक के पुछलकै — नाम की मियाँ ?

ओ नहुए सँ बाजल — रसूल।

घर कहाँ ?

मालूक चर।

बात करैत ओकरा नीक नजि लगैत छइ जानि कुबेर चुप भऽ गेल।

होसेन मियाँक अबैत-अबैत चारुकात इजोत भऽ गेल छलै। तैखन मलहटेलीक अनेको लोक घाट पर आबि हाजिर। उलुपी आएलए काँखतर कलसी दबने। घरबला के विदा कऽ ओ पानि भरि घर घुसत। लखा ओ चण्डी अबिते कुबेर सँ एगो कऽ पाइ मडने छलै, नजि भेटने दुनू मुह लटकओने ठाढ़ अइ। विदा होएबा काल बाप सँ एहन निष्ठुर व्यवहारक ओ सभ आशा नजि कएने छल। रासू सेहो आबि नाओपर उठि बैसल अइ। एहिना ओहो एक दिन सकाले मयनाद्वीपक उद्देशे रमाना भेल छल। किन्तु से बात भरिसक आइ रासू के मन नजि छइ। निर्विकार चित्ते ओ होसेन मियाँ सँ बीड़ी माडि धूमपान करैए। उपकरि कऽ बेर बेर कुबेर के सुनबैए जे ओकरा चिन्ता करबाक प्रयोजन नजि छइ, ओकर गरहाजिरी मे सभक देखभाल ई करत। कहियाधरि घुरबह माझी ? तकर कोनो ठीक नजि ? कोनो बात नजि, रासू जखन गाम अइ-घर परिवार लेल कोन चिन्ता कुबेर के ?

नाओ खुजनिहि हो। कुबेर के बटखर्चाक पाइ दऽ होसेन मियाँ अपने नाओ सँ उतरि गेल। टाकाक रकम कुबेर के अवाक कऽ देलकै - की दरिया दिल होसेन मियाँ! कुबेर के ओना डरो भेलै। एतेरास टाका सम्हारि कऽ राखब, हिसाब कऽ कऽ खरचा करब - ई सभ ओते असान काज नजि। सभ सँ अस्वस्तिक बात ई जे टाका हाथ पड़िते ओ सोच-मे पड़ि गेल जे तीन टाका मे सँ यदि दू आना अपना लेल बचाओल जा सकैछ तऽ एतेरास टाका मे सँ कते बचाओल जा सकैछ ? कालि सँ रहि-रहि कऽ ओ इएह बात सोचै छल - सोचै छल जे एइबेर कते टाका होसेन ओकरा हाथ कऽ देतै, बटखर्चाक टाका ककरो अनका हाथ तऽ ने दऽ देतै - तेहो आशंका जे नजि छलै से बात नजि। आइ टाका पाबि ओ किछु कालक लेल अभिभूत भेल रहल। एते विश्वास होसेन के छइ ओकरा पर ? होसेन मियाँ सन लोको के ओ फाँकी दऽ पओलक से सोचि कने गर्व सेहो होइ छइ ओकरा अपना पर। नू, लोक ओहो सर्वशक्तिमान नजि अइ।

कुबेर ई नजि जनै छल जे तीन टाका मे दू आना सँ बेसी फाँकी देबाक साहस ओकरा नजि छइ से जानिए कऽ होसेन मियाँ ओकरा विश्वास करै छइ। पाँच गो टाका कुबेर कोनो दिन चोरी नजि कऽ पाओत। खाली साहसेक अभाव नजि, दू आना बेर जे विवेक ओकर चुप्पी सधने छलै, पाँच टाका बेर उएह गरजए लगतै।

टाका सभ डौड़ मे खोंसि कुबेर लखा ओ चण्डी दिस तकलक। तकर बाद दू गो पैसा ओ फेकि देलक छओड़ा सभ दिस। पैसा उठा दुनू पलेभरि मे अदृश्य भऽ गेल।

एहने समय देखल गेल हबो— डकार एगो छौड़ी घाटदिस दौड़ल अबैए। ओकरा देखिते नाओ पर बैसल अमिनुद्दी कछमछाए लागल। होसेन कहलकै - नाओ खोल कुबेर।

शम्भु खुट्टी सँ नाओक डोड़ी खोलि ओकरा पकड़ने ठाढ़ छल, ओ फानि कऽ नाओपर चढ़ि गेल। अमिनुद्दीक बेटी जखन घाट पर एकदम सँ पानिक किनार लग आबि ठाढ़ भेलै, नाओ ता ससरि गेल छलै। बापजान-बापजान कहैत व्याकुल भेल छौड़ी तेना ने चिचिआए लगलै से बुझि पड़ै जे नदी मे कूदि पड़तै। उलुपी छोड़ि घाट पर दोसर कोनो स्त्रीगण छलैक नजि जे ओकरा पकड़ितै। उलुपी काँखतर कलसी लेने पानि लेबए आएलए, अमिनुद्दीक बेटी के ओकरा छुबाक उपाय नजि छइ। किन्तु एखन से बात विचारबाक समय नजि। उएह छौड़ी के पँजिया कऽ रखलकै। अमिनुद्दी चिकरि-चिकरि बेटी के कहए लगलै जे ओ घुरि आओत, दू दिनक बाद ओ निश्चिते घुरि आओत।

बसात सिंहकै छलै। शम्भु ओ बगा पाल उठा देलकै। तकर बाद केतुपुर घाट दूर सँ दूरतर होइत अदृश्य भऽ गेलै। कुबेर अमिनुद्दीक लग जा पुछलकै - बेटी के कहि कऽ नजि आएल रहक ?

अमिनुद्दी मूड़ी डोला देलकै।

करुआरि चलेबाक प्रयोजन नजि छलै, आस्ते-आस्ते बसातक गति बढ़लै आ पाल फुलि गेलै। कुबेर तखन निश्चिन्त भऽ बैसि अपन राजपाट ओ प्रजावर्ग दिस ताकि देखए लागल। विशाल राज-बैसबाक, सुतबाक स्थानक अभाव नजि, केबल प्रजागण सुखी नजि। माझबएसी महिला - खोज लऽ कुबेर जानि पओलक जे ओ रसूलक बहिन छइ, विदा हेबा सँ पहिनहि कानब आरम्भ कएने छल। कते गाम ओ सभ पार कऽ आएलए किन्तु एखनो रहि रहि कऽ आँखि पोछैए।

दिन चढ़ए लागल छलै। कुबेर सकल के पनपिआइ बाँटि देलकै। अडना सँ बहार हेबाकाल मन केनादन करै छलै, एखन तते खराप नजि लगै छैइ कुबेर के। नदी सँ ओकरा बड़ सिनेह छइ। नदीक वक्ष पर भासैत चलबा सन सुख दोसर नजि। एकक बाद एक कतेरास लंच ओ स्टीमर दूनू कात दऽ डेड सिरजैत अगुआ जाइ छइ आ आगुक नाओ सभ पछुआ जाइछ। नदीक एकटा छोड़ि दोसर तटरेखा कतौ नजि। कतौ नदीक दोसर तीरक गाछ बाँस सभ अस्पष्ट देखाइ दै छइ। काक चील पक्षी सभ लगातार पानि मे झपट्टा मारैछ। बगुला सभ एखन एकक शिकारी - साँझन हेंज बनाओत। स्टीमर, नाओ, भकौआ जल मे, अकास मे चिड़ै-चुनमुनी ओ मेघ भासल जाइए। तीर दिस तकने बुझि पड़छै जेना पानिक सीमा मे माटिक तीर भूमियो मंथर गतिजे चलि रहल हो पाछै-पाछै।

तैयो नदी छोड़ि सभ किछुक बहुलता। अकासक रंगीन मेघ ओ भासमान चिड़ै, दरकल तीरक शुभ्र कासफूल ओ श्यामल तरुलता, नदी वक्षपर जीवनक संचालन, ई सभ किछु यदि नहियो रहए तैयो एइ विशाल एकाभिमुखी जल स्रोत के पद्माक माझी जीवन भरि सिनेह करत। मानवी प्रियाक यौवन सभ दिन नजि रहैछ, मुदा पद्मा तऽ चिरयौवना थिक। वैचित्र्य ? तकर की प्रयोजन ? के खोजैए नव पिरथी, के चाहैए पद्माक रूप रंगक परिवर्तन, केबल भासल जएबाक अतिरिक्त मोह!

सकाल मे सनगर बसात छलै, तकर बाद बसात दिसा परिवर्तन कएलक। ताइ सँ कोनो तेहन विशेष असुविधा नजि भेलै। करूआरि चलएबा मे कोनो कष्ट नजि। नदीक स्रोत अपनहि नाओ के ठेलने लेने चलैछ। पता चलतै घुरती मे, स्रोतक विपरीत नाओ ठेलबा मे दम तऽ बहार हैतै — एखन ने आरामे आराम।

दुपहर मे नाओ लगा भानस-भातक आयोजन कएल गेल। दू गोठ चूल्हि खुनि दूटा हाँडी मे भात चढ़ाओल गेल। लगेक एक गाम सँ आनल गेल तरकारी। अपना सभ लेल भानसक भार कुबेरक उपर छलै। पासहि भानस करैत रसूलक बहिन नसीबन के देखि कुबेर मने-मन अपसोच कएलक। सोचलक मुसलमानक रान्हल खएबा मे कोन दोष, ऊँच भूमिक गाम मे जेसभ जमीन जोति गुजर करैछ तकरा सभ मे रहौक धर्मक भेद-भाव, पद्मा नदीक सकल माझी— तऽ एकेधर्मक। गणेश, शम्भु ओ बगा संग मे नजि रहने कुबेर असगर लेल थोड़बे भानस करए बैसैत।

खएला पीलाक बाद फेर नाओ चलल। राति नओ-दसक लगभग नदीक किनारेक सुषुप्त एक गामक लग ओइ दिनक लेल यात्रा स्थगित कएल गेल।

तेसर दिन बेरिया भेटलै पद्मा ओ मेघनाक संगम। एइठाम नदी सागरे सन पारापारहीन। साँझ मे विलम्ब नजि देखि कुबेर नाओ बन्हलक। एमहर ओ पहिनहु आएल छल तथापि नदी नीक जकाँ चिहल नजि छलै। साँझक बाद नाओ चलेबाक ओकरा साहस नजि भेलै।

तकर परात चाँदपुर मे नाओ लागल।

नीके ना एतेदूर आबि जेबाक आनन्द जेना कुबेरक मन मे समाइते ने छलै। आब होसेन मियाँ के आबि गेने ओ पूरा निश्चिन्त भऽ सकैए। जहाज घाट पर स्टीमर लगने यात्री लोकनिक बहरेबाक मुह लग जा ठाढ़ भेल रहैछ कुबेर। मोटा-चोटा लेने देश-विदेशक कतेको महिला-पुरुष ओकर सोझा दऽ रेल टीशन दिस चलि जाइछ। कुबेरक उत्सुक आँखि तकैए होसेन के। समस्त यात्री के उतरि गेलाक बादो किछु खन ओ ठाढ़ भेल रहैछ।

होसेन आएल तीन दिनक बाद। रातुक स्टीमर सँ। बाट हैरैत-हैरैत कुबेर अस्थिर भऽ उठल छल। होसेन के देखिते ओकर समस्त अस्थिरता आलोपित भऽ गेलै। निर्भय, निश्चिन्त, रहस्यमय, सदानन्द मानुसक संग-साहचर्ये समस्त उत्तेजना पलहि मे शमित भऽ जाइछ। कठिन कार्य साधन करबाक गर्व, आगामी कर्तव्य पालनक चिन्ता, किछुओ अवशिष्ट नजि रहैछ। से सरिपहुँ। कुबेर के नीके ना चाँदपुर नजि पहुँचनहु होसेन के कोनो फर्क नजि पड़ितै। ओ बिहुँसैत कहितै, दरिया मे नाओ डुबा अएलह कुबेर भाइ ? नीके कएलह!

होसेन नाओ पर आबि बैसल। सब केओ ओकरा घेरि लेलकै। छौनी मे बैसल नसीबन ओ रसूलक बीबी घोघतर सँ देखए लागलि। होसेन पर नजरि पड़िते आर घोघ तानि लेलक।

विहुँसैत होसेन सबहक कुशल-क्षेम पुछलकै। दाढ़ी पर हाथ फेरैत कौतुक करैत रसूलक छओ बखक बेटी के बीबीजान कहि संबोधित करैछ। अमिनुद्दी के बेटीक समाचार पुछला पर कहै छइ जे ओकरा ई बहाल तबियत घरक काज-उदेम करैत देखि आएलए। से ने कि दुश्मन कहि होसेन के मारिते गारि देलकै।

अमिनुद्दीक आँखि डबडबा जाइ छइ। अल्ला जाने मियाँ, फिरबाक उमेद नजि सोचि मन केनादन करैए।

होसेन कहै छइ फिर चाहने बाजऽ मियाँ, कल्हे जहाज पकड़ा देबऽ। नाखुस रहने काहे जेबऽ।

अमिनुद्दी किछु ने बजैए खाली माथ हिला दैछ।

तब काल तोरा सबहक निकाह करा दी।

अमिनुद्दी अकचकाइत बजैछ कल्हे किए ? मयनाद्वीप मे ने- दू मासक बाद !

होसेन बाजल — मयना द्वीप मे मोल्ला कहाँ मिलत। राज-बाड़ीक अजीज साहेब कहै छथ जे मयनाद्वीप मे सए आदमी आ एगो मसजिद भेने आ हिन्नु के जमीन नजि देने ओ जा कऽ रहि सकै छथ। से नजि पार लागत मियाँ। हिन्नु नजि लेने मानुस कहाँ मिलत। हिन्नु लऽ गेने मसजिद नजि बनाएब। केना बनाएब कहऽ। मुसलमान मसजिद बनाएत, हिन्नु बनाएत मन्दिर। नजि मियाँ, हमरा द्वीप मे से सब सम्भव नजि।

सब केओ अभिभूत भेल सुनैत रहैछ। होसेनक मुहे मयनाद्वीपक कथा कुबेर कहियो ने सुनने छल। आइ होसेनक मुहे सब सुनैए जे ओइ द्वीप खातिर ओकरा कते दरद छइ। नीलाम मे द्वीप किनलाक बाद ओइठाम जनपद बसेबाक ओ सपना देखैए। जिनगी मे ओकर आर कोनो दोसर उदेस नजि, कामना नजि। हजार-डेढ़ हजार लोक ओइठाम चलत-फिरत, कतौ कोनो कोन मे बिगहोभरि जमीन पड़ल नजि रहतै - मरबाक पहिने ओ एतबेय देखि जाए चाहैछ। ओ कते धन आ समय व्यय केलकए एइ द्वीपक पाछै। मयनाद्वीपक भूत सबार नजि भेने आइ ओ कतेक पैघ लोक भेल रहैत। एक संग ओकर एतेरास लाभक धंधा चलि रहल छइ से सोचिते अल्लाक करुणाक परिचय पाबि माथ झुकि जाइ छइ। मयनाद्वीप मे सबठाम एकदिन निश्चित मानव जीवनक प्रवाह बहत सोचि जे काज मे होसेन हाथ दैछ, खोदाताला तकरा सफल कऽ दै छथिन। टका-पैसा नजि रहने एहन कठिन काज केना सम्पन्न कएल पार लगितै ?

की कहै छऽ रसूल, निकाह भऽ जाइ काल ?

रसूल बाजल — हम की कहिअ मियाँ, तोरे जे मन होअ।

होसेन कहलकै — बहिन की कहै छऽ, पुछहक।

रसूल छौनी मे जा बतियाँ आएल। नसीबनक मत छइ। अमिनुद्दी गुमसुम बैसल रहैछ। मने-मन की जेना सोचैत रहैछ बन्दरगाहक आलोकमाला दिस देखैत। कुबेर चकित भेल होसेनक हरेक भाव-भंगिमा लक्ष्य करैछ। की प्रतिभा लोकक, केहन मनक जोर ! जतए जते थाकल-हारल लोक पबैए, समेटि बटोरि अपन द्वीप मे बसओने जाइछ। राज्यस्थापन आ प्रजावृद्धिक ओरियाओन दिस वेश सजग दृष्टि ओकर। होसेनक उद्देशे भरिसक सएह छइ। अमिनुद्दी सन जीवन-युद्ध मे

शात-विक्षत, आशा-उत्साहहीन लोकक असल मे ओकरा प्रयोजन नजि। ओ सब एकर द्वीप के नव-नव नर-नारी सँ भरि दैतै — ई तकरे प्रतीक्षा मे अइ।

देर राति होसेन विदा लेलक। तखन नाओ पर जल्पना-कल्पनाक अंत नजि। प्रथम विस्मय कटलाक बाद अमिनुद्दीक संग सब हास-परिहास जोड़ि दैलक। मजाक करबा मे बड़ ओस्ताद अइ शम्भु। ओकर एक-एकटा बात पर नाओ मे हँसीक फुहारा उड़ए लगलै। छौनीक भीतर रमणी दुनू पर्यन्त बीच-बीच मे खिलखिला कऽ हँसैत आँचर सँ मुह झाँपए लागलि।

दोसर दिन अमिनुद्दीक संग नसीबनक निकाह भऽ गेलै। तकर बादक दिन खेती-बारीक सरंजाम, तीन-चारि बोरा आलू, एक कनस्तर सरिसोक तेल, काठक एगो बकसा भरती नून, कएकय सस्ता बिलेती कम्बल, एक मोटा कपड़ा-लत्ता आदि अजस्र जिनिस-पत्र सँ होसेन नाओ भरि दैलक।

रातिक शेष भोर होइते बाजल — नाओ खोल कुबेर भाइ।

कोन दिस जेबै मियाँ भाइ ?

होसेन बाजल — समुन्दर !

दिनभरि एही तीर धेने नाओ चललै। केतुपुरक पद्मा मे जे नाओ कुबेर के विशाल बुझाइ छलै, एखन से केराक कोसा सन लगै छइ। दोसर दिन बेर मे नोआखाली जिलाक नारिकेरक गाछ सँ भरल तीरभूमि लग नाओ बान्हल गेल। एमहर कुबेर कहियो ने आएल छल, विस्मयक संग ओ होसेन के पुछलकै, समुन्दर कि इएह छइ ? होसेन एगो नकसा बहार केलक। आडुर दऽ दऽ ओ कुबेर के मेघनाक मोहानाक द्वीप सब देखाबए लागल - सिद्धिद्वीप, विदौद्वीप, सन्दीप, हातिया प्रभृति। आर पश्चिम मे मानपुरद्वीप, दक्षिण शाबाजपुर, बन्दोरा द्वीप। आर ओ जे छोट-छोट बुनका सब देखल जाइछ, बाइस नम्बर मोटका लाइनक उपर, ओ सब भेल मानिक द्वीप समूह। चिन्हि पबैए कुबेर ? आर ओमहर पूब-पश्चिमक बाइस नम्बर लाइन आ उत्तर-दक्षिणक एकानबे नम्बर लाइन जाइ बुनका सँ एक दोसर के अतिक्रमण करैछ, ताही बुनकाक कने उत्तर-पूब मे ओ जे एगो हरियर बुनका देखल जाइछ, तकरे नाम छइ मयनाद्वीप। कुबेर जनैछ जे ओकरे नाम छइ मयनाद्वीप ! आर घण्टा दसेक नाओ खेबने ओ सब नोआखालीक तीरभूमि के छोड़ि पाओत, तकर बाद हातिया दहिना राखि धन-मानिक द्वीप आ बाबनाबाद द्वीपक संयोग रेखाक संग बेयालिस डिग्री कोण बनओने पूब-दक्षिण दिस नाओ खेबने भरिदिन मे मयनाद्वीप पहुँचल जा सकैछ।

कुबेर के नीक जकाँ बुझै मे नजि अबै छइ। ओ हौं केने रेखा ओ आखर सब दिस देखैत रहैए। बीच-बीच मे दिअर आ पानिक अन्तर तेना देखाओल गेल छइ जे ओ किछुओ ने बुझि पबैए।

होसेन मियाँ जे केहन दक्ष नाविक अइ से दिक - चिन्हहीन समुद्र-वक्ष पर ओकर नाओ परिचालन के देखि सहजे बुझल जा सकैछ। नाओक छऽ गोट माझी डाँड़ धेने रहल। दिनान्त मे रक्तिम सूर्य समुद्रक अगम जल मे डूबि गेल। पूब मे वेश दूर पर करिया बुनका सन एगो द्वीप छोड़ि केवल आकाश आ जलराशि देखाइत छलै। रातियो मे डाँड़ चलओनाइ बन्न नजि। पार लगा कऽ दू-दू गोटे के दू घण्टा विश्रामक अवकाश। अपने होसेन मिनटोभर लेल आँखि नजि मुनलक। सबके सब फिरीसान। कुबेर सोचए जे नाओ खेबै मे एहन थकनी ओकरा कहियो ने बुझाएल छलै।

सकाल मे चारुकात निविड़ कुहेस पसरल देखल गेलै।

होसेन बाजल - करुआरि छोड़ कुबेर, सिकड़ी फेकै।

तत्त बेसी डोड़ी खीचि लंगर समुद्र तल मे जा ठेकल जे कुबेर के भेलै जेना लंगर पताल पहुँचि गेल हो। कुहेस मे नाओ चलेबाक उपाय नजि। धनमानिक द्वीपक नजदीक ओ सब आबि गेल अइ। कुहेस मे देखि नजि पेबाक कारणे पासकाटि दूर निकलि गेने बिपत्तिक आशंका! एइ द्वीपक अवस्थान देखिए कऽ ठीक कएल जेतै बाबनाबाद द्वीपक संग एकर संयोग-रेखा आ तकर बाद कम्पासक सहयोगे सोझै अगुआएल जा सकैछ मयनाद्वीप दिस। दिनभरि नाओक अवस्थानक पता चलि पओतै तइ मे संदेह। अपेक्षा करऽ पड़तै रातिक। राति मे तारा सभक उगने अपन अद्भुत यंत्रक सहयोगे आकाश दिस देखि होसेन कहि पाओत जे कोन दिस आ कते दूर पर धनमानिकद्वीप नुकाएल छइ।

जानै छऽ मियाँ, कलबला जहाज छइ ने, कते बेग मे चलै छऽ से कि पता चलै छइ। घण्टा मे कए माइल चललै, समुद्रक कोनठाम एलै - सब हिसाब केने पता चलैए। दाढ़ी सहलबैत बजैए होसेन आ सब के अभय दान दैत कहैए, डेराइ के कोनो दरकार नजि, दस बजैत-बजैत कुहेस छटि जेतै। आज-कल रोज बिहने कुहासा रहै छइ। एकरा कोन कुहासा कहै छइ माझी ?

बैसल-बैसल होसेन खीसा कहैछ आ सब केओ ध्यान सँ सुनैछ। लगैछ जेना केतुपुरक कोनो मड़ैआ मे होसेनक अड्डा बैसल हो। एक बेर एहने कुहेस मे ओ समुद्र मे भोतिया गेल छल। तीन दिनधरि लंगर फेकने पानि-बीच पड़ल

रहल। अन्त मे पिबाक पानि शेष भऽ गेने पियासे कण्ठ सुखा कऽ बैसि गेल छलै। तकर बाद होसेन कम्पास किनलकए, तारा देखि नाओक अवस्थान निर्णय करबाक यंत्र, चटगाँव मे। होसेन जखन जहाज पर काज करैत छल ताही समय एक साहेब कप्तान लग ओ एइ सब यंत्रक उपयोग सिखलक। एखन होसेन बड़का-बड़का जहाज चला सगर संसार घुरि आबि सकैए।

संसार ओ कि नजि घुरल अइ। ह, से अबस्से कहबाक जोग खीसा। बीस बरखक वयस मे ओ घर सँ पड़ाएल छल, तकर बाद अदहा जिनगी तऽ ओ देश-विदेश घुरिए कऽ बितओने अइ - नदी ओ सागर मे।

वेश दिन चढ़ला पर आस्ते-आस्ते कुहेस साफ भेलै। लंगर उठाओल गेल। घण्टा दू-एक बाद दूर मे देखल गेलै धनमानिक द्वीप। कम्पास सामने राखि होसेन पतबार धेलक। परात भेने सबेर सकाल मयनाद्वीप पहुँचि ओ सब लंगर फेकलक।

इएह थिक मयनाद्वीप। पाँच-छऽ बरख सँ जाइ रहस्य निकेतनक कथा ओ सब सुनैत आएल अइ। कुबेर तऽ जेना एके नजरि मे समस्त मयनाद्वीप के देखि लेबए चाहैछ। द्वीपक किछु अंश अण्डाकार, किछु त्रिकोण। द्वीपक दीर्घतम परिसर प्रायः एगारह मील - होसेन अपने नापि कऽ देखने अइ। जाइठाम नाओ भिड़ल छलै, तेमहर कनेय अंश साफ कऽ क बस्ती बसाओल गेल छइ। खेती होइ छइ बाकी सगरो जंगल। पश्चिमभर असंख्य नारिकेरक गाछ - समस्त द्वीप मे नजि छिड़िया गाछ सब एकेठाम घोटमेद भेल माथ उठओने अइ किए से पता ने।

जमीन अत्यंत नीच, एते नीच जे मन भेने जे कोनो दिन समुद्र सहजहि समस्त द्वीप के ग्रास कऽ सकैछ। द्वीपक माझ मे मीलभरि नाम एगो नौना पानिक छाड़नि। समुद्रो सँ जेना गँहीर, नहरि काटि मिला देने समुद्रक पानि आबि भरि जेतै। छाड़निक कतबहि मे कनेय धान चासक जमीन तैयार कएल गेल छइ। अद्भुत फसिल होइ छइ छाड़नि मे आ तकर पास-पड़ोसक जंगल मे असंख्य साँप छइ, किन्तु जन्तु -जानवर कोनो नजि। रासू जे बाघ-सिंहक गप केने छल से सब मनगढ़न्त।

होसेन मियाँक उपनिवेशक लोकसंख्या सए सँ थोड़ नजि, किन्तु तकर तीन भागे छोट-छोट छओँड़ा-छौँड़ी, जकरा सब मे अधिकांश एही द्वीप मे जनमल अइ। मलेरिया ओ साँपक संग युद्ध मे एखनो होसेन जय-लाभ नजि कऽ सकलए, अवरिल संग्राम चलि रहल छइ जंगलक संग। एइठाम बड़ बेसी अन्न उपजाओल नजि जाइ छइ, जिनगीक अनेको प्रयोजनीय वस्तुक लेल सागर-पथे यात्रा करए पड़ैत छइ सभ्य जगतक। अविराम खटनी एइठाम, नाना असुविधा एइठाम, जीवन

एतए निर्मम ओ नीरव। रासू जकाँ कतेको तऽ पड़ा गेल। होसेनक पाँच बखक प्रयासक बावजूदो तऽ तीस सँ बेसी परिवार अपन नीड़ नजि बना सकल एइ द्वीप मे। अमिनुद्दी आ रसूल के धेने आब द्वीप मे गृहस्थ परिवारक संख्या होइछ बत्तीस मात्र।

कतेक कठिन काज मे जे होसेन मियाँ आत्मनियोग केने अइ, केहन सीमाहीन जे ओकर धैर्य ओ अध्यवसाय से कुबेर आब नीक जकाँ बुझैए। एइ गँहीर जल-जंगले भरल मनुक्खक बासक अनुपयुक्त द्वीप, जकर नोनमाटि मे धान छोड़ि आन कोनो पसिल नजि होइछ, सजमनि-कदीमा फड़ैछ चोकटल कटुआएल खीरासन छोट-छोट, तइठाम एइ मुठ्ठीभरि नर-नारीक बस्ती बसेनाइओ होसेन मियाँ छोड़ि आनक बसक बात नजि। सन्दीप, हातिया, धनमानिक, बाब्लाबाद आदि जनबहुल द्वीपक गप कुबेर सुनने अइ। मयनाद्वीप यदि मनुक्खक बास जोग रहितै तऽ ओही सब द्वीप जकाँ कहिया ने एतौ गाम बसल रहितै। ई केहन कुत्सित एगो द्वीप होसेन बीछि लेलक। भऽ सकैछ सरस्ता मे भेटि गेल होइ, तँ। स्वास्थ्यकर, उर्वर द्वीप कीनि जमिदारी स्थापनाक टाका होसेन कहाँ पबैत ? तेहन जनहीन द्वीपे वा कतऽ छइ ?

द्वीप देखि अमिनुद्दी आ रसूल बड़ उदास भेल। ओकरा लोकनिक मुहे फिरि जेबाक बात सेहो दू-एक बेर सुनल गेलै। ओना होसेनक सामने ओ सब किछु ने बजैछ। बजलो ने जा सकै छइ। कते उपकार जे होसेन ओकरा लोकनिक केने हेतै तकर हिसाब नजि। अमिनुद्दी तते कर्ज लेने अइ जे कहियो सोध भेनिहार नजि। ततबे किए, बीबीए कि फेर ओकरा कपार मे जुटितै जँ होसेन नजि दितै ! नसीबन सन बीबी ! रसूल के जहलक मुहथरि लग सँ घुरा अनने अइ होसेन, गाम फिरने के जानए जे फेर जहले जाए पड़ै। प्रतिदान मे ओकरा लोकनि सँ तऽ आर किछुओ ने चाहैछ होसेन। खाली ओ सब एइठाम बास करओ, सपना साकार होउक होसेनक। एही बीच ओकरा सब लेल घर बन्हाइ आरम्भ भेल अइ, दया कऽ कऽ ओइघर मे ओ सब बास करओ, होसेन ताही मे कृतार्थ। जंगल साफ कऽ कऽ जते जमीन ओ सब खेतीक उपयुक्त बना पाओत सब ओकरे लोकनिक सम्पत्ति हेतै। मालगुजारी वा चासक फसिल, कोनो किछु मे होसेन दाबी नजि करतै। अपन-अपन जीविका जते दिन अर्जन नजि कऽ पाओत ओ लोकनि, तते दिन सेहो जोगार करत होसेन। घर ओ घरनी, अन्न-वस्त्र, भूमि ओ तकर मालिकाना - सब तऽ पओलह, आब खाली मेहनति करबऽ आ धीया-पुता जनमेबह, एतबो नजि पार लगतह ?

होसेन लग तँ केओ फिरि जेबाक बात ठोर पर नजि लबैछ। जे फिरि जाइछ, से जाइए चोर जकाँ पड़ा कऽ।

होसेन तकरो सब के माफ कऽ दैछ। भेंट भेने रासू जकाँ जंगल साफ करैक मजुरी दै छइ। होसेनक कोनो जोर-जबरदस्ती नजि, अन्याय ओ ककरो प्रति नजि करैछ। दण्ड ओ तकरो सब के दै छइ जे सब भीषण ओ मर्मान्तिक शत्रुता करैछ, अकारण क्षति करए चाहैछ, विघ्न उपस्थित करए चाहैछ होसेनक सपना साकार होएबाक बाट मे।

किछु दिन होसेन द्वीप देखैत आ द्वीपक लोक सभक संग भाव-विनिमय करैत बिता देलक। खेत सभक धान कटा गेल छइ। कोलाकोली सरिसो, बदाम आ मटर बाओग कएल गेल छइ। मुरै, पालक, कोबी आदि गत बख नजि बाँचल छलै। एइ साल कएक बिघा जमीन मे एक प्रकारक नव खाद दऽ परीक्षाक लेल थोड़-बहुत चास भेलैए, की हेतै से कहल नजि जा सकैछ।

आर भीतर दिस द्वीपक माटि रबी-राइ चासक उपयुक्त छइ वा नजि से देखबा लेल थोड़े जगह परिष्कार कएल जाइ छइ। सबेर सकाल कोदारि कुइहरि लेने एक दल लोक जंगल मे आधकोस परे जाइछ, निर्वाचित स्थानक गाछ-पात काटि साफ करैछ, शावल सँ कोरि गाछक सीर उपाड़ि फेकैछ — तकर बाद, भरि दिन मच्छर ओ कीड़ा-मकोड़ा सँ कटबा, देह-हाथ फुला साँझखन घुरि अबैछ। सृष्टिक दिन सँ एहि द्वीपक जे कुमारि वनभूमि तकर छातीक एक मुठ्ठी माउस जेना कपचि लेल गेल होइ, चारुकात निविड़ वनक मझ परिष्कृत जगह तेहने वीभत्स देखाइछ।

कए दिन पहिने की ने एकटा गोलमाल भेल छलै द्वीप मे। होसेनक अनुपस्थिति मे मारितेरास लोक जमा भेल घोंघाउज करैत। अस्पष्ट दू-एकटा बात कुबेरक कान मे पड़लै। बिपिन नामक साठि बखक एक बृद्ध के होसेन एइठामक माइनजन बनओने छइ। ओकरे घेरि बेसी घोंघाउज होइ छलै। कुबेर के लग जाइते किन्तु सब चुपचाप भऽ गेलै। तकर बाद एक दिन साँझक समय, काज-कर्म शेष कऽ कऽ सब जखन घुरल, होसेन तखन अपन स्वतंत्र कुटीरक ओसारा पर बैसि खुसी-खुसी हुक्का पिबैत छल, बिपिन भण्डा फोड़लक। बाजल-नालिस अइ एकटा।

नालिस ! होसेनक मुह गम्भीर भऽ गेलै।

बिपिन धीरे-धीरे सब बात खोलि कऽ कहलकै। जनी-जाति संबधित

लज्जास्पद घटना। मात्र छः मास भेलै एनायेत एइ द्वीप मे आएलए, एतबे दिन मे ओ सब के तंग कऽ कऽ छोड़ि देने छइ। पहिने-पहिने जकरा तकरा संग ओकरा कलह बझितै। एक दिन तऽ ओ निरीह दुर्बल गगन घोष के मारि अधमरु बना देने छलै - तखन सब मिलि खुब फज्जति केने छलै। तकर बाद सँ ओ वेश संच-मंच छल तँ होसेन के नजि कहल गेलै। किन्तु कएदिन पहिने ओ जघन्य अपराध कऽ बैसलए। बसीर मियाँक बहु बचहन छइ। किछु दिन सँ एनायेत ने कि ओकरा तंग करै छलै मुदा डरे ओ ककरो किछु कहै नजि। तकर बाद एकदिन दुपहरिया मे सब केओ जखन काज मे बाहर गेल छल, एनायेत बसीरक घर टुकि गेलै। बसीरक बहुक चिचिएनाइ सुनि बगलक अकबरक बीबी दौड़लै तँ ओइ दिन बेचारी बाँचि गेल।

होसेन बाजल - हरामीक बच्चा के काटि दरिया मे काहे ने फेंक देलऽ ?

बिपिन स्वीकारलक जे से ओकरा सब बूते नजि पार लगलै, तखन मार-पीट खूब कएल गेलै। कनेकाल चुप रहलाक बाद सकल के बजा आनै लेल कहलकै होसेन, एनायेत जइ सँ आबए। कनिहँ काल मे सबके सब हाजिर। कोनो-कोनो महिला सेहो कौतुहलक संग आबि कने हटि कऽ ठाढ़। विचार हैतै एनायेतक! ओकरा छुरी-फाँसी देतै आकि दरिया मे फेकि देतै होसेन, के जानए।

एनायेतक वयस बेसी नजि छइ। बलिष्ठ युवक अइ। मयनाद्वीप मे एहन आर दोसर नजि। तेजीक संग आबि ओ होसेनक सामने जा कऽ बैसल, निर्भय निश्चिन्त। होसेन एकरा ओकरा सँ दू-एकटा बात पुछलकै आ रुष्ट नजरिए एनायेत दिस देखए लागल। ओ बेर-बेर बाजए लागल की अपसोस, की अपसोस!

तकर बाद ओ एनायेत सँ कैफियत तलब कएलक।

एनायेत कहलकै — जबरदस्ती नजि करलिये मियाँ।

होसेन पुछलकै — जबरदस्ती नजि केलही, बसीरक घर काहे टुकलही तौ ? जनानी दिस नजर काहे देबही ?

हमरा देख ओ एक दिन हँसल रहलै।

अरे तौ आदमी छँ ने बैल ? भाइ समझ हँसल होतौ। देश-गाँ छोड़ि हियाँ द्वीप मे रहै छँ, हियाँ भाइ-बहन ने की जनानी-मरद! काम ठीक नजि कएले मियाँ। तीन दिन बान्ह रखबौ तोरा, खाना-पीना बन्न।

होसेन मियाँक हुकुम होइते सब मिलि ओकरा ओसाराक खुट्टा सँ बान्हि

देलकै। ढीले कऽ बन्हलकै। होसेन मियाँक हुकुम सँ कसगर एइ द्वीप मे कोनो रस्सीक बान्ह नजि। बन्हन खोलि पड़ेबाक हिम्मत एनायेत के नजि हैतै। पड़ा कऽ जाएत कहाँ।

होसेनक कुटीरक बगले मे एगो घर कुबेर आ ओकर संगी सब के रहै लेल देल गेल छलै। ओइ दिन वेश राति बितला पर बाहर गेने इजोरिया मे कुबेर देखलक जे होसेनक ओसारा पर बन्दी एनायेत थारी मे भात-खाइए आ लग मे कोनो जनानी बैसल छइ। पैर दबने चुपचाप ओ होसेनक घरक पछुआर मे गेल आ खिड़की दऽ आस्ते सँ आवाज दऽ ओकरा उठओलक।

सब सुनि होसेन हफिआइत बाजल — हँ, जो सुतै गऽ कुबेर। आर सुन, अन्हरिया रात, की देखले, की सुनले से मने मे राखी, बाजै के काम की ?

बाजि होसेन करोट फेरि सुति रहल।

एते पैघ काण्ड के एना अनठा होसेनक करोट फेरि सुति रहब आइ सरिपहुँ कुबेर के छगुन्ता मे धऽ देलकै। बात ओ बुझि पओलक द्वीप छोड़ि घुरबाक दिन। बुढ़बा बसीर आबि नाओ पर उठि बैसल मुदा ओकर कमसीन बीबी रहलै द्वीपे मे। बसीर एइ द्वीपक बसिन्दा अइ। बर्ख पाँचेक सँ ओ एइ द्वीप मे सस्त्रीक रहि रहल अइ। धीया-पुता नजि भेलै बसीर के - एकोटा ने। पाँच बर्ख मे जे एकोटा लोक-संख्या नजि बढ़ा सकल द्वीपक, किछु बर्ख मे कबर मे जाएत, एहन लोकक कोन प्रयोजन होसेन के ? बसीर आब अपन बीबी के तलाक देत। तकर बाद यथा समय एनायेतक संग ओकर निकाह हैतै। एनायेत के आर एगो बीबी छइ जे शीघ्रे होसेन के उपहार देतै एगो नव टटका मनुख, मयनाद्वीपक एक टुक भविष्य। तैयो आर एगो बीबी होउक एनायेत के, सार्थक होउक दुनूक अनुचित असामाजिक प्रेम। पाँच बर्ख धरि जे रमणी जननी नजि बनि सकल, कोर भरौ तकर सन्तान सँ, लोक बढ़ौक होसेनक साम्राज्य मे।

गाम छोड़लाक तीन सप्ताहक पश्चात कुबेर आ गणेश फिरि आएल। चाँदपुर मे ओकरा सबके उतारि होसेन अपने नाओ लऽ कऽ कतौ गेल। होसेनक मुसलमान माझी सब चाँदपुर मे ओकर बाट हैरै छलै।

एही बीच गोपी के लऽ कऽ अनेक काण्ड भऽ गेलै। कुबेर जाइ दिन गेल छल ताही दिन गोपीक पैर भयानक भावें फुलि गेलै। घर मे पुरुष-पात नजि, असमंजस मे माला कनैत-कनैत अस्थिर भेल छल। बाद मे रासू आबि सब व्यवस्था केलकै। गोपीक लेल जे रासू कते की कएलक से सए मुहे बाजिओ कऽ

माला शेष नजि कऽ पाओत। ताही दिन ओ गोपी के अमिनबाड़ी असपताल जा गेलै, राति ए मे गोपीक आपरेशन भेलै। एखनो ओ असपताले मे अइ। रासू प्रायः ओकरा देखै लेल जाइ छइ। डाकडर भरोस देलकैए। हाड़ तोड़ि ओकरा नसक ओझरी छोड़ा ठेहुन ठीक कऽ देल गेलैए। कने-मने झखेनहु आब ओ चाबि फिरी पाओत।

कुबेरक फिरबाक खबरि पाबि रासू आएल। कुबेरक मुहे दू-एकटा कृतज्ञताक कथा सुनिते ओ गलि जाइछ। माथ कुड़िअबैत ओ कएक बेर सेप घोंटलक आर फेर हठात् बाजि उठल - गोपी तौ हमरा देबऽ माझी ?

कुबेर गम्भीर भऽ जाइछ। ओ कहै छइ जे एते जल्दीबाजी किए। एखन तऽ गोपी असपताल मे पड़ल अइ, पहिने घुरि तऽ आबओ। रासू तैयो जिद करै छइ। ओकर पैर ठीक भऽ जेबाक बात सुनलाक बादे सँ ओ उताहुल भेल अइ। एखने कुबेर सँ गछ नजि लेने कोन ठीक जे ओकर मन बदलि जाइ। गोपीक पंगुता छुटनाइ जखन निस्तुकी नजि छलै तखने पकिया बात नजि कऽ लेबाक अनुताप होइ छइ रासू के।

अन्त मे कुबेर कहैछ, बिहान कहबौ रासू।

राति मे ओ मालाक संग परामर्श कएलक। ठीक भेलै जे रासू जँ डेढ़ कूड़ी टाका नगद आ दू कूड़ी टाकाक गहना दै गोपी के तखने ई बियाह भऽ सकै छइ। तइ सँ कम मे नजि हैतै।

दोसर दिन आएल रासू। कुबेरक माँग सुनि ओ झमा कऽ खसल। बाजल, एते टाका कहाँ सँ आनब ?

से कुबेर की जनैछ। एतबो टाका यदि ओ बियाह मे खर्च नजि कऽ पाओत तऽ तकर बाद बहु के की खुआएत ?

रासू मूड़ी झुकओने रहैछ। माला ओकरा मुह दिस देखि जेना ममता-बोध करैछ। कुबेर के इसारा सँ लग बजा फुसुर-फुसुर कऽ टाकाक परिमाण किछु कमा दै लेल कहै छइ। किन्तु कुबेर स्त्रीक परामर्श पर चलनिहार नजि। ओ अविचलित गम्भीर मुह बनओने बैसल रहैए, टाट मे ओडठल आँखि मुनने जेना निन्न पड़ि गेल हो।

बड़ीकाल बाद रासू बाजल - अच्छा देबऽ।

बाजि कऽ ओ उठि जाए चाहैए किन्तु तखन कुबेर ओकरा खातिर कऽ क बैसबैछ। साग्रह मयना द्वीपक खीसा शुरू कऽ दैछ। रासू के ने कोनो उत्सुकता

नै ओ किछु बजैए। की भऽ गेलै रासू के! ओकर एते दिनक सपना साकार होमए जा रहल छइ तैयो ओ आह्लादित किए ने अइ! चिलम साजि कने दम लगा कुबेर हुक्का कात मे राखि भीतर चल गेल। कए दिन पहिने हुक्का पिबैकाल दुनू छीना-झपटी कएने अइ, किन्तु एखन तऽ रासू ओकर भावी जमाए, ओकरा ताब कऽ हुक्का नजि देल जा सकैछ।

दिन तीनेक बाद कुबेर अमिनबाड़ी जा गोपी के देखि आएल। असपतालक खेनाइ खा आ बिछान पर पड़ल-पड़ल ओकर रोहानी पलटि गेलैए। परिष्कार-परिच्छन्न रहबाक कारणे रंग सेहो निखरलैए। दिन सातेक बाद ओ असपताल सँ छुट्टी पाओत।

समयक अनुसार ठण्डा पड़ए लगलै। मलहटोलीक बुढ़-बच्चाक देहक चाम रक्ख भऽ पपड़िआए लगलै। मालाक चाम किन्तु चिरदिने मोलाएम छइ, केहनो ठण्डा पड़ौक, ओकर देह कहियो ने फटै छइ। भरिसक कपिलोक नजि फटैत हैतै। जतबा तेल ओ खर्च करैए देहक पाछौं। खेतक पलाँकी सागक पात सब मे जे सहज सरल लावण्य फुटल छइ, भऽ सकैछ कपिलाक देह मे तकर अभाव नजि होइ। ओहो तऽ मालाएक बहिन ने। माला सँ हजार गुन बेसी सओखीन।

काज उदेम नजि रहने कुबेर दूरे-दरबज्जे टहलान दए समय कटैछ। पीतम माझी दुखित पड़ल अइ। बुढ़ाड़ी मे ओकर सेवा-टहल केनिहार केओ ने, जुगी तँ बापलग आबि गेल अइ। पीतम बेटीक सेवा तऽ ग्रहण करैछ किन्तु दिन-राति ओकरा गारि-सराप दैते रहैछ, किछु उठा नजि रखैछ। जुगीक हाथक पानि पिबि चिरदिन नरक मे सड़बाक सेहन्ता जे ओकरा नजि छइ तकरे घोषणा सदतिकाल करैत-करैत जखन कण्ठ सुखा जाइ छइ तऽ फेर जुगीएक हाथे देल पानि पिबि कण्ठ भिजबैछ। पीतम के बहुत पाइ-कौड़ी छइ, बजैत रहैए जे ओही टाका-कौड़ीक लोभे ने कि जुगी ओकर सेवा-टहल करै लेल अएलैए, किन्तु तकरा ई एगो फुटल-कौड़ियो ने दैतै। जतबा जे ओकरा छइ, सब ओ कालिए बाबू लोकनिक जिम्मा लगा देत। ओकर पड़ौआ बेटा घुरि अएने उएह सब पाओत। पीतमक बेटा जे दिन ने घुरलै।

रासू एक दिन पीतम के देखै लेल आएल छलै, मुदा पीतम ओकरा दुर-दुरा कऽ बैला देलकै। राता-राती खून कऽ कऽ मयना द्वीपक फिरता डकैत जे ओकर सर्वस्व लुटि लेतै, तेहन बोका नजि अइ पीतम। रासू लग अएने ओकर टाड तोड़ि दैतै। अपन सुखलाहा दुनू हाथ उठेबा मे पीतम के कष्ट होइ छइ, रासूक टाड ओ केना तोड़ि पाओत से उएह जानए!

कुबेर लग रासू अपन मनोवेदना व्यक्त करैछ। पीतमक ओ एकमात्र भागिन अइ, तकरा पीतम तेजि देने छइ। कते दुख-कष्ट सहि ओ मयनाद्वीप सऽ घुरि आएल, दू दिन घर मे रहौ तक नजि देलकै, निर्विकार बाट पर बैला देलकै। एखन मरैक समय लग रहि ओकर सेवा-टहल करै लेल व्याकुल अइ रासू, ताहू मे बुढ़बा ओकरा संदेह करतै, घर ढुकए नजि देतै! ततबे नजि, पीतमक ओ अपन भागिन छइ, बुढ़बाक टाका पैसा, आडन घरक एक अंश की ओकरा भेटनाइ उचित नजि। सब किछु ककरा दऽ जेतै बुढ़बा ?

कुबेर बाजल, बेटा लेल राखि जाएत — बजैए।

रासू बजैछ, बेटा! से कि जीबै छइ ? कहिया ने गंगाक पेट मे समा गेलै।

बैसल-बैसल दिन कटैए कुबेर। गामक जुआन-जहान सब जीविका अर्जन लेल बाहर चल जाइछ, गाममे रहि जाइए बच्चा, बुढ़ आ स्त्रीगणक दल। कुबेर पाकल मुहक हा-हुताश आ नरम कण्ठक कोलाहल सुनैत रहैछ। भेंट होइते हीरू मलाह अनन्त बाबूक नाम लऽ कुबेर के परिहास करै छइ। कोनो दिन कुबेर तमसाइए, कोनो दिन ओकर मन दुखी भऽ जाइ छइ। आइ कते दिन सँ अनन्त बाबू गाम मे नजि छइ। कलकतिया बाबू, मलहटोली मे रातुक स्कूल खोलबाक नामे दू-चारि दिन कुबेरक आडन आएल छलथिन - आइयो से बात मन रखबाक कोन प्रयोजन? केवल कुबेरक आडन तऽ नजि! कोन बतहपन माझिल बाबू के धेने छलनि से नजि कहि। मलहटोलीक लोक सभक संग अंतरंग होएबा लेल समय नजि असमय नजि, आबि हाजिर होइतथि। अडने-अडने घुरि देशक नामे की सब दुर्वोध्य बात सब बजितथि! कते दिन तऽ निर्जन दुपहरिया मे कते आडन सँ बहराइत कुबेर अपने हुनका देखने अइ। तखन केवल ओकर पंगु असहाय स्त्रीयक संग हुनक नाम किएक सनैए हीरू।

हीरू के कुबेर मारतै एक दिन। बेदम कऽ कऽ मारतै। दुरे-दरबज्जे घुमि समय बितबैए कुबेर, मन नजि लगै छइ। जगा माझीक घरबालीक जेना कपिलाक चलनाइ के नकल करैए। भिजल कपड़ा पहिरने बाट चलैत-चलैत चौकि पाछौं कुबेर के देखि ओकरा नजरि मे संदेहक सोह फुटबाक पहिने अन्यमनस्कता नजि भंग होइ छइ कुबेरक। अपरतिभ होमए पड़ैत छइ ओकरा। नकुलक घरक सोझा बैरक गाछ तर एक दिन कपिला के काँट गड़ल छलै। झुठेक काँट। ओह! करैत कुबेर के भरिपाँज कऽ पकड़बाक बहन्ना कपिलाक। केतुपुरक दुर्गा-दर्शन कऽ घुरबाक समय जे की छलनामयी बनि गेल छल कपिला।

गोपी के आनैक लाथे एक दिन कुबेर भोरे-भोरे गाम सँ बहार भेल। श्यामादासक घर आकुर-टाकुर गाम पैदल चलने बारह-तेरह मीलक बाट। आरि-धुर धेने टेढ़-मेढ़ बाट चलैत कते बेर कुबेर सोचलक जे घुरि जाए। आकुर-टाकुर पहुँचि एगो पोखरि मे हाथ-मुह धोइ लेल उतरैत घाट पर सँ सोझे अमिनबाड़ी दिस चलनाइ स्थिर केलक कतेबेर तकर ठीक-ठेकान नजि। तैयो अन्तधरि श्यामादासक दरबजे पर जा शेष भेलै ओकर बाट।

श्यामादास तखन खेत गेल छल, किन्तु ओकर मा-बहिन आडन-घर भरने छलै। कपिला एइठाम घोघवाली बहुरिया। श्यामादासक मा पाहुन के आदर यल सँ बैसओलक। कुशल-क्षेमक संगहि एमहर अएबाक कारण जिज्ञासा केलकै। श्यामादासक घर आडन देखि कुबेर मने-मन दुखी भऽ उठल छल, नीक जकाँ जवाब नजि दऽ पाओलक। चारिटा बड़का-बड़का घर श्यामादासक, चारुकात नीपल-पोतल चकचक करैत। घर मे हुलकी देने कते जिनिस देखाइ पड़ै छइ - काठक सन्दूक, बेंतक पौती-पेटार, बासन-कुसन। ओसाराक एक कात धानक ढक, दोसर कात बड़दघरा। लक्ष्मीवान घृहस्थक घर-संसार, कुबेरक टुटली मड़ैयाक तुलना मे बैकुण्ठपुरी। छाती मे धक दऽ लगै छइ कुबेर के। एही बैकुण्ठपुरीक लछमी ओकर टुटली मड़ैया मे साग-भात खा किछु दिन कट आएल छलै से सोचि आइयो अकास-कुसुमक रचना करैछ ओ। ओकरा होइ छइ जे लछमीक मन आइयो पड़ल छइ केतुपुरक ओकर ओही टुटली मड़ैया मे। केहन बोका अइ कुबेर।

कपिला पुछलकै, की हाल-चाल माझी ? की सोचि एला ? धीया-पुता आर नीके नाहित हइ ने ?

डोरिया साड़ी पहिरने अइ कपिला। केशक तेल सँ कपार चपचप करै छइ। देह जेना उछलल जाइत होइ कपिलाक, बरिसकालक पद्मा जकाँ। कते खुसी लगैए कपिला। अपन मैल-कुचैल कपड़ा-लत्ता, चद्दरि दिस देखि लाजे दौड़ि पड़ा जेबाक मन होइ छइ कुबेर के।

कनेकाल एमहर-ओमहरक गप-शप कऽ कपिला चलि गेल भानस-भात करै लेल। आर किछु खन बतिआ ओकर सासुओ प्रस्थान केलक। आडनक दू-एकटा नेना-भुटका कुबेर लग घुरैत-फिरैत रहल - फेर ओहो सब चल जाइछ। कुबेर असगरे बैसल रहैछ। बोका, अपरोजक, अकाजक कुबेर। मयना द्वीपक एनायेत ओ बसीरक बात मन पड़ै छइ कुबेर के। मन पड़ै छइ इजोरिया राति मे होसेनक कुटीरक ओसारा पर बन्दी एनायेतक भात खाएब। जकरा कारण द्वीपक लोक सभक हाथें कतेको बेर से मारि खेने अइ, तकरे आनल भात। होसेनक

कृपा सँ कए दिन बाद ओकरा दुनूक मिलनो हेतै - प्रकाश्य, सामाजिक, आइन संगत मिलन। केहन आश्चर्य भाग्य लेने एक-एकटा लोक दुनियाँ मे जन्म लैछ। बैसल बाटक ठेही सँ देह भसिआइ छइ कुबेरक। आधा सुतल आधा जागल अवस्था मे ओ सपनाइत रहैछ, रचना करैत रहैछ अकास-कुसुमक। सर्वशक्तिमान होसेन मियाँ के ओ जेना कहने हो जे कपिला के पओने सपरिवार ओ मयनाद्वीप जा बास करत। गणेश के सेहो ओ राजी कराओत जेबाक लेल। होसेन अपन चिरंतन हँसी हँसैत जेना कहैत होइ - सेहे करबै कुबेर भाइ, ला देबऽ कपिला के। तकर बाद एक दिन -

कपिला आबि पुछै छइ, रहबऽ ने की माझी ?

कुबेर कहैछ, न्।

— दू दिन रहि ने जाहो। एलहो किए से तऽ कहबे ने केलहो।

सुबचनीक हाट जेबै सोचि निकलल रहिए कपिला। तँ सोचल जे तोरा देखने जाइ।

कपिला बिहँसैत बजैछ - सुबचनीक हाट की आइ लगतै ?

कुबेर विवर्ण भऽ बजैछ, नजि तऽ ?

— हटिया पर जा के सुति रहऽ गऽ माझी, बिहान हाट कऽ क घरे जइह' - कहि कपिला भनसा घर चल जाइछ। कुबेर उठि अडना मे अबैछ। सजमनिक मचान लग जा ओ ठाढ़ होइए। लाजे ओकर मुह बुझाई छइ जेना मचान पर औन्हल करिया कोहाक छौं पड़ैत होइ। कपिला सँ ओ केना सकत! पद्मानदीक बोका माझी से। कपिला ओकरा एक हाट पर किनि दोसर हाट पर बेचि देने छइ, अनेक दिन पहिने।

दुपहरिया मे आडन घुरला पर श्यामादास के कुबेर के देखि खुसी भेलै। दुनू गोटे पोखरि सँ नहा आबि संगे खाइ लेल बैसल। मेहमान आएल छइ तँ कपिला आइ रंग-विरंगक चीज बनओने अइ। किन्तु खेनाइ मे कुबेरक रूचि नजि छलै। ओकर एना हठात् अएबाक कारण श्यामादास सेहो जानए चाहलकै। एबेर कुबेर एक आश्चर्य फूसिक रचना केलक। होसेन मियाँक मयनाद्वीप मे जा बास करए चाहत एहन केओ जँ श्यामादास के बुझल होइ। ओइठाम बास करै लेल बहुत रास सुबिधा छइ। आडन-घर, अन्न-वस्त्र, जमीन-सब एखन मडनीए भेटतै। दस-बीस बख बाद द्वीप मे बस्तीक बिस्तार भेने नामक लेल किछु मालगुजारी बान्हल जेतै जमीनक, जमीनक अधिकार वंशानुक्रमे रहतैक। श्यामादास जँ किछु

लोक के एइ सुवर्ण सुयोगक मादे कहै आ केओ जँ राजी होइ जेबा लेल तऽ कुबेर के खबरि कऽ दै, बड़ उपकार हेतै।

श्यामादास अवाक होइत बाजल — चाह बगानक ठीका लेलहो ने कि माझी भाइ ?

चाह बगान! केहन चाह बगान! चलओ ने श्यामादास, देखि आओत मयनाद्वीप। आइए चलओ।

तों काहे ने जाइ छहो मयनाद्वीप ? श्यामादास पुछलकै। कुबेर थतमताइत बाजल — जेबै। हमहूँ जेबै।

आइ रहि जेबा लेल कुबेर के बड़ आग्रह केलकै श्यामादास, किन्तु कुबेर के ने कि रहबाक उपाय नजि। गामे-गाम घुरि ओकरा मयनाद्वीपक वार्ता प्रचार करए पड़ैत।

सुबचनीक हाटक बीचे दऽ अमिनबाड़ी जेबाक बाट। हाटक शून्य छावनी सब खाँ-खाँ करैत छलै, बाट कातक स्थायी दोकान ओ आदृत सब मात्र खुजल छलै। एगो खएबाक दोकानक सामनेक लड़बड़ बेंच पर कुबेर बैसि रहल। बड़ जाड़ होइ छलै कुबेर के, देह गमगम करै छलै आ आँखि सेहो दुखाइ छलै। हुड़मुड़ केने जे बोखार आबि रहलैए तकर बहुत पहिने ओकरा अन्दाज लागल छलै। बेंच के रौंद दिस घीचि चद्दरि ओढ़ि ओ सुति रहल। दोकानक छौं कुबेर के अतिक्रमण करैत हाटक छज्जा सब पर उठि गेलै। कुबेर ओहिना पड़ल रहल बेंच पर। अन्त मे एगो हलुआइ ओकरा हाक देब आरम्भ कऽ देलकै।

बोखारक आहटि पाबिओ भोज खेने छल, अवस्था बड़ सोचनीय भऽ गेल छइ कुबेरक। कपिलाक स्वामी श्यामादासक अवस्था नीक देखि ओ गरीब बाट पर आबि गेल छल। बोखार जे एना चढ़ि जेतै तकर अन्दाज नजि छलै। माथक बीच जेना धोनि लागल होइ आ सों-सों शब्द होइत होइ। कहाँ कोन हाल मे पड़ल अइ सेहो बीच-बीच मे गोलमाल भऽ जाइ छइ — समुद्रक तरंग, दुर्गापूजाक आलोक, झांझनक टाटक बाहर अन्हार मे सुतल पंक्तिबद्ध लोक, बेर-बेर जालक खसब-उठब, झाकक झाक दपदप माछक छड़पब-कुदब- सब एकाकार भेल जाइ छइ। हलुआइक मुह पर सँ चद्दरि हटा देने कुबेर आरक्त आँखिए ओकरा दिस देखैत रहैछ, बड़बड़ाइत रहैछ, श्यामादास के खबरि देबही - आकुरयकुरक श्यामादास।

साँझक बाद कुबेर फिरिगेल कपिला लग। एकरा विछान पर सुता एगो

मोटसन केथरी ओढ़ा कपिला भानस करै लेल गेल। अन्हार घर मे असगरे सुतल रहल कुबेर।

शेषराति मे घाम भऽ कुबेरक बोखार उतरि गेलै। ताही संग ओकर निन्न सेहो टुटि गेलै, फेर निन्न नजि भेलै। एक असह बोतुआइन गंध सँ ओ बड़ बेसी अस्वस्ति-बोध करए लागल। कने फरीछ होइते ओ उठि बैसल। छोट-छीन घर, घरक आधा भरल पटुआक ढेरी आ मुहेलग बान्हल प्रकांड एकटा बोतो, पड़ल-पड़ल पाजु करैत, दाढ़ी हिलबैत।

शरीर बड़ दुर्बल लगै छइ कुबेर के। आस्ते-आस्ते उठि ओ बाहर भेल। कपिला ओसारा गोबरबै छलै, पुछलकै - मन केना छऽ माझी ?

कुबेर आस्ते सँ बाजल - बोखार नजि अइ। हम आब जाएब कपिला।

एखने जाएत कुबेर, एइ भोर मे! आइ बरु नहिजे गेल दुर्बल देह लऽ क। कने नीक भेने कालि गेने नजि होइतै। अन्ततः कने किछु खाइयो कऽ तऽ जाओ। एखने दूध दूहि कपिला औँटत, कने दूधे पी कऽ जाओ!

नजि, कुबेर नजि खाएत किछुओ। प्रयोजन नजि छइ। बोतो ओ पाटुक सौरभे ओकर पेट भरि गेल छइ। उदास कुबेर मूड़ी हिलबैए। पद्यानदीक कूल छोड़ि दस मील दूर चलि आएल अइ ओ, मन केनादन करै छइ। पद्याक बसात देह मे नजि लगने, केतुपुरक मछाइन गंध नाक मे नजि पड़ने, ओ स्वस्थ नजि हएत।

कपिला नीपब छोड़ि पुछलकै - राग केलहो माझी ? राग नजि करहो। घर भरती लोक, आर घर नजि रहलै जे तोरा सुतै लागी दितऽ।

कुबेर बाजल - हँ रे कपिला हँ, ढंग करए जनै छें ने। तोहर ढंग देखि देह मे अगराही लगैए।

अगराही लागै छऽ माझी ? अगराही लागै छऽ ?

हँ लगैए! तों कि हमरा माल-जाल बुझै छें, ठछा करै छें हमरा संग ? चिन्ह गेलियौ तोरो कपिला, तोरो चिन्ह गेलियौ - परनाम केने जाइ छियौ।

कपिला फुसुर-फुसुर कऽ कहलकै - चुप करहो माझी, चुप करहो, लोक सुनतै। जाइ के ह तऽ जा, आर की कहबऽ तोरा ? तब एगो बात कहि दै छिअ माझी, तोरा हमरे किरिया हऽ, दीदी के सब खेरहा कहियहो। कहियहो जे कपिला पर-घरक इस्तीरी, परक शासन मे कपिलाक मुह मे बकार नजि हइ। मेहमान कहाँ

रहतै, की खेतै, कपिला के से के पुछै हइ ? दोषी बनाबहो, सराप दहो, किन्तु ई बात दीदी के अबस्स कहियहो - हमरे किरिया हऽ तोरा, कहियहो।

ककरा संग बतिआइ छें कनियौ ? घरे सँ सासु पुछलकै।

कपिला जैतले कण्ठ कहै छइ, जाहो माझी! आएल छलहो काहे तों!

अमिनबाड़ी असपताल सँ गोपी के संग लऽ जलपथ होइत कुबेर गाम घुरल। ओकरा दुबैल देखि माला बेर-बेर पुछै जे की भेल छलै ओकरा, फिरबा मे एते देरी किए भेलै ? प्रश्न सब अनठा देलक कुबेर। थोड़ समय मे बहुतरास विचित्र अभिज्ञता कुबेर के जेना नव लोक बना देने होइ। नदी ओ नदीतीरक ओकर दीर्घ जीवनक कएकटा मास चिरस्मरणीय रहतै। कहाँ छलै कपिला, कहाँ ओ आसिनक अन्हर, कहाँ छलै मयनाद्वीप! सब जेना एक संग दल बान्हि ओकरा जीवन मे आएल होइ!

गाम घुरि कुबेर देखलक जे रासू एही बीच पीतमक संग मिलान कऽ लेने अइ। जुगी के बेटा जन्म लेलकैए, पीतम के आर के देखितै, तें से काज रासू पओलकए। जुगीए जकाँ रासू के सेहो ओ शापान्त करैत रहैछ। रासू चुपचाप बुढ़बाक सेवा-टहल करैत रहैए, ने तमसाइए आ ने दुखी होइछ। रासूक धैर्य देखि कुबेर खुसी होइछ। पीतम के ढरने सम्भव छइ रासू किछु टका-कौड़ी पाबए, ताइ सँ गोपिएक लाभ हेतै। तें पीतम के देखऽ गेने ओकरा लग थोड़-बहुत रासूक प्रशंसाओ कऽ अबैछ कुबेर। बजैछ, रासूक मन साफ छइ, दया-माया छइ ओकरा हिरदै मे। नकुल-टकुल जकाँ पाजी ओ नजि अइ। पीतम सब सुनैए, किन्तु विश्वास नजि करैछ। अरे तो नजि चिन्है छिही ओकरा कुबेर। डकूबा कोनो दिन हमरा छाती मे चक्कू भोंकि हमर सब धन-सम्पति लऽ पड़ाएत-हरमजादा! तों कोन ताल मे छें।

कुबेर प्रतिवाद करैछ, नजि-नजि, रासू तेहन नजि अइ। बड़ नीक लोक अइ रासू।

कए दिन बाद होसेन मियाँक घुरि अएने बैसारीक दिन शेष भेलै कुबेरक। रंग-विरंगक बेवसाय छइ होसेनक, धान, बीड़ीक पात, तमाकू, गुड़, चीनी, मसाला - एक-एकबेर एक-एक रकम बोझाइ कऽ कऽ कुबेर एक बन्दरगाह सँ दोसर बन्दरगाह धरि यातायात करैत रहैछ। गोयालन्दक दोसर तीर पर एक बेर सात सए बकरी-छागर हाजिर। दिन भरि कुबेर ओकरा सब के नदी पार करओलक।

छागरक गंध सँ बेर-बेर ओकरा मन पड़ै कपिलाक ओइठाम एक कष्टकर राति बितेबाक बात। परक घर मे परक शासन मे निरुपाय निर्वाक कपिला जाइठाम ओकरा पटुआ राखल, बोतो बान्हल टुटल भाडल घर मे सुतै लेल देने छलै।

तकर बाद एक दिन चाँदपुर जेबाक हुकुम भेलै। जल्दी-जल्दी जाए पड़तै, दिन-राति नाओ खेबि जेबाक बात। गणेश विरक्त भऽ भनभन करए लागल। शम्भु ओ बगा बहुत दिन सँ होसेनक अधीन काज करैए, ओ सब किछुओ ने बाजल, जानलगा करुआरि चला कुबेर के अवाक कऽ देलकै। होसेन के आब कने-कने चिन्हऽ लगलैए कुबेर। ओना तऽ समयक हिसाब मे होसेन कने शिथिल अइ, नाओक खेप मे माझी सभक देरी केने ओ किछुओ ने बाजत। शम्भु ओ बगा तँ करुआरि धरिते देह नेड़ा दैछ, कुबेर के ओ सब मोजर नजि दैछ, किन्तु होसेन जखन कहतै जे तेज चलओनाइ जरूरी छइ तखन शम्भु आ बगाक समस्त शिथिलता विलुप्त भऽ जाइ छइ। तेना ने करुआरि चलाओत ओ सब जेना देह पर भूत सबार भेल होइ। कुबेर मने-मन स्वीकार करैछ। ठीके, एही तरहे काज लेबऽ पड़ै छइ लोक सँ, एहने कौशल सऽ। कने-मने देरी भेने जखन किछु बिगड़ै नजि छइ तखन माझी सभक संग बकतुति करैक कोन प्रयोजन? जल्दीबाजीक समय तऽ दू बेर कहए नजि पड़ै छइ, कने इंगित पबिते सुस्तैल माझी सब हठात् बेसी कर्मठ भऽ उठैछ।

होसेनक बहुमुखी प्रतिभाक परिचय प्रतिनियत पबैए कुबेर। विस्तृत ओकर कर्मक्षेत्र, एतऽ-ओतऽ छिड़िएल ओकर जीवन, असम्बद्ध ओकर चलनाइ-फिरनाइ, तैयो चतुर्दिक सामंजस्य, सब नियमबद्ध। एक गोट जटिल विशृंखला जेना सब किछु शृंखलाबद्ध कऽ देने होइ।

चाँदपुर मे नाओ पर योग देलक होसेन मियाँ। एहू बेर नाओ चलल मयना द्वीपे दिस। नोआखालीक उपकूलक एगो छोट-छीन गाम लग नाओ बान्हल गेल। ओइ पर बोझाइ कएल गेल नारिकेर। बोझाइ शेष होइतहि किन्तु नाओ खोलबाक हुकुम नजि देलकै होसेन। दू दिन ओहीठाम निष्कर्मा भेल पड़ल रहल ओ सब।

तेसर दिन साँझक समय नदीक मोहाना दिस सँ मसुरी बोझाल विराट एक नाओ आबि भिड़लै। तइपर सँ चटगाम बासी एक बुढ़ मुसलमान उतरि आबि बड़ीकाल धरि होसेनक संग बतिआइत रहल। तकर बाद तिरपाल मे लपेटल कोनो सामान ओइ नाओ पर सँ एइ नाओ पर आएल। होसेन तकरा वेश यत्न सँ छाओनीक बीच पायतनक भीतर नुका रखलक। फेर होसेन आ ओ बुढ़बा मुसलमान तीर पर उतरि गेल। होसेन गनि-गनि कऽ कएकटा नोट ओकरा हाथ मे देलकै आ फेर नाओ पर आबि बाजल - नाओ खोल कुबेर भाइ।

कुबेर के बड़ कौतुहल होइ छलै। पायतनक नीचा की नुका कऽ रखलकए होसेन ? होसेन के पुछबाक साहस नजि भेलै कुबेर के। राति चढ़ने नाओ लगा भानसक ओरियान करबा काल ओ चुपचाप शम्भु सँ पुछलक।

शम्भु कहलकै - हफीम मियाँ, हफीम। चुप रह।

हफीम! तऽ की होसेन नुका कऽ हफीमक धंधा करैछ ? ई तऽ नीक बात नजि छइ। सभ दिस सँ कते ने आमद छइ होसेनक, तखन एहन असत काजें कमेबाक चेष्टा किए करैछ ओ ? ततबे किए, चोरीक हफीमक धंधा तऽ कोनो साधारण बात नजि भेलै। पकड़ल गेने कोन उपाय हैतै ? कुबेर के डर होमए लगलै। होसेन मियाँक संग जाइदिन ओ धेलक ताही दिन सँ ओ जनैए जे एक ने एक दिन आफत अएबे करतै, एकदम सँ सर्वनाश भऽ जेतै। आइ कुबेर आफतक असली रूप बुझि पओलक। आइ ने कालि हाथ मे हथकड़ी लगतै आ तकर बाद दू-दस साल जहलक बाहर खोजनहु कुबेर नजि भेटत।

छाओनीक भीतरक जगह होसेन मियाँ दखल केने अइ। नाओक उन्मुक्त अंश मे होगला पातक टाटीक तर माझी सब सुतैछ। पड़ल-पड़ल कुबेर मारिते रास चिन्ता केलक। एक बेर सोचलक जे एइ खेप गाम फिरने फेर ओ होसेन मियाँक नाओ पर काज नजि करत। जहल गेनाइ सँ भूखे मरि गेनाइए नीक। किन्तु भूखे मरबाक अनुभव छैक कुबेर के। होसेन मियाँक संग धेलाक बाद पहिले-पहिल ओ सम्पन्नताक सुख बुझलकए। ई काज छोड़ि देने जे ओकर की अवस्था हैतै से सोचिते ओ बुझि जाइए जे जानि-बुझि दारिद्र्य के वरण करबाक हिम्मत ओकरा नजि छइ। क्षोभे कुबेरक आँखि नोरा गेलै। ई केहन अन्याय होसेन मियाँक! ई झंझटिया काजक अतिरिक्तो तऽ ओकरा लग काजक अभाव नजि छइ, ताइ सब काज मे नजि लगा किए ओ एइ झंझटिया काज मे घीचि अनलकै कुबेर के ? कुबेर फेर सोचैए, एइ सब भयंकर काज मे जँ ओकरा मदति करए पड़तै, विपत्तिक भाग जँ भोगए पड़तैक, तखन लाभक अंशो तऽ भेटक चाहिए। जकरा जहल जेबाक सम्भावना हरदम बनले रहै छइ से की खाली करुआरि चलेबाक मजुरी पाबए ?

मने-मन कुबेर होसेनक संग झगड़ा करैए। कल्पना मे ओ बेड़-बेड़ एहन घटना सब घटबैत रहैछ। होसेनक गलती बुझा देने ओ वेश अनुत्त होइछ, चटपट डाँड़क करिया बेल्ट सँ एक बंडिल नोट बहार कऽ कऽ ओ कुबेर के दैछ! चारुकात सँ बड़का-बड़का चारिटा घर उठबैए कुबेर, बड़दधरा बनबैए, धानक ढक बनबैए, चार पर सजमनिक लती चढ़ा दैछ। तकर बाद एकदिन कपिला के लेआओन करैछ।

कपिलाक पैर दुनू गछारने बजैछ जे ओकरा बिनु हिया फाटि गेल छइ कुबेरक - हे कपिला, हमरा छोड़ि जुनि जो, जुनि जो तौ हमरा छोड़ि - हम जे मुइल जाइ छी तोरा बिनु।

केतुपुर पहुँचि एक अचरजक बात सुनलक कुबेर।

पीतमक घर मे चोरी भऽ गेलैए।

निशाभाग राति मे घर मे सेन्ह देलकै चोर। एगो पैघ तमघैल भरती टाका घरक कोनो कोन मे गाड़ि रखने छल पीतम, चोर के से जनबाक बात नजि छलै। तैयो ओतै सेन्ह दऽ चोरबा घैला लऽ गेलै।

टाकाक शोक मे बड़ झमान भऽ गेल अइ पीतम। चोरीक मादे ओ रासुए के सन्देह करैछ। रासू जे अपने सेन्ह देलक से बात ओ साफ-साफ नजि कहैछ, तखन चोरक साटि मे जे ओ छल तइ मे संदेह नजि छइ पीतम के। घरक भेदिया नजि रहने घैलक संधान केना पबैत चोर ?

पीतमक गारि गंजन सँ कहियो तामस नजि केलक रासू। किन्तु एइबेर चोरिक अपवाद देवामात्र पीतम के ओ नीक जकाँ अनुचित-उचित सुना चलि गेल। इहो वेश संदेहजनक।

ओ जेना चोरिक अपवाद सँ नजि, टाका लऽ पड़ाएल हो। एते दिन किए ने गेल तखन, जते दिन पीतम लग टाका छलै ?

कुबेरक जिज्ञासा करए गेने पीतम कानि-कानि चोरबा, रासू ओ दुनियाँ-संसारक विरुद्ध नालिस करए लागल। हाय, ओकर भरि जिनगीक संचय - सात कूड़ी तेरह टाका! कतऽ गेलै ओकर ओ पड़ैया असामी बेट, बुढ़ बाप मन पड़ने कहियो-ने-कहियो तऽ घुरतै—ताही आशा मे पीतम टाका जमा कऽ कऽ रखने छल। से की चोर के देबा लेल ? अभगला रासूक पेट मे जेबा लेल ?

कुबेर पुछलकै - रासू केना जनलक जे तमघैल कोनठाम गाड़ल छइ ?

से बात पीतम की जानए गेल ? रासू जे शैतान लोक, केना ने केना टोहि पाबि गेल जे तमघैल कोनठाम गाड़ल छइ। रासूक लेल ई कोनो असम्भव बात नजि। तमघैलक पता लगाबए भरिसक ओ आएल छल, पीतमक सेवा-टहल तऽ बहना छलै। भरिदिन ओ घर मे एइ कोन ओइ कोन घुरैत रहैत छल आ गहिकी नजरिए नीचा दिस तकैत रहैत छल। तखनिते संदेह भेल छलै पीतम के। हे दैव तखनिते जँ ओ सबधान भेल रहैत!

कुबेर के विश्वास नजि भेलै जे ई काज रासू केने हएत। तमघैल कतए गाड़ल छइ से जँ रासू के पता रहितै तऽ ओ चोरक संग साटि कऽ कऽ हिस्सेदार किए जुटबैत ? अपने तऽ अनायासे चुपचाप तमघैल उड़ा लित आ खाधि भरि नीपि-पोति दितै। पीतम के पतो चलितै तऽ कते दिनक बाद तकर कोन ठेकान। सेन्ह कटबाक झमेला रासू किए करए जाएत ?

चौकीदार थाना मे खबरि देने छलै। पुलिस आबि चोरिक खोज-खबरि लेलकै। पुलिस के देखि कुबेरक छाती धड़कऽ लगलै। होसेन मियाँक संग एइबेरक नाओयात्रा सँ घुरलाक बाद सँ पुलिसक लेल ओकर चिरन्तन स्वाभाविक भीति अस्वाभाविक रूपेँ प्रखर भऽ गेल छइ। पुलिस लग पीतम निधोख कहि देलकै जे रासू के ओ संदेह करैए।

रासू सँ बड़ पुछ-ताछ कएल गेलै। ओकर घरक तलाशी लेल गेलै। तकर बाद रासू के हथकड़ी बिनु पहिरओनहि पुलिस चलि गेलै। नजि, रासूक विरुद्ध कोनो प्रमाण नजि भेटलै।

पुलिसक गेलाक बाद पीतमक घरक सामने ठाढ़ भऽ रासू, जे मुह मे अएलै बजैत पीतम के अभिशप्त कएलक। के कहतै जे पीतम ओकर माम छइ।

तकर बाद एक दिन भोरे-भोरे कुबेर लग आबि पुछलकै, कहिया बियाह देबहक ?

कुबेर तैखन संदेह करैत बाजल— की बात छइ रे रासू ? पीतम ककाक टाका की तौही लेलहीए ?

रासूक मुह कने विवर्ण भऽ गेलै।

ओ बाजल — की कहै छहो लखाक बाउ, आजि ? हमरा टाका नजि है ? हम कि काम-धंधा नहि करै छिकी ?

कोन काम करै छै तौ ?

शीतल बाबू काम देलकैए, बाबू आर के नाओ पर। मामक घर मे चोरी करबै ? एहन बात फेनो नजि बोलिहऽ।

कुबेर कहलकै — तखन सगुनक टाका किए ने दऽ दै छै ?

रासू बाजल — देबऽ। बियाह कहिया देबऽ से पहिले कहऽ।

गोपी नीक भेल जाइत छल। ओना एखनो ओ नीके ना चलि-फिरि नजि पबैत छल तथापि आस्ते-आस्ते पैर मे जोर आएल जाइत छलै। मास दिनक

बाद ओकर बियाह कराओल जा सकैछ। किन्तु ताइ सँ पहिने कुबेर के टाका भेटि जेबाक चाहिए, बेटीक देह मे गहना पड़क चाहिए। रासूक मुहक बात पर निर्भर रहैबला नजि अइ कुबेर।

यथा समय टाका ओ गहना-गुड़िया देबाक बात कहि बिदा भऽ गेल रासू। बात कहि गेल ओ अनायासे, जेना बाबू लोकनिक नाओ पर काज पाबि ओकर टाकाक चिन्ता शेष भऽ गेल होइक, ओ जेना राताराती पैघ लोक भऽ गेल हो। इएह टाका ओ गहनाक बात सुनि एक दिन ओकरा मुह पर कालिमा घनीभूत भेल छलै, आइ से निर्भय निश्चिन्त।

माला बजैछ - रासू के जेना केनादन लगैए, हमरा डर होइए माझी।

कुबेर कहैछ, डरेबाक काम नजि एकरा।

आँई ? बाजि माला चुप भऽ जाइछ।

कुबेर गोपी के शोर पाड़ैछ। ओकरा लाठी पर भर दऽ कऽ चलै लेल कहै छइ। गोपी बड़ कष्टे उठि कऽ ठाढ़ होइए, कोनोना दू-एक डेग चलैए। कुबेर तीक्ष्ण दृष्टिजे देखैत बजैछ - ठीक भऽ जेतै गोपीक माए, एकदम ठीक भऽ जेतै गोपीक पैर। रासूक संग किए बियाह देबै ?

आर रासू के जे कहलकै ?

कुबेर एक गाल हँसैछ। बजैए — ई मौगीक जाति ने बुझै नजि छइ। रासू के हाथ मे रखने छी। जँ छौड़ीक पैर ठीक नजि भेलै तखन तऽ ओकरे संग बियाह देबै, आ जँ ठीक भऽ जेतै —

महाउत्साहे कुबेर असपतालक देल औषध गोपीक ठेहुन मे मालिस करैत रहैछ। जोर-जोर सँ रगड़ैत रहैए कुबेर आ छटपटाइत रहैए गोपी। कुबेर दमसबैत बजैछ - चुप, चुपचाप बैसल रह। जोर सँ मालिस नजि करबौ तऽ छुटतौ केना ? मालिस करैत-करैत ओ बीच-बीच मे ओकर ठेहुन दबा-दबा परीक्षा करैए। बजैछ, फुलनाइ कमलैए ने गोपीक माए ?

हँ, कम तऽ बुझाइए।

बाजि माला उत्सुक नजरिए गोपीक पैर दिस देखैत रहैछ। बड़ीकाल बाद कने लजाइत बजैए — एगो सेहन्ता रहलै माझी, बोलिए ?

हँ, एहिना भनिता करैछ माला। ओकर तमहा मुह कने रंगीन देखाइ छइ। आस्ते-आस्ते ओ कुबेर के जिज्ञासा करैछ, असपतालक जे डाकडर गोपीक पैर

ठीक कऽ देलकैए से की मालाक पैरक नजि किछु कऽ सकैछ ? एक बेर जा कऽ देखा एने होइतै। डाकडर जँ नजि किछु कऽ पाओत, नजि करत, मालाक बड़ इच्छा एक बेर जा देखा अएबाक। की कहैए कुबेर ?

कुबेर गम्भीर भऽ बजैछ, एकर पैरक किछु ने भऽ सकै छइ गोपीक माए।

किए ? हेतै ने किए ? माला पुछै छइ। अहा, एकबेर देखा अएबा मे दोषे की ? डाकडर यदि कहै जे किछु ने हेतै, अपने काने सुनि आबि निश्चिन्त भऽ जाएत माला। एक बेर लऽ तऽ चलौक कुबेर ओकरा, एको मिसिया माया जँ होइ ओकरा लेल कुबेरक छाती मे, एक बेर लऽ चलौक सदर असपताल। कुबेर की जानत जे नाडड़ पैर लऽ कऽ भरि जिनगी केहन दुख पोसि रखने अइ माला अपना मन मे।

नजि ? कुबेर नजि लऽ जेतै ? हाय रे कुबेरक पाथर हिरदे। मालाक आँखि नोरा जाइ छइ। आकुति-मिनती करैत ओ कहैत रहैछ जे बेटी खातिर कुबेर दस खेप असपताल जा-आबि सकैए, माला के एक बेर, मात्र एक बेर लऽ जाइ मे ओकरा आपत्ति। हँ, बड़ पाप केने छलि पछिला जनम मे माला, तँ एइबेर एहन जरल कपार लऽ जनम लेलक। कोरक बच्चा के दूध छोड़ा माला नीचा उतारि दैछ। घुरिकऽ बैसैत चौकठि मे ठक-ठक माथ ठोकैछ आ कानि-कानि मृत्यु के आवाहन करैछ, आ मृत्यु एहन निरदय जे माला सन कपरजरौनी दिस घुरिओ ने तकैछ।

चुप रहौ, चुप रहौ गोपीक माए।

किए, किए चुप रहत ओ ? कुबेर के माया छइ ने कि माला पर ? ओ तऽ कपिला जकाँ भंगिमा करैत नजि चलि सकैए जे तकरा लऽ कुबेर अमिनबाड़ीक असपताल जाएत, होटल मे महाआनन्दे राति कय आओत।

कुबेरक मुह विवर्ण भऽ गेलै। बाजल — ई की बजै छइ गोपीक माए ? खून कऽ देबै एकरा से कहि दै छिए हम। फेर सुर बदलि बजैछ — असपताल जाइ खातिर कानैक कोन काम छइ, आँए ? जाए चाहै छइ तऽ लऽ जेबै ने ! जे मुह मे अबै छइ से बाजि पित्त नजि चढ़बौ।

माला हिचुकैत बजैछ, लऽ जेतै ? ठीके लऽ जेतै ?

लऽ जेबै।

किन्तु माला के अमिनबाड़ी लऽ जेबाक पलखति कुबेर के नजि होइत छइ। एखन होसेन मियाँक काजक अन्त नजि। हरदम चलान अबै छइ, चलान जाइ

छड़। एइ साल जोर दमे बेवसाय आरम्भ कएने अइ होसेन। बीच मे फेर खेप नाओ लऽ कऽ ओही नोआखालीक उपकूल जाए पड़ल छलै कुबेर के, नारिकेर आ चोराइ हफीमक चलान आनै लेल। एइ बेर हफीम पहुँचा गेलै एगो स्टीमलंच। लंच पर एक साहेब आएल छलै, होसेन मियाँक तकरी की खातिर। हफीमक पोतरी लऽ नाओ चलबैत भरिबाट एगो आतंक पैसल रहलै कुबेरक मन मे। पछिला बेर घुरला पर होसेन मियाँ सब माझी के दस गो कऽ टका बकसीस देने रहै। ऐहू बेर देतै ताइ मे संदेह नजि, किन्तु टकाक बात सोचि मिसियो भरि आनन्द नजि भेलै कुबेर के।

गणेश पुछै छड़, की सोचै छहो कुबेर भाइ ? औंघाइ छहो किए ? मियाँ भाइ हाफीम खुआ देलकऽ ने की ?

कुबेर कहै छड़ चुप गदहा।

गणेश बजैछ — कुकीक मतारी रूपाक बाला मडैए कुबेर भाइ। सोचै छी जे एइबेर मियाँभाइ टका देने कुकी माए के बाला गढ़ाइए देबै। गणेशक खुसी जेना समाइते ने होइक। कुबेर के धकिअबैत बजैए, होसेन मियाँक नाओपर काम लऽ बड़ निमन केलऽ, टकाक मुह देखली।

कुबेर तीक्ष्ण दृष्टिजे सुदूर नदीवक्ष पर देखैत बजैछ — ओ की छड़ रे गणेशिया ? पुलिसक लंच ने की ?

हैं।

कुबेर सिहरैत पुछै छड़, कोन दिस जाइ छड़ ?

हमरे सबहक दिस अबैत लगैए कुबेर भाइ।

कुबेर विवर्ण मुह लेने होसेन मियाँ लग जाइछ। फिस-फिस कऽ बजैछ, मियाँ साब, पुलिसक लंच।

होसेन बिहुँसैत कहै छड़, करुआरि धरै गऽ कुबेर भाइ। होसेन मियाँ के रहते ककर डर। धार मे जाल फेकि माल निकालत कोन सालाक बेटा ?

हैं विपतिक आशंका भेने हफीमक बण्डिल नदी मे फेकि देनहि खिस्सा खतम। तैं भरिसक होसेन मियाँ सब समय नदी पथ सँ हफीमक चलान लबैए, ने तऽ नोआखाली होइ वा चट्टग्राम, रेल, स्टीमर सँ चौदपुर अएनाइ बेसी सुविधाजनक छड़। कुबेरक डर कने कमलै। तैयो दूर मे पुलिसक लंच दिस सँ ओ नजरि नजि हय पबैछ। आस्ते-आस्ते लंच जखन लग आबि कात दने चलि जाइ छड़, कुबेर ता साँस बन्द केने रहैछ।

एक दिन सकाल आडन घुरि कुबेर माला के नजि देखि पओलक। बाद मे गोपी कहलकै जे ओ रासूक संग अमिनबाड़ी असपताल गेलैए।

कुबेर तमसाइत पुछलकै, ककरा नाओ पर ?

बाबू आर के नाओ पर।

तीन दिन नदी मे बिता आएल कुबेरक मिजाज गरम छलै। तामसे ओ गुम भेल रहल। गोपी फट-फट विस्तार सँ सब बात कहि गेलै। माला कए दिन सँ रासू के खुसामद करै छलै। कालि मझिला बाबू कोनो मामिला मे अमिनबाड़ी गेलै, ताही सुयोगे बाबू के कहि-सुनि मालाओ रासू संग लागि गेलै।

मझिला बाबू। मझिला बाबूक नाओ पर माला अमिनबाड़ी गेलए ? ओ आँखि गुड़रि छौड़ी दिस तकैए, जेना अपराधी उएह हो।

गोपी डेराइत-डेराइत बजैछ, लखा संगे गेलैए बाउ।

कुबेर दिनभरि आडन सँ नजि टकसल। जिनगी जेना हठात् तीत भऽ गेलैए कुबेरक। समस्त सकाल ओ तामसे माहुर भेल रहल। निधू माझी गप-शप करै लेल अएने अकथ्य गारि-गंजन कऽ भगा देलकै ओकरा। बिनु दोषे चण्डी के डेडा कऽ अधमरु कऽ देलकै। तकर बाद बेर मे तामस कमने एलै विषाद, मन मे खाली इएह होइत रहलै जे माला प्रतिशोध लेलकैए। कपिलाक संग ओ जे एक राति अमिनबाड़ी मे बितओने छल, तैं माला मझिला बाबूक संग ओही अमिनबाड़ी गेलए, उपलक्ष उएह, बहन्ना असपताल जेबाक।

साँझ भऽ गेलै माला नजि फिरलै। अन्हार मे मुह नुकओने आएल होसेन। कुबेर के छोड़ि बड़का घर सँ सब के बहार कऽ देलक आ घरक बिचला खाम्ह धऽ उपर चढ़ि होसेन अपने हाथे चारक खढ़ हय छोट-छोट दू गोट बंडिल नुका रखलक। खाम्हपर चढ़ौ जनैए होसेन, जेना ओकर गुणक अंते ने होइ।

कुबेर चुपचाप ई अद्भुत काण्ड देखैत रहल, बाजल नजि किछु। होसेन उतरि आबि कहलकै, डेरैह' नजि कुबेर भाइ, डर नजि।

मोहासक्त सन भेल कुबेर माथ हिलओलक।

होसेन बैसल। बाजल जे जते दिन ओ पोतरी दुनू नजि लऽ जाइए तते दिन कुबेरक छुट्टी। दिन भरि धर बैसल आराम करत ओ। चार मे घुसिएल दुनू पोतरीक पहरा अबस्से करत ओ किन्तु बेर-बेर ओमहर तकबाक प्रयोजन नजि। बरु ओमहर एकदमे नजि तकनाइए नीक। नजि, किछुओ नुकाओल नजि छड़

कुबेरक घरक चार मे। अन्हार मे नुका कऽ आइ होसेन नजि आएल छलै। घाम
धऽ उपर चढ़ि घरक चार मे ओ किछुओ नुका कऽ नजि रखलकै।

की कुबेर भाइ, सएह ने ? होसेन बिहूँसैए।

हँ कहि कुबेर स्वीकृति दै छइ।

सब सँ विश्वासी, सब सँ निरापद पद्यानदीक एइ माझी के होसेन मियाँ
जेना सिनेह करैछ। कते टाका होसेन मियाँक दूर-दूर धरि छिटल-छिड़ोएल छल,
कते पैघ ओकर व्यवसाय, एगारह मील नाम एक द्वीपक ओ मालिक, कुबेर तऽ
ओकर चाकर छइ, तैयो कुबेरक फाटल चटाइ पर आराम सँ बैसैए होसेन, बन्धु
जकाँ बतिआइए। एखन होसेन के जेना चिन्हले ने जाइछ। होसेनक नाओ पर
काज लेबाक पूर्व कुबेर ओकरा मात्र एक मिलनसार लोकक रूप मे जनैत छल।
मारितेरास माध्यम सँ जे ओकरा कते टाकाक आमदनी छइ से एखन सोचैत माथ
चक्कर देबऽ लगै छइ कुबेर के! मात्र ओ आ गणेश जनैए, केतुपुरक आन केओ
नजि जनैछ होसेन मियाँक रहस्य।

पाइबला लोकक संग बेसी मेलजोल नजि छइ होसेनक। ओकरा लोकनिक
संग ओ खाली धंधा करैए, माल दऽ टाका लैए - टाका दऽ माल लैए। माझी
सब ओकर बन्धु। खाली समय ओ पद्याक दीन-दुखी माझी सबहक संग गप-
शप कऽ क बितबैए। टाका भरती फुलल बैंग जेबी मे धेने बरसाक राति जीर्ण-
शीर्ण चारक नीचा चटाइ पर निश्चिन्त सुति रहैए।

ओइ राति माला नजि घुरलै।

दोसर दिन प्रायः बारहक धत्पत् हाथ पर भर देने हिल-डोल करैत ओ
गृह-प्रवेश कएलक। नदी-घाट सँ एतेदूरक बाट एहि तरहें अएबा मे ओकर कपड़ा
मे कादो-माटि लेभरा गेल छइ। कुबेर खाए लेल बैसल छल, एक बेर कनडेरिए
देखि फेर भोजन मे मन देलक। घरक भीतर जा कपड़ा बदलि माला ओसारा
पर आबि बैसल। कुबेर आँखि उठाइयो कऽ ने देखैछ। चिचिया कऽ पीसी के
आर कने भात दऽ जाइ लेल कहै छइ।

माला बजैछ, सुनै छइ।

नजि, कुबेर नजि सुनैए, ओ बहीर भऽ गेल अइ।

माला बजैछ, ई तऽ नहिजे लऽ गेलै, रासू जरे तें असपताल गेल रहलिये।
एकरा तामस भऽ गेलै ?

114 / पद्यानदीक माझी

कनेकाल जवाबक अपेक्षा करैछ माला। फेर करुण कण्ठे बजैछ, डाकडर
कहलकै जे ठीक होइवला नजि है पैर हमर।

आर कते की बजैए माला, किन्तु कुबेर चुप्पी सधने रहैछ। खा कऽ उठि
मुह हाथ धो आबि चुपचाप चिलम पिबैत रहैछ। ओहो कि कम जिद्दी अइ।

अन्त मे खिसिया कऽ बजैए माला, किए माझी किए, एते तामस किए ?
कहिया, कहाँ लऽ गेलै हमरा ? भरि जिनगी तऽ घरे मे ने रहली, आ एक दिन
खातिर जँ बहराइए गेली तऽ तइ लेल तमसेत किए ?

जाउक ने, घुरौक गऽ मझिला बाबूक संग - हरामजादी, बरजाति।

की बजलै माझी, की बजलै ?

तकर बाद की जे कलह दुनू मे बझि गेलै। पड़ोसी सब दौड़ल आबि
थहाथही केने तमासा देख' लगलै। अन्त मे हठात् तमसा कऽ कुबेर चिलम फेंकि
मारलकै माला के। चिलमक आगि सँ मालाक कोरक शिशु कएक ठाम पाकि गेलै,
मालाक नुआ मे सेहो आगि धऽ लेलकै। सिधूक बहिन दौड़ि ओकर नुआ खोलि
फेंकि देलकै आ अपन आँचर सँ ओकर लाज झँपलक। दुखिया बेचारी, गुदरी-
गुदरी भेल ओकर नुआ।

अडना मे स्त्री पुरुषक भीड़ लागल, ओकरा लोकनिक सामने एक पंगु
असहाय स्त्रीक एहन दशा। मालाक दुरबस्था देखि मजा पाबि सब हँसैए के जेना
थपड़ी बजओलक। एते काल बाद जेना कुबेरक चेतना जगलै। ओसारा पर सँ
आडन मे कुदि गारि-गंजन दैत सकल के आडन सँ बाहर केलक। तकर बाद
अपने बला एगो धोती आनि माला के देलकै।

क्रमे-क्रमे जाड़ कमलै।

केतुपुर गाम आ मलहयेलीक बीचक सोती सुखा गेलै। पद्याक पानिओ
काफी कमलैए। आस्ते-आस्ते खेत सभ फसल शून्य भऽ खाँ-खाँ कऽ लागल।
खुर-पेरिया साफ ओ चिक्कन भऽ गेल छलै। आमगाछ सभ मे नव पल्लव देखना
जाइत छलै। देखिते-देखिते देश मे जेना चिड़ै-चुनमुनीक संख्या बढ़ि गेल होइ।
हँजक हँज बनैया हंस उड़ैत देखल जाइछ। उत्तराभिमुखी नाओ सब पाल तनने
दक्षिणक तेज बसात मे तीव्र गतिजे भासल जाइछ, दूर चल गेने अतिथि हंस सब
सन रहस्यमय लगैछ। दूध माछ वेश सस्त भेलैए। पद्याक चर सँ कलासीक कलसी
दूध अबैछ आ बाजार मे चारि पैसे सेर बिका जाइछ।

पद्यानदीक माझी / 115

जड़काला मे कोकड़ाएल गाम सब अंगैठी मोड़ करैत देह झाड़लकए। साँझ परात माला कपड़ा भाँज कऽ कऽ लखा ओ चण्डी के गाँती नजि बन्हैछ। खालिए देह ओ सब सुखाएल डबरा पोखरि मे कादो-माटि गीजि माछ पकड़ऽ जाइछ। फाटल चाम उठि गेने देहक चाम मोलाएम भेल जाइ छइ। एक मुठ्ठी अतिरिक्त यौवन जेना आएल होइ मालाक देह मे। माला मन पड़िते कुबेरक निन्न उचटि जाइ छइ, कोनो दिन घरे मे, कोनो दिन पद्माक वक्ष पर।

रासूक संग गोपीक बियाहक व्यवस्था किन्तु खारिज भऽ गेल छइ। इहो कीर्ति होसेन मियाँक। सोनाखालीक एगो लड़का होसेन ठीक कऽ देने छइ गोपीक लेल, नाम छइ बंकू, बयस बेसी नजि। एइ दुनियाँ मे बंकूक अपन कहि केओ नजि छइ से ठीके, किन्तु होसेन मियाँ छइ। होसेन मियाँ जकर अभिभावक तकरा अभावे कथिक। बंकू पाँच कूड़ी टका दहेज मे देतै कुबेर के, गोपी के देतै तीन कूड़ी टकाक गहना, आ एक दिन मलहटोली मे सबजना भोज।

कुबेर के ई बात बुझबा मे भाडठ नजि छलै जे बियाहक बाद नव दम्पति के होसेन मियाँ मयना द्वीप लऽ जेतै। किन्तु बुझिए कऽ की लाभ ? होसेन मियाँक अवाध्य केना भऽ सकत कुबेर। ततबे नजि, पाँच कूड़ी टकाक मोह-त्याग करबाक साहस सेहो नजि छइ कुबेर के। बियाह भेने बेटी परक घर तऽ जाइते छइ, लग हो अथवा दूर। गोपी ने कने दूरे जाएत - बहुत दूरक मयनाद्वीप। भऽ सकै कहियो काल कुबेरक मन केनादन करतै, किन्तु तकर प्रतिकार की ? मन तऽ कतेको कारणे केनादन करैछ लोकक।

खबरि पाबि रासू गारा-गारी कऽ गेलैए। बजलै जे जूबान दऽ कऽ पलटि गेल कुबेर, ओ कुबेरक सर्वनाश कऽ कऽ छोड़तै। ओ भरिसक जुगी के पकड़लक, तकर बाद एक दिन शीतल आबि कते ने ओकालती कऽ गेलै कुबेर लग। कहलकै जे कुबेर के बेसी चाहिए तऽ से बाजल ने किए ? सोनाखालीक लड़का जते टका दै छइ रासूओ तते देतै। गाम मे रासू सन उपयुक्त लड़का अछैत बेटी के दूर देश किए पठाओत कुबेर ?

किए ? एइ किएक जवाब देबाक क्षमता नजि छइ कुबेर के। मयनाद्वीप जा गोपी के बास करए पड़तै से सोचैत जाल मे फँसल हिलसा माछ जकाँ ओकरो मन की छटपट नजि करै छइ ? तैयो ओकरा ई सब कहनाइ बेकार।

एक दिन गोयालन्द मे अधरक संग भेंट भेलै कुबेर के। अधर कहलकै जे कए दिन पहिने कपिला चड़ड़ांगा आएलए। किछु दिन रहत। घर घुरि कुबेर ताइ

दिन मालाक प्रति वेश सिनेह देखओलक। बाजल जे माला बहुत दिन सँ नहिआ नजि गेलए, ओकरा की मन नजि होइ छइ जेबाक ? मन होइ तऽ बरु चलओ कालि, दू-चारि दिन रहि आओत। माला कहै छइ नजि, नजि छइ ओकर मन नहिआ जेबाक, बाप कि आबै लेल कहलकैए ओकरा ? एते दिन सँ जे ओ नजि गेलए, एको बेर की तकरा देखै लेल अएलै। कानऽ कानऽ सन मुह भऽ जाइ छइ मालाक। बजैछ जे उएह खाली मुइल जाइए बाप-भाइक चिन्ता मे, एकरा लेल ओकरा लोकनि के ककरो कोनो माया-मोह नजि छइ। अपने सँ किए जाएत ओ नहिआ ? कुबेर विपन्न सन भेल बजैछ, गेने दोषे की ? बापक घर, अपने जेबा मे कोन लाज ? बिहाने चलओ माला, दू-एक दिन बाद घुरि आओत।

एइबेर माला संदेह करैत पुछै—छइ जाइ लै ई एना जिद किए करै छइ ?

जिद कथिक ? आबेसे कहलिए, जिद!

माला पर बड़ तामस होइ छइ कुबेर के। चड़ड़ांगा जेबाक आर कोनो दोसर बहाना नजि छइ ओकरा लग। जमायक अकारणे सासुर गेने अबस्से कोनो दोष नजि होइ छइ, किन्तु एखन कपिला ओइठाम अइ, हठात् कुबेरक आबिर्भाव देखि जानि ने की सोचि बैसय। बैसल-बैसल कुबेर बहाना सोचैछ आ रहि-रहि कुद्ध दृष्टिजे माला दिस तकैछ।

है, आइ वसन्तक आदर्श समय केतुपुर मे आएलए। होरी छइ कालि। लखा ओ चण्डी आइए अबीर किनि आनि आडन मे कने उड़बो केलकए।

बेर मे पद्माक घाट पर नाओक तदारकी करै गेने कुबेरक मन जेना आर व्याकुल भऽ गेलै। काव्यक मसृण मार्जित व्याकुलता नजि, ओकर भीरु प्रकृतिक संग जतबा मेल खाइछ, ततबे तेज मानसिक अस्थिरता। भरिपेट भोजन भेटने कुबेरक स्वास्थ्य नीक भेलैए, पहिने खेनाइ सँ जतबा शक्ति भेटितै, खर्च करए पड़ैत छलै तकर दसगुन बेसी। एखन सएहत्य बन्न नजि भेलैए, विश्रामो वेश भेटै छइ। ताइ सँ जेना मनोक व्याकुल हेबाक क्षमता बढ़लैए आ घटलैए तऽ दुर्बल अभिमान, जे भाँग वा हफीमक नेसा जकाँ कुबेरक मन के कमोवेश शान्त केने रहैत छलै पहिने। नाओ पर बैसि जेना कुबेर बिसरि जाइछ जे कपिला कते निष्ठुर जकाँ, कते दुर्बोध निर्मम खेला केने छलै ओकरा संग। मन पड़ै छइ खाली कपिला, ओकर लीला-चपलता, ओकर हँसी आ इशारा, तेल मे भीजल ओकर केश-कपार आ बैगनी रंगक साड़ी। आर मन पड़ैत छइ श्यामादासक ओसारा भोरे-भोर गोबर सँ नीपैत कपिला के, मालाके कहबाक अनुरोध मिञ्जर शेष

कातर कथा सब किए आएल छलहो माझी, पुछने छलै ने कपिला ? हैं ओइ पुछबाक मतलब कुबेर बुझैए। तें फेर जाए चाहैछ कुबेर कपिला लग, एखने जाए चाहैछ। शस्यहीन सुखाएल खेत सब पार करैत हकमैत एकसुरे चड़डांगा, जतए कपिला केश बन्हैत हएत। कुबेर के देखि शीशी टेढ़ कऽ कऽ आर कने तेल ओ अपन माथ मे दारत। ओकर उत्तोलित दूट बाँहि, छलनामयी हँसी, बैसबाक दुर्विनीत भंगिमा – सब जेना बताह बना देतै कुबेर के। घाट पर आरो नाओ छइ, माझी छइ। नीक नजि लगै छइ कुबेर के एइठाम रहनाइ, धरो घुरबाक मन नजि होइ छइ। ओ नदीक कातेकात चलब आरम्भ कऽ दैछ, खसबा लेल प्रस्तुत तीरक दरकल अंश सबहक उपर देने। चलैत-चलैत एक समय दस-बारह हाथक घसना ओकरा लेनहि नीचा खसि पड़ै छइ, जतए सँ जड़कलाक पद्माक पानि हाथ पन्द्रहेक पाछु चल गेल छइ। माटिक कोनो खण्ड प्रायः माथ पर आघात दऽ कुबेर के अज्ञान कऽ देलकै। मिनिट दसेक बाद ज्ञान फिरलै कुबेरक। पहिने ओकरा बुझैलै जे इहो जेना कपिलाक कोनो कौतुक हो। तकर बाद वेश कष्टे उठि कऽ बैसैत ओ निश्चेष्ट भेल पड़ल रहैछ। दिनान्तक सूर्य जेना पद्मा के सेहो निश्चेष्ट कऽ देने होइक, दूरक नाओ सब एवं आरो दूरक स्टीमर जेना गतिहीन भऽ गेल हो। बसातक जोर नजि, नदीक कल-कल शब्दो जेना क्लान्त। अपने असम्बद्ध चिन्ता सब के कुबेर नीक जकाँ नजि बुझि पबैए। माथ मे जेना टीस मारैत होइ। माथक बाम दिस सँ जेना कने सोनितो बहलैए। तें एखन केबल गणेशक ओ गीत सब किए मन पड़ैत — *पिरीत केलिए पागल भेलिए सखी, आ हे सखी ?* कुबेर ककरा संग पिरीत कऽ कऽ एना पगलैल अइ ? कपिलाक संग ? हैं, बड़ काँच अइ कपिला। तकरा संग पिरीत। कुबेर की कोनो बच्चा अइ ?

पद्मा मे नहा कऽ कुबेर आडन आएल। भात खा कऽ बैसैत हठात् बाजल, चरडाडा जेबें लखा ?

जेबै बाउ, जेबै।

कालि बिहाने रमाना देव, आँइ ?

हैं, ई बहाना बेजाए नजि। होरीक उत्सव मे मामागाम जाएत छओँडा सब। असगर तऽ ओ सब नजि जा सकत, तें कुबेर संग जेतै। ककरो धनको ने लगतै जे कुबेर के कोन आकर्षण खींचि अनलकैए।

माला कहलकै – हे लऽ जेतै तऽ हमरो लऽ चलौ।

कुबेर बजैछ, नजि, एकरा नजि लऽ जेबै। पहिने किए कहलकै जे नजि जेतै ?

118 / पद्मानदीक माझी

बाँचि गेल कुबेर। माला के लऽ कऽ चड़डांगा गेनाइ की असान काज छइ। पहिने राजी नजि भऽ नीके केलकै माला, डोलीक भाड़ा तऽ बँचलै।

माला एखन जाए चाहैए। बेटी सब के लऽ कऽ जै सरिपहुँ कुबेर चड़डांगा जाएत तखन से किए ने जाएत ? कुबेर तऽ ओकर इच्छा अनिच्छा के बात पुछने छलै, तें ने पहिने ओ राजी नजि भेल छलै। माला आब घरबलाक खुसामद आरम्भ करैए। राति मे कने रागा-रागी, कन्ना-काटी केनाइयो नजि छोड़लक, किन्तु कुबेर अटल। माला किए कहलकै जे ओ नजि जाएत ? कुबेर जखन आवेश सँ कहने छलै तखन बहादुरी देखबैत अस्वीकार किए केलक ? आब मरिओ गेने कुबेर ओकरा चड़डांगा नजि लऽ जेतै। हैं, कुबेरक जिद माला नजि जनैए। की बुझैए ओ कुबेर के ?

पहर राति अछैते कुबेर लखा ओ चण्डी के घीचि-तीरि उठा रमाना भऽ गेल। अपन माथ-कपार पीटैत जाइ लेल घओना पसारलक माला, कुबेर किन्तु घुरियो कऽ ने तकलक। सबेर सकाल ओ सब चड़डांगा पहुँचि गेल। चलैत-चलैत छओँडा दुनूक पैर दुखा गेलै। बीच-बीच मे चण्डी के कोरा लऽ चलैक कारणे कुबेर हकमऽ लागल छल। ससुरक ओसारा पर बैसि तौनी सँ ओ घाम पोछऽ लागल। कने कालक बाद कपिला एगो पंखा आनि कऽ देलकै। कुबेर खुसी होइत पुछलकै – केना अएलें कपिला ?

केना देखै छहो ?

काहिल देखाइ छौ तोरा।

हैं, काहिल भेल छी।

कुबेर व्यग्रताक संग जिज्ञासा करैछ, से किए कपिला, कोनो रोग-बलाए ? मनरोग माझी, मन-रोग। तोरे लागी सोचैत-सोचैत काहिल भेल छी।

बजैत-बजैत आँचर तर सँ बहार कऽ कऽ एक बरुकी हरदि-चून कुबेरक देह पर छिटि दैछ कपिला। ओ हैंसैत-हँसैत लोटपोट भेल जाइए। कुबेर बाँक भेल देखैत रहैछ। दुख अथवा सुख, कथी के ओकरा रोमांच होइ छइ से नजि बुझि पबैए कुबेर। केतुपुर मे जखन छलि, तखनो एहिना हैंसैत छलि कपिला। आकुरटकुर मे श्यामादासक आडन मे एइ हँसीक आभासो धरि कपिलाक मुह पर नजि देखि पओने छल कुबेर।

कपिलाक हँसनाइ सुनि बैकुण्ठ बाहर अबैछ। लखा ओ चण्डी के संग लऽ कपिला चलि जाइछ भीतर।

पद्मानदीक माझी / 119

श्यामादास लग बैकुण्ठ मयनाद्रीपक बात सुनने छल। ओ उएह बात आरंभ केलक। गप मे कुबेरक मन नजि छलै, ओ अन्यमनस्क भावें बैकुण्ठक बातक जवाब दैत रहल।

रंग-अबीर आ कादो-माटि लऽ गाम मे होरीक उत्सव होइछ, ओना कादो-माटिक परिमाणे बेसी। जन-बोनिहार, माझी-मलाहक टोल, एइठाम रंगक वेश अभाव। वेश दिन चढ़ला पर कादो-माटि मे लेभराएल मूर्ति-समूहक शोभायात्रा बहार भेल गाम घुरै लेल। गदहा सन लघुकाय एक घोड़ा पर विचित्र साज-शृंगार केने होरीक राजा वेश कष्टक संग बैसल, गरदिन मे ओकर फाटल पुरान जुत्ता-चट्टीक माला, देह मे गोर दसेक चेथरा-चेथरी भेल अंगा आ चारुकात लटकल कएकटा झाड़न। सोझा दऽ जाइतकाल शोभायात्राक लोक सब कुबेर, बैकुण्ठ ओ अधर के कादो-माटि लेपने गेलै। अधर ओइ दल मे भिड़ि गेल। ताथै-ताथै नाच, दौड़-बड़हा, हल्ला-गुल्ला आ पोखरि-डबराक कादो उठा जकरा मन होइ फेकि मारनाइ - अद्भुत आनन्द होरीक! कने इतस्ततः करैत लखा ओ चण्डी अधरक संग योग देबा लेल पड़ाएल, कुबेरक बारन केनाइ जेना सुनबे ने केने हो।

कादो-माटि धो नहा एबाक उद्देशे कुबेर पोखरि गेल। कपिला भरिसक खबरि पाबि गेलै। कनिए कालक बाद ओहो पोखरिक घाट पर हाजिर।

हमरा रंग नजि देलहो माझी ?

कादो दियौ कपिला ? रंग तऽ नजि अइ।

दूर हो! रंग नजि हइ, कादो देतै! कादो नजि माझी, कादो नजि देबहो से कहि दै छिअ।

कपिला कादो देब मना करैछ किन्तु पैर पिछड़ि कादोए मे ओंघराइत पानि मे जा खसैए। कलसी हाथ सँ छुटि भसिया कऽ कुबेर दिस चलि जाइ छइ। कपिला बजैछ, धरहो माझी, कलसी धरहो।

बजैछ, हमरा किए धरै छहो ? कलसी धरहो ने।

हँ, भीत दृष्टिअे चकुआइत कपिला कलसीए जकाँ भसिआइत रहैछ। तहिना भीतसन ओकर स्तन दुनू उब-डुब करैछ। पल खसिते छाती पर आँचर खीचि कपिला हँसबाक भान करैत बजैछ - कुछो बोलै जे नजि छहो माझी ?

कुबेर बजैए - की बजियौ कपिला, दिन-राति मन जे तोरे पर टडल रहैए।

कपिला पुछलकै - किए माझी ? हमरा पर किए ? हम तऽ अपन

सोआमीक घर गेली ने ? बिसरि जाहो हमरा - मरद आर के मन - कते दिन! गंगा मे नाओ भसा दूर देश चलि जइहऽ - बिसरि जाहो हमरा। छोड़हो आब लोक आर अबै हइ।

हेलि कऽ कपिला कलसी पकड़ि अनैछ। नुआ सरिया भरल कलसी काँखतर दबने पिच्छड़-ढालू पार करैत उपर उठि जाइछ। हँ, घुरि कऽ एक खेप तकैए अबस्से कपिला, भरल कलसीक पानि कने उछलि जाइ छइ।

दुपहर मे खा कऽ उठैत बजैए कुबेर, लखा, चण्डी, चल विदा हो। दिन-देखार गाम घुरबाक अइ।

माला विस्मित होइत बाजलि, आइए घुरि एलै जे!

एकरो नहिरा मे लोक रहै छइ।

बाट चलैत-चलैत लखा ओ चण्डी अधमरु सन भऽ गेल छल। कुबेरो कम थाकल नजि छल। बीच-बीच मे सुस्ताइत चलैत गाम पहुँचै मे ओकरा सब के पहिल साँझ बीति गेल छलै। लखा आ चण्डी दू कओर भात खा सुति रहलै। कपिला चड़डांगा आएल अइ से बात ओकरा लोकनिक मुहे सुनि माला गम्भीर भऽ गेल छल। कुबेर सँ ओ आर किछु ने पुछलकै। नाडड़ पैर सोझ करैक चेष्टा मे भरिसक एकबेर ओकर मुह विकृत भऽ गेलै। कपिला के गेलाक बाद सँ अपन पंगुताक मादे ओ कने बेसिए सचेष्ट भऽ गेलए। कोंकड़ैल सुखैल पैर के ओ जखन तखन सोझ करबाक चेष्टा करैत रहैछ, कखनो काल दुनू हाथें जोर-जोर सँ पैर के दबैत रहैछ। जन्मे सँ अभ्यस्त रहितो एते दिनक बाद विकलांगता जेना माला के बेसी व्यथित करैत होइ।

घरक दक्षिण मे कने जगह खाली छलै। गोपीक बियाहक पहिने ओइठाम एगो घर ठाढ़ करबाक बात नेआरने छल कुबेर। एतेदिन पलखति नजि छलै, एखन होसेनक चलानक कारबारक मन्दी छइ। गाम पर रहबाक समय पबैए कुबेर। चड़डांगा सँ घुरलाक परात ओ बाबू सब सँ घर बन्हबाक अनुमति लेबै लेल गेल।

कुबेर कि जनैत छल जे अनुमति लेल ओकरा मझिले बाबूक दरबार कर' पड़तै। माथ झुकओने परनाम कऽ हाथ जोड़ि मझिल बाबूक सामने ठाढ़ होमए पड़लै कुबेर के। करुण कण्ठे आवेदन करए पड़लै। घर बान्हत कुबेर। मझिला बाबू हँसैत बजै छथि। तखा-पोसक सामने जमीन पर चुक्कीमाली भऽ बैसबाक

अनुमति भेटलै कुबेर के, किन्तु युक्त कर मुक्त करबाक नियम नजि। मझिला बाबू मलहटोलीक हाल-चाल पुछलथिन। के केना अइ, ककर की अवस्था छइ, एइ साल माछ केना की पड़ै छइ ? एक समय मलहटोलीक घरे-घर अबरजात छलनि हुनकर। शिक्षा ओ स्वास्थ्य सम्बन्धी ज्ञान बिलहि माझी लोकनिक जीवन-स्तर उन्नततर करबाक झोंक मे आभिजात्य बिसरि गेल छला ओ। शिक्षा तऽ माझी सब के नजि भेटलै तखन दुर्नाम धरि अबस्से भेटलै ओकरा सबहक बहु-धी के। गामे-गाम सोरहा भऽ गेल छलै जे केतुपुरक मझिला मालिक मलहटोलीक रमणी सब के सुआदैत फिरै छथि - मलहटोली ने कि हुनक प्रणयिनीक उपनिवेश थिक। आइ कालि आर मलहटोली दिस जेबाक पलखति नजि होइ छनि हुनका। कोनो माझी सँ भेंट भऽ गेने हाल-चाल पुछि लै छथि। साँझ-परात मलहटोलीक टुटली मड़ैया मे जा समय व्यतीत करबाक समयो जे अपार व्यवधान मलाह सबहक संग माझिल जमिनदारक रहि गेल छल, कोनो मंत्रे से मेटेबाक नजि। माझी सब विरक्त संतुष्ट भऽ उठल छल, नीक करबाक इच्छा सँ बड़का लोक कहिया गरीबक मन जय कऽ पओलक ? जमिनदार साहेब होसेन मियाँ नजि छथि। दुर्नीति, दारिद्र्य, अन्तहीन सरलताक संग निम्न स्तरक चालाकी, अविश्वास ओ संदेहक संग एकान्त निर्भय, अन्ध धर्मविश्वासक संग अधर्म के अनायासे सहैत चलनाइ - ई सब जकरा लोकनिक जीवन मे एकाकार भऽ गेल छइ, पद्माक वक्ष पर नाओ भसा जे सब भावुक कवि, उपर मे गरीब छोटलोक, से सब लोकक पता मझिला बाबू के केना भेटतनि ? ई काज सम्भव छइ होसेन मियाँ सन लोकक लेल, मझिला बाबू सँ बेसी टाकाक रोजगार करितो जकर माझित्व नजि गेलै।

माला ? हैं, मालाक मादे सेहो जिज्ञासा केलथिन माझिल बाबू। मालाक पैरक जे चिकित्सा चलैत छलै तकर की भेलै ? तकर बाद खलिया जगह मे घर ठाढ़ करबाक अनुमति दऽ कुबेर के ओ विदा केलनि।

माला आइयो मुह लटकओने छलि। मुदा कौतुहल तऽ दमन नजि कएल जा सकैछ।

की कहलकै मझिला बाबू ?

की कहतै ? एकरा दऽ पुछै छलै।

हैं।

नाओ पर चढ़ा फेर एकरा असपताल लऽ जेतै - से कहलकै।

सहज गमार अइ कुबेर। मन मे एक बेर जे बात पैसि गेलै से सहजे बहराइबला नजि। मझिला बाबूक नाओ पर माला जे अमिनबाड़ी गेल छलि,

कते दिन जे ई बात ओ मन मे पोसने रहत से उएह जनैए। सम्भव छइ माला जखन बुढ़ि भऽ जाएत, विकल पैरे सन ओकर सर्वांग सुखा-टटा जेतै तखनो ई बात नजि बिसरत कुबेर। झगड़ा-दन कऽकऽ माला कनैछ। मृत्यु कामना करैछ अपन किन्तु एइ मादे कुबेर कठोर, निर्मम। आन विषय मे मालाक संग ओकर व्यवहार नजि बदलै छइ। पंगु असहाय स्त्रीक जीवन ओकरे वक्षक आश्रय पाबि आइयो उद्वेलित होइ छइ, किन्तु अमिनबाड़ी जेबाक लेल ओ निर्विकार माला के पीड़ित करैछ। भऽ सकैछ आइए राति कुबेर माला के छाती मे साटि मीठ-मीठ बात करत, पद्माक ठण्डा बसात मे जुड़ा मधुमय व्यवहार भऽ जेतै कुबेरक! आ कालि फेर भऽ सकैछ कनओतै माला के मझिला बाबूक नाम लऽ। एहने प्रकृति पद्मा नदीक माझीक, भद्रलोक सन एकसुरा संकीर्णता नजि, विराट विस्तारित सम्मिश्रण।

घर बनै मे दिन दसेक समय लगलै। तकर बाद एक दिन बंकूक संग बियाह भऽ गेलै गोपीक।

बियाह मे कपिला अएलै। ओकरा नजि अएने बियाह मे काज-उदेम के करितै ? माला तऽ पंगु अइ।

ओकरा देखिते कुबेर आनन्द विभोर भऽ बाजए लागल - अएले कपिला, अएले ? कुबेर जे बिसरि गेल अइ चड़ङागाक पोखरि मे की बात भेल छलै कपिलाक संग। किन्तु कपिला सब मन पाड़ि दै छइ। काते-काते पड़ाएल फिरैए कपिला, ढेकी-घर मे ठाढ़ भेल कुबेर इसारा सँ लग बजओने ओ मुह घुरओने रहैछ। ई तऽ छलना नजि, खेला नजि कपिलाक। एइ बेर की जेना सोचि अबैए कपिला, वेश गम्भीर अइ ओ। कने हँसी, दू एगो बातक कंगाल अइ कुबेर, किन्तु कपिलाक हँसी कतऽ ? बात कहाँ कपिलाक मुह मे ?

हरदि लेपैत-लेपैत हरदिए सन पिअर भऽ बियाह भऽ गेलै गोपीक। बर-कनियाँ के बिदा कऽ कुबेर पद्माक नाओपर चढ़ा आएल। गोपी फेर घुरि कऽ आओत। कोनो जल्दबाजी नजि छइ होसेन मियाँ के। बंकू आ गोपी दू मास देशे मे रहओ, तइ मे आपत्ति नजि करतै ओ।

बियाहक बाद कपिला के घुरि जेबाक बात छलै, की ने सोचि से रहि गेलि। किछु दिनक बाद श्यामादास आबि ओकरा आकुर-ठाकुर लऽ जेतै। दू दिनक बाद कुबेर के होसेन मियाँक एगो चलान आनए जाए पड़लै। मिल दसेक दूर स्रोतक प्रतिकूल एक गामक घाटपर नाओ लगा ओ ताइ पर पाट बोझाइ कएलक। तकर बाद देर राति देवीगंज घुरि आएल।

सब के सब थाकि गेल छल। एते राति कऽ केतुपुर घुरै लेल राजी नजि भेल। कुबेरक मन लागल छलै घरे पर। ओ धारक काते-कात घरमुहा चलब शुरु कएलक। नदी मे मलाहक नाओ सबहक इजोत एमहर-ओमहर अबैत-जाइत रहैछ, पद्मा मे माछ धेनाइ कामहि नजि। चलैत-चलैत कते कि सोचैए कुबेर। ककरो नित्र बिनु तोड़नहि कपिला के की जगाओल नजि जा सकैछ ? कपिला सँ आर किछु ने चाहैछ कुबेर, मात्र एकान्त मे दू-एकटा सुख-दुखक बातटा करत। कने कौतुक करत कपिलाक संग। बाँसक करची सन अवाध्य-भंगिमा मे तनि कऽ ठाढ़ भेल कपिला टिटकारी देत ओकरा, पकड़ि कऽ झुकाबए चाहने ओ लुद दऽ कादोए मे बैसि रहतै आ बिहुँसैत नदी तीर कें रोमांचित कऽ देत।

आर किछुओ नजि चाहैछ कुबेर।

केतुपुर घाटपर पहुँचि कुबेरक छाती मे हठात् थरथरी धऽ लेलकै, कण्ठ सुखा गेलै ओकर। ओ स्पष्ट देखलक जे उज्जर नुआ पहिरने एगो स्त्री एते राति मे घाटपर ठाढ़ अइ। कतौ कोनो लोकक अता-पता नजि, पद्माक पानि केबल छड़पान मारि दड़कल तीर के खसेबाक प्रयास करैछ। नदीक बसात मे उजरा नुआ उड़िआइ छइ एकाकिनी रमणीक।

भीत कर्कश कण्ठे कुबेर बाजल, के ठाढ़ अइ ओतऽ, के ?

ओ रमणी नदी दिस मुह केने ठाढ़ छलि, कुबेरक गलाक आवाज सुनि ओ चौकलि। तकर बाद वेश व्यग्रताक संग पुछलकै — के, माझी, एलहो ?

कुबेर अर्चभित होइत पुछलकै, कपिला। निशाभाग राति मे असगर घाट पर तों की करै छें कपिला ?

कपिला लग एलै, कहलकै, डर लगै छल माझी।

तकर बाद आर लग एलै कपिला, कुबेरक छातीपर मुह राखि ओ कानए लगलै। कनैत-कनैत बाजलि, बड़का जुलुम भऽ गेलै। आइ बेरिया मे हठात् पुलिस आबि कुबेरक घर तलासी लेलकै, ढेकी-घरक संटीक बोझतर पीतम माझीक चोरि गेल तमघैल पाओल गेलै। आडन जैतैतऽ चौकिदार पकड़ि लेतै कुबेर के। तें साँझ पड़िते नुका कऽ कपिला घाटपर आबि बैसल अइ। कुबेर के फिरने जाइ सँ सतर्क कऽ देत।

बकार नजि फुटलै कुबेरक।

कतेकाल बाद ओ बाजल, रासूक काज। हमर सर्वनाश कऽ देत से कहने छल ने रासू - ओकरे काज। आब ओ की करत ? कतऽ जाएत ? आपद विपद

मे मदति केनिहार मात्र एगो लोक छइ कुबेर के, तकरे लग जा कऽ ठाढ़ हएत। घाट पर होसेनक नाओ बान्हल छइ देखि कुबेर कने आश्वस्त भेल।

कपिलाक नोर पोछि देलकै कुबेर, कहलकै, जो कपिला, आडन जो।

तों की करबहो ?

होसेन मियाँ के जा सब बिरतान्त कहै छिए, देखी की कहैए ओ।

हमहूँ संगे चलिअ माझी ?

हँ, बाँसक करची सन अवाध्य कपिला। कोनो तरहँ ओकरा आडन नजि पठा सकल कुबेर। कुबेरक संगे लागल ओहो गेलि होसेन मियाँक ओइठाम।

होसेन के किछु कहऽ नजि पड़लै, खबरि ओ पहिनहि पओने अइ। ललौनहा दाढ़ी पकड़ने ओ सोचैत बजैछ — मयनाद्वीप जएबे कुबेर ? चोरीक मामला हम सम्हार लेब।

हम चोरी नजि केलिए मियाँ।

से कि होसेन मियाँ नजि जनैए ?

किन्तु चोरिक माल जखन कुबेरक घर सँ बहार भेलैए, आ जखन चोर के ओइठाम माल रखैत केओ देखबो नजि केलकै तखन के विश्वास करतै कुबेरक बात ? बहरिया केओ दुसमनी सँ राखि जा सकैछ, मुदा तेहन कोनो जगह सँ माल नजि बहरेलैए, एकदम सँ घरक बीच नुकाओल अवस्था मे माल भेटलैए। से छोड़ि, कुबेर तऽ कोनो गरीब लोक नजि अइ।

विवर्ण मुह लेने माथ झुकओने रहैछ कुबेर।

घोघतर सँ सजल नयने कपिला ओकरा दिस देखैछ।

एगो मनिब हुक्का साजि दऽ जाइ छइ होसेन के। हुक्का गुड़गुड़बैत ओ जिज्ञासा करैत छइ - जएबे मयनाद्वीप ?

माथ हिला सहमति जनबैए कुबेर।

आँखि मुनने व्यवस्थाक मादे कहने जाइछ होसेन। आइ एखन राति मे रमाना भऽ जाओ कुबेर। स्त्री-पुत्रक लेल चिन्ता नजि ओकरा, होसेन अइ ने। बाद मे गोपी आ बंकूक संगहि ओकरो सब के होसेन मयनाद्वीप पहुँचा देत। किए, कनैए किए कुबेर ? ओ तऽ अपना आँखिए मयनाद्वीप देखि आएल अइ। ओइठाम जा कऽ बास करए पड़तै तइ मे कनबाक की भेलै ?

हुक्का पिअब शेष कऽ होसेन उठल। बाहरक एगो घर मे सातगो मुसलमान
माझी सुतल छलै, ताइ मे सँ पाँच गोटे के संग लऽ सब नदी घाट दिस बिदा भेल।
कुबेर आ कपिला चलए लागल सबहक पाछँ।

कपिला कनफुसकी करैत कहलकै — नजि गेलहो माझी, जहेले कटहो।

कुबेर कहलकै — होसेन मियाँ हमरा नजि छोड़तौ कपिला, लैए जेतौ
मयनाद्वीप। एक बेर जहल काटि पार नजि पेबै। बेर-बेर जहल कटाओत ओ।

कपिला फेर नजि किछु बजैछ।

घाटक कनिजे दूर पर होसेनक प्रकाण्ड नाओ लंगर कएल छलै। एकटा
माझी ओइपर सुतल छल। ओकरा हाक दऽ उठओने ओ नाओ तीर पर अनलक।
कुबेर चुपचाप नाओ पर चढ़ि गेल। संगे गेलै कपिला।

छावनीक भीतर जा कऽ ओ बैसि गेलि। कुबेर के लग बजा पुछलकै —
हमरो अपना जरे लेबहो माझी ?

हँ, चलओ कपिला संगे। असगर एतेदूर नजि जा पाओत कुबेर।



परिषद् द्वारा प्रकाशित पोथी

- १ विद्यापति पर्व अङ्क
- २ मैथिली भाषा आ साहित्य
- ३ आधुनिक मैथिली साहित्य
- ४ गीताञ्जलि (पद्यानुवाद)
- ५ गल्प-सुधा (कथा संग्रह)
- ६ बलचनमा (उपन्यास)
- ७ विद्यापति वाङ्मय (भागलपुर वि०वि० कऽ पाठ्य क्रम मे)
- ८ लोरिक विजय (ऐतिहासिक उपन्यास)
- ९ रञ्जना (उपन्यास)
- १० नैका बनिजारा (ऐतिहासिक उपन्यास) (सा० अकादेमी द्वारा पुरस्कृत)
- ११ मेघदूत (पद्यानुवाद)
- १२ भू-परिक्रमणम् (संस्कृत, मैथिली)
- १३ भू-परिक्रमणम् (संस्कृत)
- १४ भू-परिक्रमणम् (मैथिली)
- १५ तापसकवि विद्यापति
- १६ फुटपाथ (उपन्यास)
- १७ हनुमान चरित (पद्य)
- १८ अष्टदल (लोक कथा)
- १९ अन्तहीन आकाश (कथा संग्रह)
- २० दुलरा दयाल (ऐतिहासिक उपन्यास)
- २१ बाट आ बटेही (उपन्यास)
- २२ स्वतंत्रता आन्दोलन मे मिथिलाक योगदान
- २३ जनक आओर याज्ञवल्क्य (परिचय)
- २४ कठोपनिषद् (मैथिली व्याख्या)
- २५ मातृदोहावली (भगवती वन्दना)
- २६ लोरिक विजय (पुनर्मुद्रण)
- २७ साहित्यकारक दिन (मणिपद्मजीक कथा संग्रह)
- २८ बियाह सँ बिध भारी (वैवाहिक विधि व्यवहार)
- २९ पद्यानुदीक माझी (अनुवाद) (ऐतिहासिक उपन्यास)
- ३० चयनिका (निबन्ध संग्रह)
- ३१ लोरिक विजय (तृतीय मुद्रण) (ऐतिहासिक उपन्यास)
(संघ लोक सेवा आ० पाठ्यक्रम मे)